INSIGHT
2024

ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE
(UNIVERSITY OF DELHI)
NIRF RANKING 2024: 18TH | ACCREDITED A+ BY NAAC
DBT STAR STATUS COLLEGE

DISCLAIMER

The thoughts and views expressed in this Magazine are solely of the contributors and are not necessarily endorsed by the Editorial Committee.

Though efforts have been made to check for plagiarism in the printed articles and poems, the readers are requested to report to the Editorial Committee for any such copied material in this Magazine.

INSIGHT 2024

CONTENTS

Page No

01 From the Principal's Desk

02 Editorial (English)

04 Editorial (Hindi)

05 Editors Speak

09 ANDC Reads

23 संपादकीय मंडल द्वारा अनुशंसित पुस्तकें

25 The Road That Has No End

27 Ray of My Sunshine

28 अच्छी लड़की

29 Unusual Love

30 विरही मयूर

31 Unfinished Freedom

32 युद्ध

33 Soul Searching

34 अपना बना लो

35 Threads of Gratitude

36 देव की कलम से

37 The Power of Letting Go

39 युवा

40 The Lone

41 तेरी यादें

Page No

Page No

43 The Heart

44 माँ ना कहती कुछ

45 I Killed Her

46 मेरे मन बाग में

47 The Duel of Silence

48 In the Heart of Delhi, Our College Stands

49 जग की लेखी न मिटे

50 The Divine Within

51 प्रकृति और मनुष्य का संबंध

53 She

55 तुम बहुत प्यारी हो

56 A Disdainful 2020

57 शायरी

58 Dystopian Crossword

59 The Broken Side

61 मनोज की कलम से

63 Delhi - A New Home

65 रंगीन हाथों को रंगने वाले

66 क्या तुम?

67 The Art of Subjugation Through the Lens of Dystopian Literature

Page No

Page No

69 My Great-grandfather

71 क्या लिखूँ?

72 माँ

73 Western Feminism & भारतीय फेमिनिनिटी

75 Misery of a Girl

76 मुड़ कर आजा रे

77 चले गए, भले गए

79 Something New Now

80 Whispers

81 Echoes of Us

82 पीर–ए–बिरहन

84 दर्पण

87 हँसते-हँसते

88 बेरंगा इंद्रधनुष

91 A Marvel Out of Your Misery

94 Potential of AI in College Education

99 चुप्पी

101 मेरी माँ

102 विकसित भारत के लक्ष्य, चुनौतियाँ और संभावनाएँ

106 मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ

Page No

Page No

107 Rape Culture Revisited

111 वो

112 जल की जादुई कहानी

113 शुचिता

115 कलम खामोश है

116 Delhi Darshan

122 खेलों के क्षेत्र में उभरता भारत

125 Positive Calendar 2023

130 Breaking Barriers for Women

135 अवध निरंजन

137 उत्तर प्रदेश

139 The Hidden Magic of College Days

140 पहेलियाँ

143 Crossword Answers

144 Society Scoop

159 College Events

174 Creative Corner

184 Designing Team

Page No

FROM THE PRINCIPAL'S DESK

"Coming together is a beginning; keeping together is progress; working together is success."

- Edward Everett Hale

As I pen down another message for Insight, the annual magazine of our college, I am filled with immense pride at what we have accomplished in the last academic year. I can confidently claim that over the years, Acharya Narendra Dev College has become synonymous with academic excellence and has made a name for itself, not only in the University of Delhi but in the entire country. The NIRF ranking of 18 among all the colleges of India for the Academic Year 2023-24 and the A+ grade by NAAC are a testimony to this fact. ANDC has consistently been among the top 10 colleges in Delhi University and this achievement is even more commendable considering the fact that we are the youngest member in this elite group of colleges, having started our academic quest in 1991. These laurels act as a catalyst and propel us to excel further, not only in academics but in every sphere. I am fortunate to have the able support of my enthusiastic students, dedicated faculty members and sincere non-teaching staff.

Insight is like a breath of fresh air on the campus as it gives ANDCians the opportunity to dabble in creativity after a demanding day in the laboratory. It reveals the hidden artist in them and honestly, I am amazed to see the Wordsworth in them take over Einstein or Picasso get the better of Newton! This year's issue of Insight is all the more special because it is a completely in house production – the students of the college have been involved in its compilation from the inception to its fruition – from inviting entries to editing and designing the material. Credit is due to the faculty members of the Editorial Committee for reposing faith in the collective power of the students and giving wings to their imagination and creativity.

I take great joy and pride in presenting Insight 2024 before you. Hope you will derive as much pleasure in flipping through its pages as the Editorial and Designing Teams have experienced while putting it together. Your valuable feedback will help us to reach new milestones.

Happy reading!
With best wishes,

Prof. Ravi Toteja
Officiating Principal

Editorial

"We are not what we might be; what we
are
Outlaws all extrapolation
Beyond the interval of now and here:
White whales are gone with the white
ocean."

These lines from Sylvia Plath's poem, 'The Applicant' describe how the perceived imagination might not be the reality always. It's an emotion I can fully associate with, especially as I look back on my writing journey. I started writing when I was in the sixth standard, not in my wildest dream did I ever think that I was stepping into something that would become such an integral part of me – something I now can't imagine losing. The voyage has been no less than a roller-coaster ride full of striking moments, some epic fiascos and a deep plunge into literature. Good or bad, every milestone has made me a better writer.

Firstly, I am grateful to Joita Ma'am for giving me the opportunity to be the Editor-in-chief of Insight 2024. All these three years on the Editorial Board have been very challenging and full of learning and have equipped me to lead the team this year. I thank my diligent team for all the midnight oil they have burnt to bring you the latest edition. I'm super grateful to be surrounded by such incredible souls who were ready at odd hours to schedule a meeting and complete the work with utmost dexterity.

Editorial

In this edition of Insight, we aimed to make it adventurous and worthwhile, packed with amusing content that will grab your attention from start to finish and keep you hooked at every page. We've added some creative touches and playful drills to really bring the spirit of our annual magazine to life in the most nuanced manner. The playful mix of elements in Insight 2024 will surely leave you spellbound.

As Editor-in-chief, I am indebted to everyone who helped us to make this magazine a reality. We hope you love the creation, fed with emotions and learn something new with every page swipe.
Happy reading!

Hirtik Singh Rathore
Editor-In-Chief (English)

संपादकीय

"किसी का सत्य था,
मैंने संदर्भ में जोड़ दिया।
कोई मधुकोष काट लाया था,
मैंने निचोड़ लिया।
यों मैं कवि हूँ, आधुनिक हूँ, नया हूँ,
काव्य-तत्व की खोज में कहाँ नहीं गया हूँ?
चाहता हूँ आप मुझे
एक-एक शब्द पर सराहते हुए पढ़ें।
पर प्रतिमा - अरे, वह तो
जैसी आप को रुचे स्वयं गढ़ें।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की नया कविःआत्मस्वीकर से उद्धृत हैं। अज्ञेय ने रचना सृजन के दौरान की मनोस्थिति को बहुत ही बेहतरीन तरीके से यहाँ अभिव्यक्त किया है। साहित्य का आविर्भाव भी इसी समाज से होता है जिसे रचनाकार अपने भावों और विचारों के साथ मिलाकर उसे एक अच्छा आकार देता है। यही रचना समाज के नवनिर्माण में पथप्रदर्शक की भूमिका निभाने लगती है। अज्ञेय मानते हैं कि साहित्यकार होने के नाते अपने समाज के साथ उनका एक विशेष प्रकार का संबंध है – समाज से उनका आशय चाहे हिंदी भाषी समाज रहा हो जो उनका पहला पाठक होगा, चाहे भारतीय समाज जिसके काफी समय से संचित अनुभव को वे वाणी दे रहे होंगे, चाहे मानव समाज हो जो कि शब्द मात्र में अभिव्यक्त होने वाले मूल्यों की अंतिम कसौटी ही नहीं बल्कि उनका स्रोत भी है। किसी भी राष्ट्र या समाज के सांस्कृतिक स्तर का अनुमान उसके साहित्य के स्तर से लगाया जा सकता है।

साहित्य ना केवल समाज का दर्पण होता है, बल्कि वह दीपक भी होता है, जो समाज का ध्यान उसकी बुराइयों की और दिलाता है, और एक आदर्श समाज का रूप प्रस्तुत करता है। यह माना जाता है कि किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति के इतिहास को पढ़ने के लिए उसके साहित्य को पढ़ना ही पर्याप्त होता है।

साहित्य और समाज का अविच्छिन्न संबंध है। यह संबंध समय-समय पर वर्ग विशेष द्वारा प्रस्तुत भी किया गया है। इसी प्रस्तुति का एक प्रयास है इनसाइट, महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका। पत्रिका के माध्यम से ना सिर्फ छात्रों अपितु आचार्यों को भी कलम को धार देने का अवसर मिलता है। पाठकों के समक्ष वे मूल विचार आते हैं जो कोई भी अपनी दैनिक दिनचर्या में अपने साथ या किसी और के साथ घटित होते देखता है और उन्हें कागज़ के हवाले सौंप देता है। विचार, वो किसी विशेष माध्यम के मौहताज़ नहीं, वे गद्य, पद्य, चित्र, कला, तस्वीर, लेख आदि सभी में प्रवीण होते हैं। ये पत्रिका ऐसे सभी विचारों को आप लोगों तक पहुँचाने का एक माध्यम है, विज्ञान केंद्रित महाविद्यालय में कला की स्वीकार्यता का माध्यम है, नौजवानों के हुनर को मंच देने का माध्यम है।

अनेकों साहित्यकार, चित्रकार, आदि के सराहनीय सहयोग से बनी इनसाइट अपने नव स्वरूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

अंशिका शर्मा
मुख्य संपादक (हिंदी)

EDITORS SPEAK

कॉलेज में आकर नए प्रयोग व प्रतिभा सीखने की इच्छा के चलते प्रथम वर्ष में ही हिंदी संपादकीय मंडल से जुड़ना हुआ। इनसाइट पत्रिका के माध्यम से ना सिर्फ अपने विचार प्रस्तुत करने का अपितु अन्य विचारों को पढ़ने-समझने और संपादन करने का भी अनुभव प्राप्त हुआ। निःसंदेह पत्रिका के साथ जुड़े इन तीन वर्षों का मेरे आत्मविश्वास और व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है और साथ ही उन सभी की उड़ानों के लिए पंख समान है जो कविता, कहानी, चित्र, संपादन, आदि में रुचि रखते हैं। आशा करती हूँ कि सभी के सराहनीय प्रयासों के मेल से रची-बुनी इनसाइट-2024 आपको पसंद आएगी।

अंशिका शर्मा
बी. एससी. (विशेष) जंतु विज्ञान
2021-2024

एक हिंदी भाषी राज्य से होने के नाते, इस भाषा के प्रति मेरा प्यार शब्दों में बयाँ नही किया जा सकता है। इसलिए जब मुझे कॉलेज पत्रिका की संपादकीय टीम में शामिल होने का मौका दिया गया, तो मैं बिना हिचकिचाए इसमें शामिल हो गयी। हिंदी सिर्फ एक भाषा नही है, यह एक भावना है, समय के साथ खुद को ढ़ाल कर आगे बढ़ते रहने की कहानी है, चाहे समय अच्छा हो या बुरा। हिंदी अनगिनत कालजयी कहानियों और विचारधाराओं का संग्रह है, समय के साथ न जाने कितनी सभ्यतायें और संस्कृतियाँ इससे जुड़ी एवं हिंदी ने सबको अपनाया और आज इस मुकाम तक का सफर तय किया। इसलिए संपादन टीम के साथ जुड़ना मेरे लिए एक अभूतपूर्व अनुभव रहा है, मैं अपने कॉलेज जीवन के पहले वर्ष में ऐसी खूबसूरत टीम में शामिल होने का अवसर पाकर बहुत आभारी हूँ। संपादक मंडल में मुझे कार्य करने का अवसर प्रदान करने हेतु महाविद्यालय की मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

तानिया सिंह
बी. एससी. (विशेष) जैवचिकित्सा विज्ञान
द्वितीय वर्ष

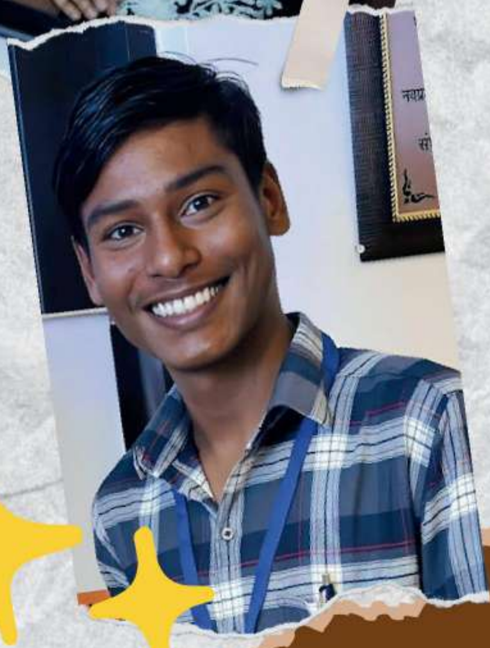

प्रिय पाठकों, महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका इनसाइट का नवीनतम संस्करण इनसाइट 2024 को प्रस्तुत करते हुए बहुत ही खुशी एवं गर्व महसूस हो रहा है। पूर्व संस्करण इनसाइट-2023 की भाँति इस नवीनतम संस्करण में विभिन्न लेख, चित्रकला, रचनात्मक खण्ड इत्यादि के साथ-साथ विगत वर्ष में महाविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ प्रस्तुत हैं। विज्ञान और वाणिज्य आधारित महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का साहित्य की ओर झुकाव निश्चय ही अविश्वसनीय है। विगत दो वर्षो से सहपाठियों द्वारा विभिन्न विषयों पर बुनी गयी रचनाओं को पढ़ने, परखने एवं सम्पादित करते हुए बहुत कुछ सीखने को मिला। दो वर्षो से संपादक मंडल का सदस्य होना सदैव गौरवान्वित करता रहेगा। आगामी संस्करण में भी पत्रिका के विकास एवं सफल संपादन हेतु प्रयासरत रहूँगा।

संदीप गुप्ता
बी. एससी. (विशेष) जैवचिकित्सा विज्ञान
तृतीय वर्ष

हिन्दी भाषा में रची गई कविता-कहानियों से बचपन से ही जुड़ाव व प्रेम ने हिन्दी को समझने व परखने का भी एक कौशल दिया, जिसकी वजह से आज महाविद्यालय के संपादक मंडल का सदस्य बन नई रचनायें पढ़ने व परखने का अवसर पा खुद को सौभाग्यशाली महसूस कर रहा हूँ |

उज्ज्वल कुमार
बी. एससी. (विशेष) जैवचिकित्सा विज्ञान
तृतीय वर्ष

कॉलेज जॉइन करना, खूबसूरत सफर। कंप्यूटर साइंस की फील्ड में पढ़ना, उससे भी खूबसूरत। मगर कब इस फील्ड के असीम अवसरों ने मुझे लगभग चारों तरफ से खुद में उलझा लिया, पता ही नही चला। अब ऐसे वक्त में भी मुझे अगर लेखन-सम्पादन से जुड़े रहने का कोई बहाना मिल जाए, तो कैसे जाने देती भला? तो बस जुड़ गई मैं संपादकीय मंडल से।
उपन्यास पढ़ने का शौक तो कही जाने वाला नही, लेखनी बस मुझसे "वक्त निकाल लो" की गुहार करती है।

साक्षी सिंह
बी. एससी. (विशेष) कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

As I pen this message for my final edition as an editor for Insight, I'm flooded with memories of the moments, the deadlines, the brainstorming sessions and the camaraderie that made this journey unforgettable in the past three years. Each issue of this Magazine has been more than just pages and ink; it's been a canvas for our voices, a space for our creativity and a reflection of the vibrant spirit that defines Acharya Narendra Dev College.
Insight has always been a labour of love and I'm incredibly grateful to have worked alongside such passionate and talented individuals who have poured their hearts into every story, article and layout and made this experience truly special.
As I turn this page and leave behind this role, I look forward to seeing how Insight evolves in the hands of my juniors. May it continue to capture our memories, ideas, dreams and creativity!
With heartfelt gratitude and best wishes for the journey ahead,

Arpita Singh
B. Sc. (H) Biomedical Science
2021-2024

Recently, I posted a little something on Instagram – a picture of a clouded sky. I captioned it, "Are there no elephants or fairies anymore?", hinting at noticing different shapes in clouds, an old habit of mine. A dear friend replied, "We have stopped looking for them". That got me thinking. When did we stop seeing those colours and shapes? When did the magic cease to exist?

Often when I am writing, I let myself wander through a thousand worlds – the ones that exist in real life and the ones that I weave on my own. That is in fact, the best part of writing, I believe. You get to build these places where there's snowfall in summer, blooming flower beds in winter, where people travel on horses all the time. You get to make people, decide their words and actions. In this very foreordained world, you get to be the screenwriter, for once.

While working on this Magazine, I encountered many like-minded individuals who left me awestruck many times. Being a part of the creative process and watching art being produced like it is the easiest thing to do, reinforced that feeling of magic in me. I am very grateful to my team members and equally amazed at the miles their ideas have crossed. With the amount of content that we had to deal with, we needed a captain to sail with us, and a very strong one at that. Thank you, Joita Ma'am for being the trailblazer.

Now, on to you dear reader, everything we have put together is yours now. I hope you get to inhabit the worlds we crafted. May you lose or find yourself in these pages.

Happy reading!

Diya Bilahari
B. Sc. (H) Zoology
III Year

After all my years of travelling and re-locating, my only constant friends were naturally books and their stories. So, when it came to picking a hobby, reading was the only option ever, really! Cut to lockdown and competitive exams when I had to bid adieu to this part of me but through the Editorial Board, I rediscovered my love for it.

As a student researcher, I am often and very easily overwhelmed by my workload and deadlines and at this time of distress, I revert to my old solace, reading (best escape, hands down). I am extremely grateful for being an editor of this edition. We've curated articles that push boundaries, offer fresh perspectives and bring you closer to the latest advancements. Each piece reflects the diversity and uniqueness of our contributors and the vision of our editorial team.

Through these pieces, I hope you find inspiration, learn something new and feel more connected to the vibrant world of literature. This year, we have included ANDC reads as well, for the avid readers.

Happy reading!

Aishani Vashisht
B. Sc. (H) Biomedical Science
II Year

Working in labs during the day to running a literary marathon by night, a STEM student with a profound passion for literature – these are a few of my life's many paradoxes. Beyond academics, I find solace in the world of words, fuelling my creativity and critical thinking, two very essential qualities needed in the field of research. Bridging the gap between Science and Humanities, I've discovered unexpected connections. My forensic knowledge keeps me intrigued while reading Byomkesh Bakshi, illustrating that seemingly disparate worlds intersect. This journey as a reader, writer and now an editor has taught me one thing, no two things are truly separate, like two rivers flowing, they converge in the ocean, which makes the human experience of life. I hope, all of us enrich our life experience and not restrict ourselves to only one of our many aspects as a human being. Thank you!

Ayushi Mishra
B. Sc. (H) Biomedical Science
II Year

Sometimes you read a book and it fills you with this weird evangelical zeal and you become convinced that the shattered world will never be put back together unless and until all living humans read the book. And then there are books like An Imperial Affliction, which you can't tell people about, books so special and rare and yours that advertising your affection feels like betrayal.

I am extremely delighted to be a part of the Editorial Board and to present the latest edition of our esteemed college magazine. Within these pages, you will discover a meticulously curated selection of insightful articles, enlightening interviews and stimulating perspectives. Our dedicated team has invested significant effort to deliver content that both informs and inspires.

I hope the readers indulge themselves in the content of this Magazine and trust that it will contribute significantly to your intellectual journey. Your valuable feedback will be instrumental in shaping the future of our publication.

S. Ananya
B. Sc. (H) Botany
2021-2024

"It matters not how strait the gate, How charged with punishments the scroll, I am the master of my fate, I am the captain of my soul."

How moving the lines from Invictus are, right? William E. Henley captures such depth and artistic impact through these words! I hope I've recommended a good read to you all. Now, hey fellas, I won't ramble on about my literary pursuits but I must share how my soul dangles between overtly romantic poems and binge-worthy period dramas, each with their magnificent aura. Larger-than-life stories have always attracted me.

As for my writing, I mainly compose panegyric and old-school teenage romantic poems. As a reader, I'm quite skeptical; I'm never sure if I'm more biased towards thrillers, mysteries, or romance but it's certainly something I love exploring and recommending. Moving on, my memories of being part of the Editorial Board are filled with learning experiences. Working alongside talented and supportive teammates made every day worthwhile. I thank each one for contributing to the success of my first experience with the Editorial Board and deeply appreciate their unwavering encouragement.

Happy reading, friends!

Hirtik Singh Rathore
B. Sc. (H) Biomedical Science
2021-2024

ANDC Reads

Compiled by Ayushi Mishra

Member, Students' Editorial Board

Books:

Check out what's new and buzzing on our ANDC campus! From thrilling fiction to thought-provoking non-fiction, we have curated a list of our students' top picks for your next literary obsession.

Disclaimer: Readers are advised to use their discretion while reading some novels containing themes of domestic violence and abuse which may be distressing. Please be aware that these themes are sensitive in nature and may evoke strong emotional responses. The Students' Editorial Board does not condone or encourage any form of domestic violence or abuse.

Fantasy & Science Fiction

HARRY POTTER SERIES:

J.K. Rowling's iconic series follows a young wizard's battle against darkness.

"It takes a great deal of bravery to stand up to our enemies, but just as much to stand up to our friends."

Recommended by Shaurya, Botany 1st year

INVISIBLE PLANETS (HANNU RAJANIEMI):

A collection of sci-fi short stories, exploring humanity's relationship with technology.

"We're only travellers, singing songs whose meanings are obscure, wandering through the dark sky. That is all."

Recommended by Ranjeet Kumar, Electronics 1st year

ROBERT LANGDON SERIES (DAN BROWN):

Thrilling mysteries that combine history, symbolism and suspense.

"Great minds are always feared by lesser minds."

Recommended by Shinaya Singh, BMS 1st year

Mystery/Thriller/Crime

AND THEN THERE WERE NONE (AGATHA CHRISTIE):

Ten strangers face justice on a remote island.

"Ten strangers, one isolated island, and a deadly game of survival."

Recommended by Aishani, BMS 2nd year

THE SILENT PATIENT (ALEX MICHAELIDES):

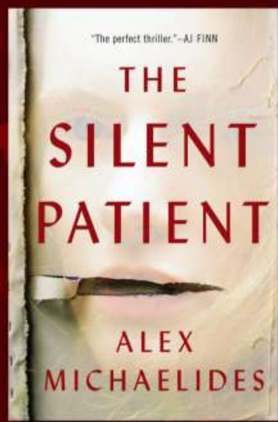

A famous painter's silence holds the key to her husband's murder.

"Somehow grasping at vanishing snowflakes is like grasping at happiness: an act of possession that instantly gives way to nothing."

Recommended by Anushka and Saimah Khan, BMS 2nd year

A GOOD GIRL'S GUIDE TO MURDER (HOLLY JACKSON):

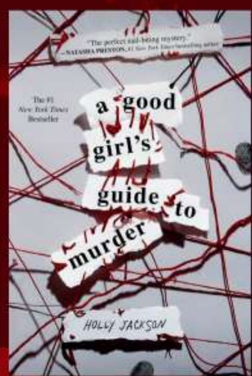

A teen's investigation into a decade-old murder.

"The people you love weren't algebra: to be calculated, subtracted, or held at arm's length across a decimal point."

Recommended by Chirayu Gajbhiye, BMS 1st year

GOOD GIRL, BAD BLOOD (HOLLY JACKSON):

The sequel to A Good Girl's Guide to Murder.

"I think we all get to decide what good and bad and right and wrong mean to us, not what we're told to accept."

Recommended by Nidhi Yadav, BMS 1st year

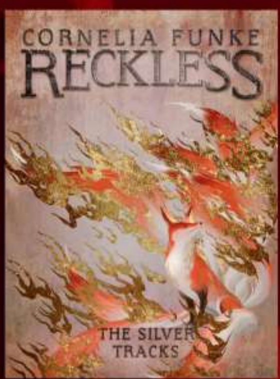

RECKLESS (CORNELIA FUNKE):

A fantasy-mystery novel exploring family secrets.

"Humans so liked to choose the wrong men as their leaders."

Recommended by Chirayu Gajbhiye, BMS 1st year

Literary Fiction

A THOUSAND SPLENDID SUNS (KHALED HOSSEINI):

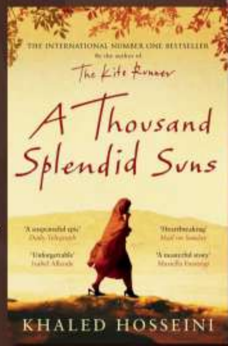

A powerful tale of love, loss and survival in Afghanistan.

"A society has no chance of success if its women are uneducated."

Recommended by Ayushi Mishra, BMS 2nd year

THE KITE RUNNER (KHALED HOSSEINI):

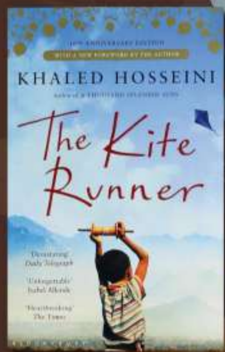

A haunting story of friendship, betrayal and redemption.

"And that's the thing about people who mean everything they say. They think everyone else does too."

Recommended by Saimah Khan, BMS 2nd year

THE PICTURE OF DORIAN GRAY (OSCAR WILDE):

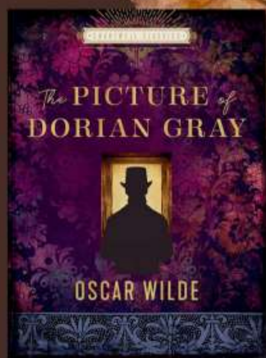

A classic exploration of vanity, morality and the human condition.

"The books that the world calls immoral are books that show the world its own shame."

Recommended by Ayushi Mishra, BMS 2nd year

LITTLE WOMEN (LOUISA MAY ALCOTT):

A timeless coming-of-age story about sisterhood and family.

"I am not afraid of storms, for I am learning how to sail my ship."

Recommended by Rohit Mishra, Zoology 1st year

Romance

I FELL IN LOVE WITH HOPE (LANCALI):

A heart-warming tale of love and self-discovery.

"Just because the stars fell doesn't mean they weren't worth wishing on."

Recommended by Jahanvi Srivastava, BMS 2nd year

THE PERFECT US (DURJOY DATTA):

A romantic novel exploring relationships and identity.

"Everything that we have built, everything we have made ourselves believe in, is a lie."

Recommended by Chirayu Gajbhiye, BMS 1st year

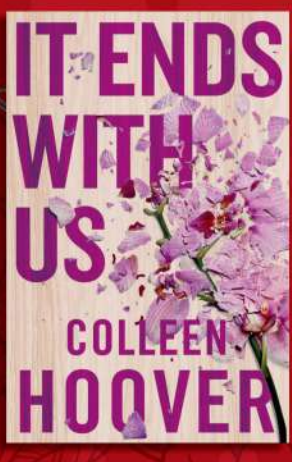

IT ENDS WITH US (COLLEEN HOOVER):

A powerful story of love, loss and healing.

"All humans make mistakes. What determines a person's character aren't the mistakes we make.
It's how we take those mistakes and turn them into lessons rather than excuses."

Recommended by Shivisha Singh, BMS 1st year

Non-Fiction/Self-Help

48 LAWS OF POWER (ROBERT GREENE):

Timeless advice on gaining and maintaining power.

"Do not leave your reputation to chance or gossip; it is your life's artwork, and you must craft it, hone it, and display it with the care of an artist."

Recommended by Udantika Chopra, BMS 1st year

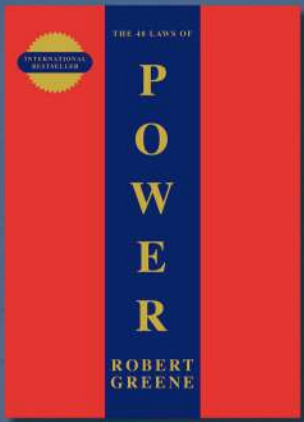

ATOMIC HABITS (JAMES CLEAR):

A comprehensive guide to building positive habits.

"When you fall in love with the process rather than the product, you don't have to wait to give yourself permission to be happy. You can be satisfied anytime your system is running."

Recommended by Riya Kumari, BMS 1st year
Bhumika, BMS 2nd year
Shabnam, BMS 2nd year
Jahanvi Srivastava, BMS 2nd year

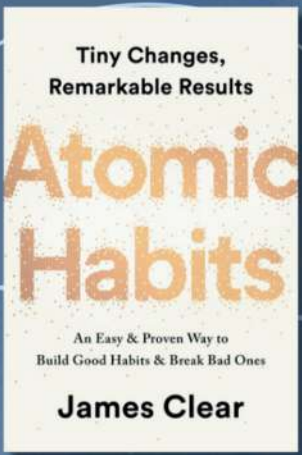

IKIGAI (HECTOR GARCIA, FRANCESC MIRALLES):

Discovering purpose and happiness.

"Essentials to happiness in this life are something to do, something to love, and something to hope for."

Recommended by Kanishka, BMS 1st year

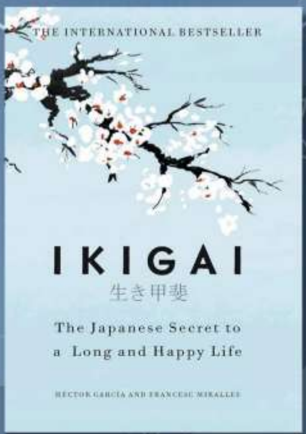

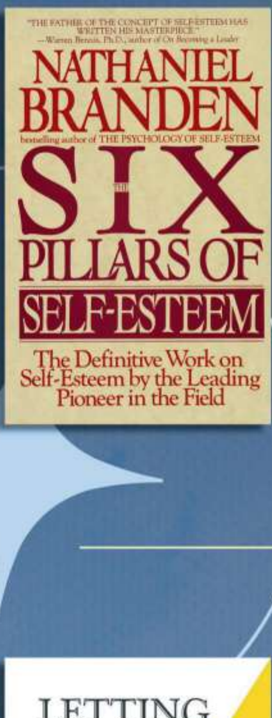

SIX PILLARS OF SELF ESTEEM (NATHANIEL BRANDEN):

Building confidence and self-worth.

"Self-esteem is the reputation we acquire with ourselves."

Recommended by Fareha, Life Sciences 2nd year

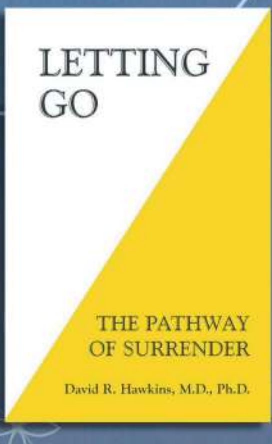

LETTING GO (DAVID R. HAWKINS):

Embracing spiritual growth.

"Anything that feels forced or harder than it should be or causes you pain and distress is not meant for you."

Recommended by Pushti Kaji, B. Com 1st year

Historical Fiction/Non-Fiction

A Man Called Ove (Fredrik Backman):

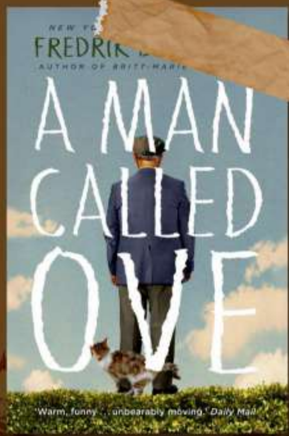

A heart-warming story of love, loss and redemption.

"We always think there's enough time to do things with other people. Time to say things to them. And then something happens and then we stand there holding on to words like 'if'."

Recommended by Ayushi Mishra, BMS 1st year

Jallianwala Bagh 1919 (V.N Datta):

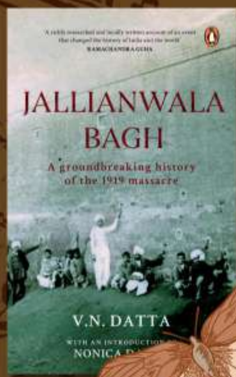

A historical account of the Amritsar massacre.

"Freedom is never dear at any price. It is the breath of life. What would a man not pay for living?"

Recommended by Itisha, BMS 1st year

Makers of Modern India (Ramachandra Guha):

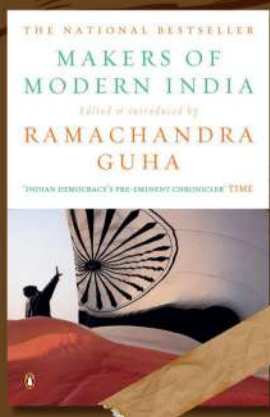

Explores India's struggle for independence.

"If he thinks he has got rid of an evil person by killing me, he will not have killed the real Gandhi but the Gandhi who appeared to him to be evil."

Recommended by Itisha, BMS 1st year

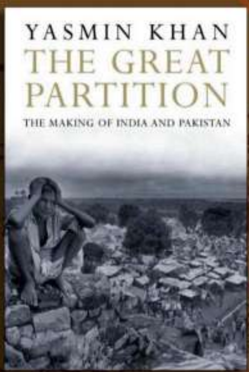

The Great Partition (Yasmin Khan):

A historical analysis of India's partition.

Recommended by Itisha, BMS 1st year

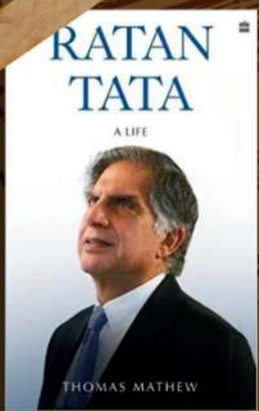

Autobiography of Ratan Tata:

Insights into the life of India's business icon.

"Take the stones people throw at you and use them to build a monument."

Recommended by Jhanvi Gupta, B. Com 1st year

Classics/Mythology

Ramcharitmanas (Tulsidas):

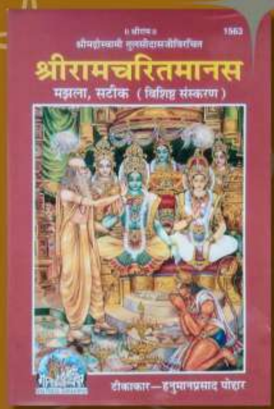

Inspired by the ancient Indian epic, the Ramayana.

Recommended by Ayush Tiwari, Physics 3rd year

Rashmirathi (Ramdhari Singh Dinkar):

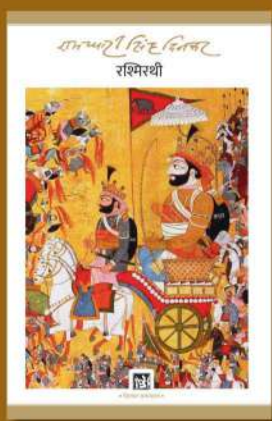

Classic Hindi poetry.

Recommended by Ramashish Kumar, Mathematics 2nd year and Ayush Tiwari, Physics 3rd year

Philosophy/Psychology

The Fountainhead
(Ayn Rand):

Explores individualism and creativity.

"The hardest thing to explain is the glaringly evident which everybody has decided not to see."

Recommended by Khushi Gupta, Maths 1st year

The Psychology of Intelligence (Edwin Boring):

Understanding human cognition.

"Every response, whether it be an act directed towards the outside world or an act internalized as thought, takes the form of an adaptation or, better, of a re-adaptation."

Recommended by Sunny Kumar Yadav, Physical Science (Electronics) 1st year

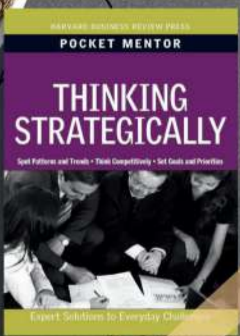

Thinking Strategically (Avan J. Rashid, Joseph W. Weiss):

Effective decision-making.

"If you have just two alternative strategies, and one of them is dominated, then the other must be dominant."

Recommended by Sunny Kumar Yadav, Physical Science (Electronics) 1st year

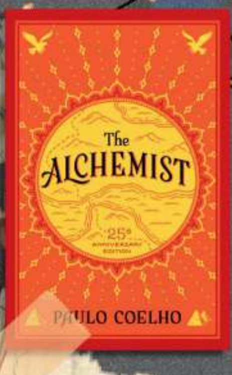

The Alchemist (Paulo Coelho):

A mystical journey of self-discovery.

"It's the possibility of having a dream come true that makes life interesting."

Recommended by Stacy Ch Marak, BMS 1st year

Young Adult

They Both Died at the End (Adam Silvera):

A poignant exploration of mortality.

"...stories can make someone immortal as long as someone else is willing to listen."

Recommended by Bhaskar Nath, BMS 1st year

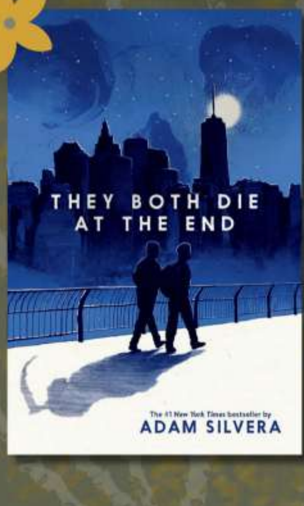

Inspirational/Motivational

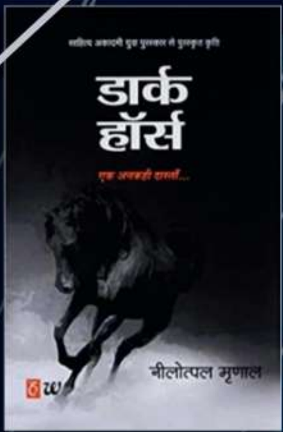

DARK HORSE (NILOTPAL MRINAL):

Overcoming adversity and achieving success.

Recommended by Ayush Tiwari, Physics 3rd year

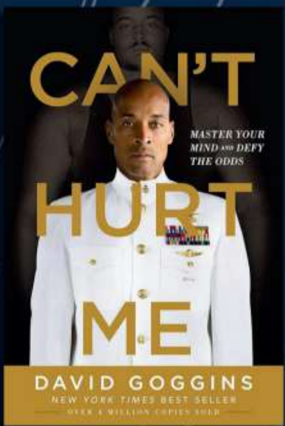

CAN'T HURT ME (DAVID GOGGINS):

About overcoming mental and physical barriers to unlock your true potential through resilience, discipline, and embracing discomfort.

"You are in danger of living a life so comfortable and soft that you will die without ever realizing your true potential."

Recommended by Yash Sharma, Computer Science 3rd year

Over the Top: A Raw Journey to Self-Love

(Jonathan van Ness):

Inspirational stories of resilience.

“Just because we mess up doesn’t mean all the lessons we learned are undone. Healing can be imperfect.”

Recommended by Ayush Tiwari, Physics 3rd year

संपादकीय मंडल द्वारा अनुशंसित पुस्तकें

इंटरनेशनल बुकर प्राइज़ से सम्मानित **गीतांजलि श्री** का उपन्यास **रेत समाधि** साधारण औरत में छिपी असाधारण महिला की कहानी है। पारंपरिक शैली से इतर अंदाज़ के चलते यह उपन्यास अपने आसपास घटित होता-सा मालूम होता है। दैनिक जीवन की घटनायें, बदलाव, समाज के साथ सामंजस्य और समाज को भूलकर अपनी कहानी स्वयं लिखने का अनोखा ताना-बाना लिए हुए है। इन सब के साथ आज़ादी और बँटवारे के समय की अनेकों अनकही, गुमनाम कहानियों को जीवंत करता है। अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

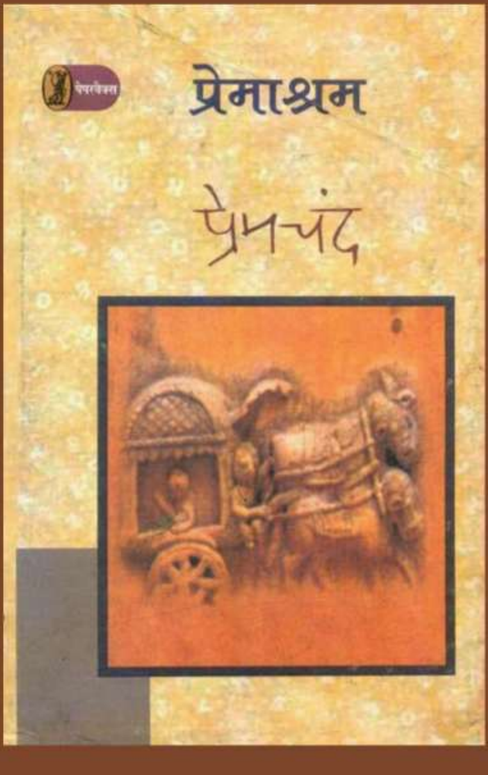

सार्वकालिक प्रसिद्ध **प्रेमाश्रम मुंशी प्रेमचंद** की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। परिवार का महत्व, शिक्षा की उपयुक्तता और अपनी जड़ों से जुड़ाव का अद्भुत मेल और कहीं नहीं मिल सकता। स्वतंत्रता संग्राम के समानांतर में गरीब किसानों की दयनीय स्थिति लिए यह लेखन सोचने पर विवश करता है। कथा के उतार-चढ़ाव प्रासंगिक और सार्थक हैं जिनसे रोचकता बनी रहती है। एक ही परिवार में अलग-अलग विचारधारा के लोगों का एक साथ रहना और आपसी अनबन पाठकों को जोड़ती है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित **<u>तमस</u>** **भीष्म साहनी** की चर्चित कृति है। यह केवल पाँच दिनों की कहानी है जिसमें आज़ादी से पूर्व की सामाजिक मानसिकता का मार्मिक चित्रण है। सांप्रदायिकता के नाम पर होने वाली हर घृणात्मक घटना का वर्णन पाठकों को बिना आराम लिए अनवरत पढ़ने पर विवश करता है।

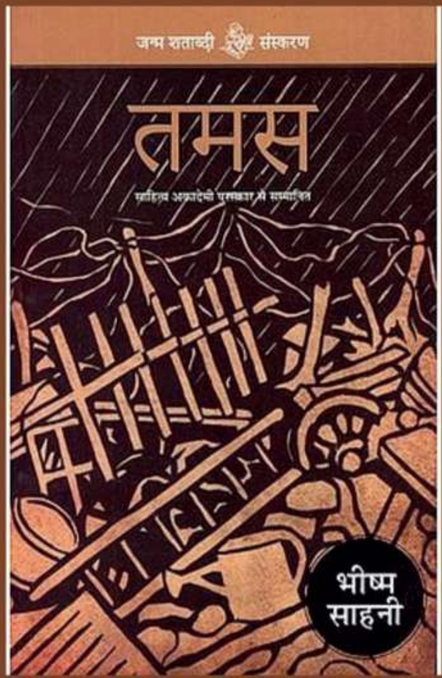

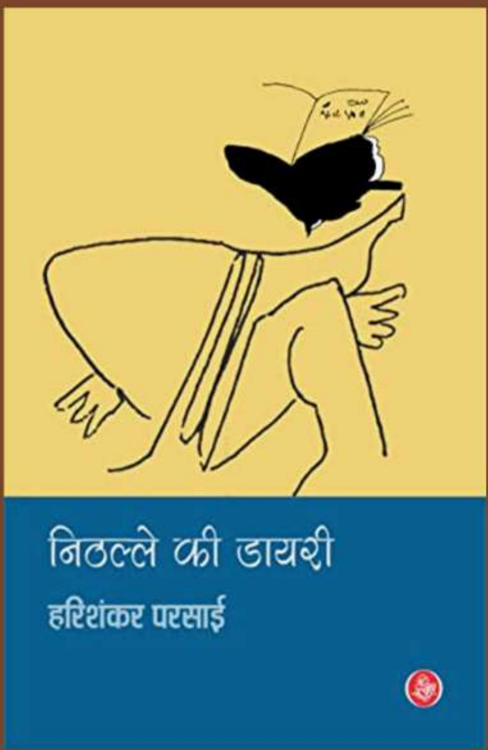

हरिशंकर परसाई की **<u>निठल्ले की डायरी</u>** हास्य, व्यंग और सरलता में छुपी गंभीरता को एक साथ समेटे हुए है। आधी शताब्दी पूर्व लिखी ये रचना आज भी निर्विरोध प्रासंगिक है। इस किताब में आडंबर, दोमुँहापन, ढोंग और हिप्पोक्रेसी पर व्यंग्य किया गया है। हर एक पंक्ति गूढ़ अर्थ लिए हुए है जिसे पहली बार समझना थोड़ा पेचीदा परंतु मज़ेदार हो सकता है।

अंशिका शर्मा (सदस्य, संपादकीय मंडल) द्वारा संकलित

THE ROAD THAT HAS NO END

The need for safety in Women's Life

The human civilisation has been glorious ever since its origin, with our history adorned with numerous discoveries and inventions made by our ancestors. Even our ancient civilisations like the Mesopotamian and Indus Valley Civilisation, despite being formed and working when modern facilities had not seen the light of day, when the human brain had not even fully developed to its potential, people of those times had proved to be courteous and not barbaric.

Our society has seen a steady growth in all other domains of life ever since. It is only when we have been faced with a natural calamity or a rare catastrophe that we see our development in regressive terms.

Why is it then that even after centuries of the existence of humanity, the condition of women has been in a stagnant pitiful state, if not regressed further? Since time immemorial, women have been a target of such inequality, oppression and abuse that they are recognised as the more "vulnerable" section of the population.

It is important to note here that it is not that women are "weak" or "vulnerable" in any sense. In-fact, decades of research show unequivocally that men and women are equal in general intelligence (IQ), with women having an upper hand in emotional intelligence (EQ) thanks to their self and social awareness. Gender is a common place for people to assign labels around emotion.

Such generalizations have pegged women as everything from the "fairer sex" to overly emotional, and men from emotionally aloof to explosive.

Due to these stereotypes, unjustified gender-roles are assigned to people and they are brainwashed to such an extent that the oppressed class themselves promote the oppression on the other. A classic example would be some women in our society condemning other women for wearing revealing clothes and blaming the victim for getting harassed. Not one finger is pointed towards the offender, such is the extent of the bias.

In the past decades, women across the globe have struggled and fought against issues like dowry deaths, domestic violence, child marriage, paedophilia, female foeticide, sexual harassment at the work place, etc. Adequate amendments in laws and stricter punishments have proved to be effective for some issues, but still, in the 21st century, we are here on the same page.

It seems as if no matter how many protests, debates, rebellions are carried out, women can never be fully free of danger. Danger to women's safety, in some form or the other, is like a stubborn nail that is struck in the society and refuses to move.

The most recent case where we see a total mockery of women's safety in India, is the RG

Kar Hospital rape and murder of a trainee post-graduate resident doctor in Kolkata, West Bengal. From falsifying the case as suicide to tampering evidence in the hospital building, many accusations have been made on the very authorities who had the fundamental duty of protecting a citizen, that too a government doctor in her own workplace.

The case, referred to as the Abhaya murder case, not only brought back the haunting memory of the Nirbhaya case, but also raised questions. Are women really safe anywhere in India? Desolate areas are a far off thing now, women aren't even safe in their workplaces.

This is the 21st century we are talking about. Our ancestors must have fought for freedom, for equality, hoping that in the future, their lineage would be able to live in peace, and that they won't have to go through what their ancestors suffered. However, the present society is blackened with the violence and greed of corrupt authorities. The very people assigned to protect us have turned into oppressors. The people assigned to bring justice to us sleep in somnolence, justice is delayed and seems denied.

However, when we hit rock-bottom, we take a step forward. Women and men of the country have fought against the injustice side-by-side, restlessly, selflessly, aiming to bring about a change in women's safety laws and punishment, once and for all. People of all generations have come together and contributed to the movement in whichever way they can, through social media or offline platforms, through papers, posters, articles, etc. Unity is our strength and together, change does not seem a far-fetched dream. Our future is in our hands, we decide what to make of it, a future where all living beings can live safely and peacefully, or a future that is so dark that it seems invisible.

Ayushi Mishra
B. Sc. (H) Biomedical Science
II Year

Ray of My Sunshine

Oh, the weather is so cold today
It might be due to that dreadful rain
I can see those dark clouds
That remind me of my past and its painful sounds.

No bright sunny ray of hope
No chirping birds around
Oh, how lovely it used to be
When nature consoled that part within me.

One can see nothing but buildings
I can see how tarnished are its wings
The happiness it carried when it was silent
No horns, no traffic, no fights
Only the chitter chatter from mornings to nights.

Only we can make a change
To bring that happiness back again
To leave away the sorrow and those dark clouds
And to regenerate the chirping sounds with bright sunny souls.

This world will be a better place again
Only if we are ready to make it our home again.

Aisha Gupta
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

अच्छी लड़की

जब चलती है रास्ते पर वो,
अपने सपनों को थामे हुए,
तब क्यों लगता है इस समाज को
वो पिंजरे में रहती तो अच्छा होता।

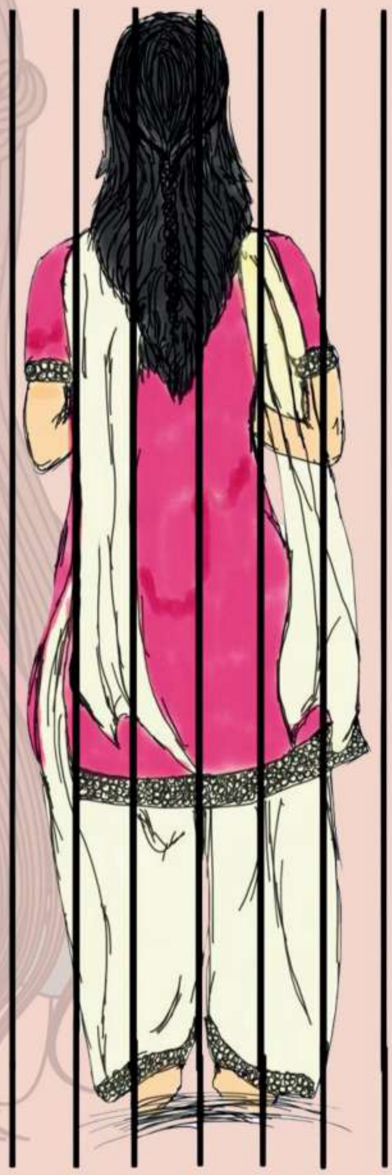

जब आईने में देख कर सजती है वो,
अपने आत्मविश्वास को जगाते हुए,
तब क्यों लगता है इस समाज को
वो थोड़ा कम निखरती तो अच्छा होता।

जब संभालती है खुद को और परिवार को,
अपने वक्त को कुछ बचाते हुए,
तब क्यों लगता है इस समाज को
वो थोड़ा और समय देती तो अच्छा होता।

जब समाज पर विश्वास कर निकलती है वो,
अपने डर को भीतर छुपाए हुए,
तब क्यों लगता है इस समाज को
वो थोड़ा नक़ाब पहन लेती तो अच्छा होता।

दीक्षा
बी. एससी. (विशेष) इलेक्ट्रॉनिक्स
द्वितीय वर्ष

Unusual love

Summer is such a breeze of happiness and love.
It is so beautiful, the sun beam, the fallen leaves.
Is it summer that I love or just this feeling?
These summer rains, the smell of sand when it is watered by the mizzle.
I never knew I could fall in love with summer.
That the spectrum of human emotions could be this beautiful still remains a puzzle.

Niharika
B. Sc. (H) Botany
I Year

विरही मयूर

श्रावण की मधुमय सन्ध्या में, एक मयूरा घूम रहा था,
मानो विरह वेदना व्याकुल, निज आनन को चूम रहा था।
घूर रहा था मुझे दूर से, जैसे हो व्याकुल कहने को,
साथ सदा ही जो रहता था, विवश हुआ विरहा सहने को।
ऐ मयूर! तुम भी हो अकेले, आओ साथ-साथ सहते हैं,
मुझे सुनाना अपने मन की, और निज मन की भी कहते हैं।
कहाँ भटकते फिरो अकेले, क्या तुमको भी छला गया है,
क्या एकाकी रहने पर यूँ, विवश तुम्हें भी किया गया है?
काल ले गया कहाँ छीन कर, कहीं पता कुछ कर पाये हो?
आह खींच कर या फिर लम्बी, खेल काल का गुन पाये हो।
कौन बचा यहाँ कालचक्र से, मृत्यु-लोक इसको कहते हैं,
सुख-दुख भोग,कर्म-फल अपना, नियत समय पर चल देते हैं।
जो बीत गया सो बीत गया, जो रीत गया सो रीत गया,
जीवन का मान बढ़ाना है, कुछ मन को भी समझाना है।
कुछ खास नही तो आम सही, जीवन बहु भांति सजाना है,
और शान्ति लाभ का आयोजन, मन ही मन नित्य कराना है।
ओ मन मयूर कुछ रुक जाओ, निज पंखों को नित फैलाओ,
ईश्वर की कृतियों को जानो, अपने स्वरूप को पहचानो।
हर जड़-चेतन में ईश्वर है, अप्रतिम कृतित्व सब उसका है,
यह जग-प्रपंच सब माया है, कोई नही किसी का यहाँ है।
कोई नही साथ निभाएगा, सब यही धरा रह जाएगा,
उस परम् तत्व को पहचानो, उसको नित पाने की ठानो।
उसको नित पाने की ठानो।।
उसको नित पाने की ठानो।।।

चेतन्य शर्मा
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

Unfinished freedom

Seventy-eight years since the chains were torn,
a nation rose with the promise of a dawn.
But for some, freedom remains a distant dream,
where justice falters, and the shadows scream.

In the land of legends, where rivers run deep,
where tales of valour in the soil still seep,
Women walk with shackles, unseen, unfelt,
their independence, a luxury seldom dealt.

Criminals roam, with laughter in the night,
their deeds unpunished, hidden from the light.
The scales of justice, tipped and worn with rust,
leaving hopes of fairness crumbling to dust.

The courts, once hallowed, now echo with delay,
a labyrinth of words where truth loses its way.
Promises of justice, mere whispers in the air,
while the innocent wait, in silence and despair.

Seventy-eight years, yet the chains remain,
A freedom half-won, a lingering pain.
For until every soul can walk without fear,
True independence is not yet here.

Soumya Simran Behera
B. Sc. (H) Botany
I Year

युद्ध

मानव समाज जिस प्रकार भिन्न-भिन्न वर्गों में विभाजित है,
आदिकाल से लेकर आज तक हमने अनेकों
आविष्कार किये, निर्माण किये,
किंतु इस सब के बीच एक चीज़ और भी रही जो शायद तब से लेकर आज तक
वैसे ही हमारे समाज के बीच विद्यमान है और वह हैं
'दमन'- एक सशक्त द्वारा निर्बल का दमन एवं शोषण।
हम सभी साक्षी हैं किस तरह विश्व के अलग-अलग देश युद्ध की भेंट चढ़े हुए हैं,
फिर चाहे वह विवाद जमीनी रहा हो,
धार्मिक या जातीय।

हिंसा के इस दौर मे सबसे ज़्यादा नुकसान और पीड़ा आम नागरिकों को झेलनी पड़ती है,
जिसमें सबसे अधिकपीड़ित महिलाएँ और बच्चे होते हैं।
पिछले एक वर्ष में लगभग-लगभग 2,38,000 लोग युद्ध संघर्ष की भेंट चढ़े हैं,
न जाने कितनी माताओं ने अपने बच्चे खोए,
कितनी ही महिलाएँ बेवा हुई और हजारों बच्चें यतीम हुए।
पिछले एक वर्ष में महिलाओं और बच्चों के साथ होने वाले अपराधों की संख्या
50 फीसदी तक बढ़ गयी है।
इन जघन्य कृत्यों को देखकर लगता है कि क्या यही हमारी सभ्यता एवं मानवता है?
न जाने कितने ही ऐसे अपराध रोज हमारे सुनने में आते हैं
किंतु इनका समाधान कहीं नजर नही आता।
बात चाहे यूक्रेन-रूस की हो,
फिलीस्तान-गाजा में मौजूद महिलाओं की
या फिर एक स्वतंत्र गणतांत्रिक राष्ट्र में अपने
कार्यस्थल पर उपस्थितमहिला चिकित्सक की,
कोई भी इन हैवानों से बचा नहीं है।
आखिर में मेरे मन में विचार उमड़ता है कि ये सभी निर्माण और सारी आधुनिकता,
ये सभी आविष्कार भला
किस काम की जब मानवता ही ना रही?
आखिर किस राह की ओर अग्रसर है
यह मानव जाति - प्रगति या पतन?

तानिया सिंह
बी. एससी.(विशेष) जैवचिकित्सा विज्ञान
द्वितीय वर्ष

Soul Searching

Lately I've been accepting the season I'm in
Sometimes I feel like I am growing, sometimes I feel like I am dying.
The next moment, I am thriving. Seconds later, I am sad and they are all so beautiful to me.
The most vulnerable side of me is hidden deep inside my heart.
I may always hide it with my smile or my childish self but I know that's what makes me who I am, my beautiful self.
My thoughts, my dreams, the words that come from my mouth, make me precious and I guess that's what I am, just a little girl who can think beyond the horizon.

Niharika
B. Sc. (H) Botany
I Year

अपना बना लो

सुनो ना,
ये आँखें तुमसे क्या कह रही हैं?
देखो तो इन आँखों में
जिनमें सिर्फ तू दिख रही है,
कह रही हैं ये हाथ थाम लो,
तुम मुझे अपना बना लो।

ना रातों में नींद है
ना दिन में ही चैन है,
सिर्फ तुझे ढूँढ़ते
मेरे दो नैन हैं।
मेरे हँसने की वजह तुम ही हो
और सुनो ना अपने दिल में
थोड़ी तो जगह दो,
थोड़ा-सा ही सही
प्यार तो जता दो,
तुम मुझे अपना बना लो।

ना जाने कब मिलूँगा तुमसे
और मिलकर कब कहूँगा तुमसे
तुम्हारे घुंघराले बालों में लगा
वो गुल मुझे बना लो,
माथे पे सजी वो छोटी
बिंदी बना लो,
अपनी सुरीली आँखों में मुझे
सुरमे-सा सजा लो,
बस! तुम मुझे अपना बना लो।
जानता हूँ नासमझ हूँ
तुम ही समझा दो,
अपने दिल की राह बता दो
अपनी आँखों से ही अपनी बात
मेरी आँखों को बता दो,
और मैं तुम्हें अपना
तुम मुझे अपना बना लो।

शाश्वत शुक्ला 'जुगनू'
बी. एससी. (विशेष) इलेक्ट्रॉनिक्स
द्वितीय वर्ष

Threads of Gratitude

This is to the teachers
The heroes of our life
Teaching us what is wrong and right
To them I just want to say "Thank you"
For being my guiding light.

An inspiration for all
Saving us from the mightiest falls
When we first met
Timid and a little tall
Thank you for being there
In school or when I call.

You must remember
The moments you stood in our shoes
Lost in sweet memories
Of the flashbacks we choose
Thank you teachers for having our back
With feelings of pride that never lack.

One day I would go
With my heart in deep pain
But your teachings and life lessons
Will forever remain
Thank you teachers for everything
Promise, I won't let your sacrifices go in vain.

The reason I will have a future
Is only because of you
And my gratitude will still be left
Even if I say a thousand times, "Thank you".

Shourya Godiyal
B. Sc. (H) Computer Science
I Year

देव की कलम से

1) जब पास थे तो सहा नही गया,
दूर गये तो रहा नहीं गया,
पास आए तो कहा नही गया,
दूर से जताया नही गया,
दूसरों के सामने तुझे अपना बताया गया,
बस तेरे ही सामने कुछ माना नहीं गया।

2) तू एक बार पहले की तरह बुला तो सही
माई, वापस आने को भी तैयार हूँ,
तू हँसते वक्त बड़ी प्यारी लगती है,
तू एक दफा मुस्कुरा तो सही
माई, तेरे लिए मज़ाक बनने को भी तैयार हूँ।

3)सोने से पहले आखिरी ख्याल तू है,
सुबह होते ही पहली याद तू है,
सोते वक्त मेरा ख्वाब तू है,
उठने के बाद जिसे पाना चाहूँ,
वो मंज़िल तू है, तू है, बस तू है!
मेरा सब कुछ बस तू ही है।

देव प्रवीण राठौड़
बी. एससी. (विशेष) जैवचिकित्सा
विज्ञान
तृतीय वर्ष

THE POWER OF LETTING GO

Lessons from a Himalayan Monk

Once upon a time, there lived a young man who was disturbed and stressed out by life's challenges and troubles. While wandering in the Himalayas, seeking the solution to his misery and overthinking, he met a wise monk. The monk sensed his mental confusion and gave him three important lessons that helped him in shaping a new perspective towards life.

He handed him a stone, a supposedly "magical" one, and firmly instructed him to take it everywhere he went. He had to keep the stone with him at all times, even while resting. This new responsibility and being tied to it at all times started taking a toll on him. He grew increasingly restless and started losing sleep. The next morning, he returned the stone to the monk and also told him about how he couldn't sleep because of it. The monk simply smiled and explained how this stone represented the problems faced by him in life. "One can never expect to find peace while holding on to problems. So, trust the flow of the universe and don't resist. Once your inner resistance will go away, your mind will relax and you will find peace even in the challenges of life", he explained. Enlightened, the man decided to extend his stay at the monastery under the monk's guidance. One day, the monk took him to a beautiful lake. The man stood there mesmerised by the beauty of the lake. Then, the monk handed him a heavy stone and asked him to hold that stone while admiring the beauty of the lake. After a while, the man's hand started aching and he felt annoyed. The monk smiled and once again explained, "This stone represents all the small frustrations that compound over time, causing stress and overshadowing all the good things around you. When you let go these minor complaints, you will start enjoying life's beauty once again and be at ease." On their way back from the lakeside, the monk gave a beautiful white flower to the man and asked him to hold it in his hand. After reaching the monastery, the flower wilted. The monk explained, "Relationships are like this flower. If you keep holding on to people's flaws and mistakes, your relationship will wither. Learn to ignore little grievances and see the internal beauty in people whilst ignoring their imperfections."

The monk's teachings are clear: stop holding on to the problems of life, small frustrations and stop hyper fixating on people's flaws. One needs to accept that the universe is vast and whatever happens here, happens for a reason. Therefore, the greatest freedom lies in moving on. When a person starts appreciating life's beauty and stops complaining and avoiding negativity in his outlook towards life's trials and tribulations, he finally finds true inner peace, joy and happiness.

Prateek
B. Sc. (H) Botany
III Year

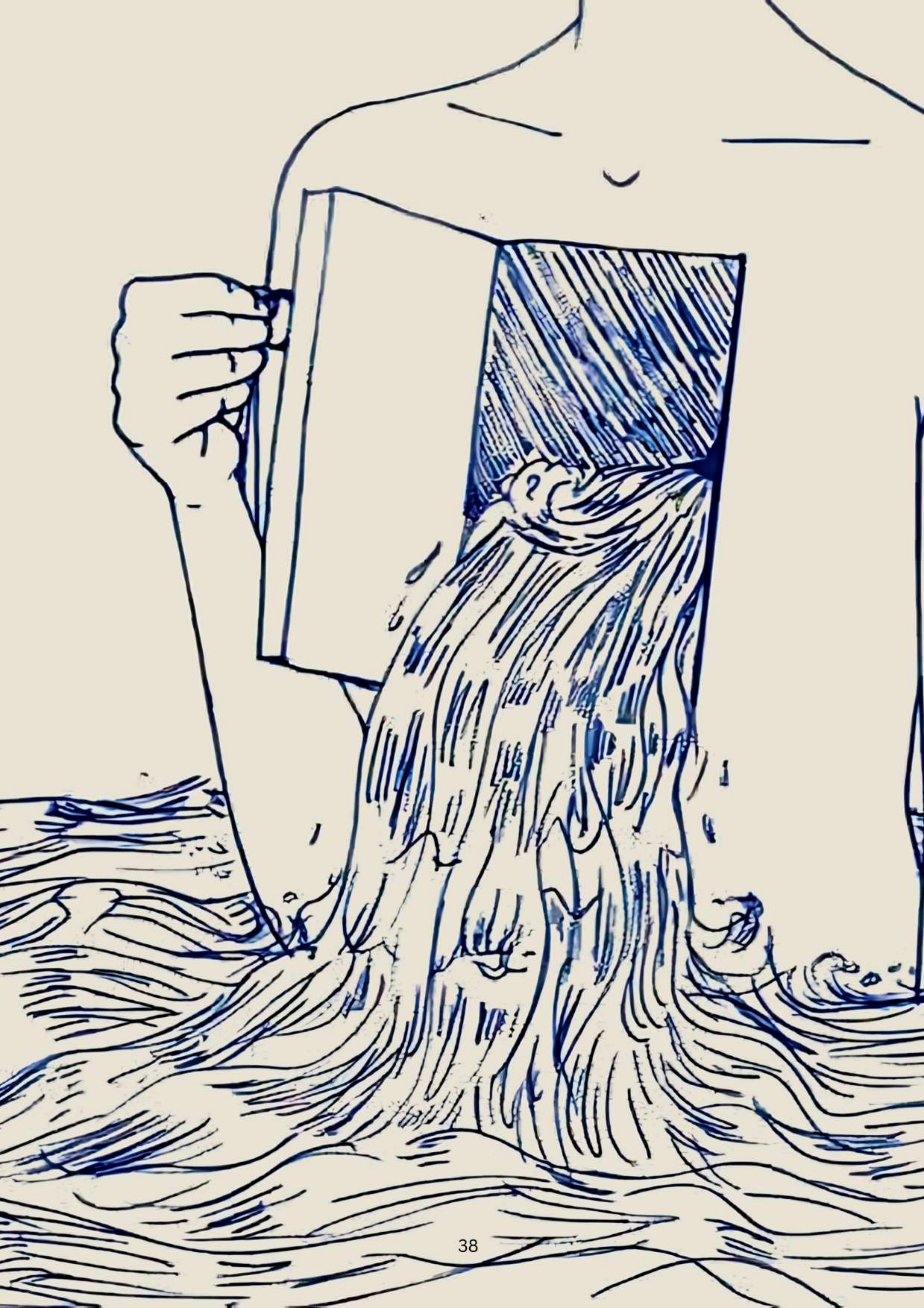

युवा

हम युवा हैं नए भारत के,
बदलाव हमारा नारा है,
माँ भारती की ज़मीं का,
कण-कण हमें प्यारा है।

विवेकानंद की बात करें,
या बात करें कलाम की,
हमें ज्ञान है भगत सिंह के,
क्रांतिकारी सलाम की।

जंग का मैदान हो,
या खेल का मैदान हो,
मकसद है कि हर ज़मीं पे,
भारत का जय गान हो।

हवाओं का जो रूख मोड़ दे,
वैसा हमारा तेज है,
नफरत की आँधियों से,
हमेशा हमें परहेज़ है।

गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार,
आतंकवाद एवं बेरोज़गारी,
भारत के युवाओं को,
बिल्कुल नहीं है ये प्यारी।

दुश्मन जो हमें आँख दिखाये,
यह अंत उनके शरारत के,
बदलाव हमारा नारा है,
हम युवा हैं नए भारत के।

ज्ञानवी सिंह
बी. एससी. फिजिकल साइंस (इलेक्ट्रानिक्स)
द्वितीय वर्ष

THE LONE

A lonely soul
Lost in the ambivalence of the society
They called her an introvert
And didn't think it would hurt.

She seems to have a crowd around
But they do not hear her "SOUND"
The feeling was deep
Where someone could never peep.

Everything looked so full of life
But it was cold, deep inside just like ice.
Ice also has some heat which is latent
But still it was called "BLATENT".

It is not Depression
Which is the current obsession
She is mistaken often
But no one ever dug into the problem.

Let there be a light for her
Let the shadows not haunt her
They may smell good
But the taste of sunlight is good.

Manasvi Sharma
B.Sc. Life Science
I Year

तेरी यादें

याद हमेशा तुम आती हो,
आँखों में आँसू लाती हो,
पर माँ तुम नही आती हो,
मुझको बस यूँ ही रुलाती हो!

होकर कामों में अपने व्यस्त,
दिखाता हूँ कि हूँ मैं मस्त,
पर अंदर से बस रोता हूँ,
जब भी मैं यूँ खुश होता हूँ।

पाकर एक छोटी सी भी खुशी,
सोचताहूँ कि काश आज माँ होती
देख मुझे खुश होती आज,
करती अपने बेटे पर नाज़।

मेरे जो भी हैं सद्गुण
आपसे ही सब आए हैं पहुँच,
कभी बनाता हूँ जो मूर्तियाँ,
तो कभी शिक्षक बन जाता हूँ,
माँ तेरी ही यादों में,
मैं हर रोज़ जल्दी सो जाता हूँ।

सोचता हूँ कि तू आएगी आज,
देगी वो बचपन की मार,
फिर प्यार से मुझको समझाकर,
बहला कर और फुसला कर,
हाथों से अपने मुझे खिलाकर,
गले से अपने लेगी लगा!

पर माँ तुम नहीं आती हो,
मुझको बस यूँ ही रुलाती हो।
लेकिन आ जाओ ना आज,
करनी है तुमसे बहुत सारी बात|

सन्दीप गुप्ता
बी. एससी. (विशेष) जैवचिकित्सा विज्ञान
(तृतीय वर्ष)

The Heart

It is deep in there
Nor too shallow nor too narrow
Where the conscience peeps
...and not a sparrow.

It holds all emotions
But never ever weakens
It is ironical to call it weak
But they said, "You're weak".

Shouldn't it have pumped all sorrow?
Is it waiting for another morrow
Blood is still heavier
...than sorrow.

But why does it have to pump the former
Although it is not even always warmer...

But wait! Who's talking of sorrow?
It is the only one
Who can preserve "real emotions"
Like no other organ...

Not like the imposter brain
The "king of betrayals"
And so it is rightly said
"Think with your HEART and not with your head".

Manasvi Sharma
B. Sc. Life Science
I Year

माँ ना कहती कुछ

माँ ना कहती कुछ,
हँस कर सह लेती सब दुख।
पापा की है डाँट भी सहती,
हमारे भी हर काम को करती।

सुबह से शाम हमारी ख्वाहिश पूरी करती,
फिर भी कहती मैं नहीं थकती।
हमें वह इतना कहती बस पढ़ो-लिखो तुम,
मेरी तरह न अपना जीवन बनाओ तुम।

पहले सबको खिलाती,
तब जाकर खुद वो खाती।
पड़ें बीमार हम जब भी,
अपना दुख भूल हमें देखती।

कैसे सह लेती इतना सब कुछ?
आखिर वह भी है तो इन्सान।
सारी गलतियाँ माफ कर देती
जीवन में कभी ना गिरने देती।

रजनी मिश्रा
बी. एससी. [विशेष] जैवचिकित्सा विज्ञान
प्रथम वर्ष

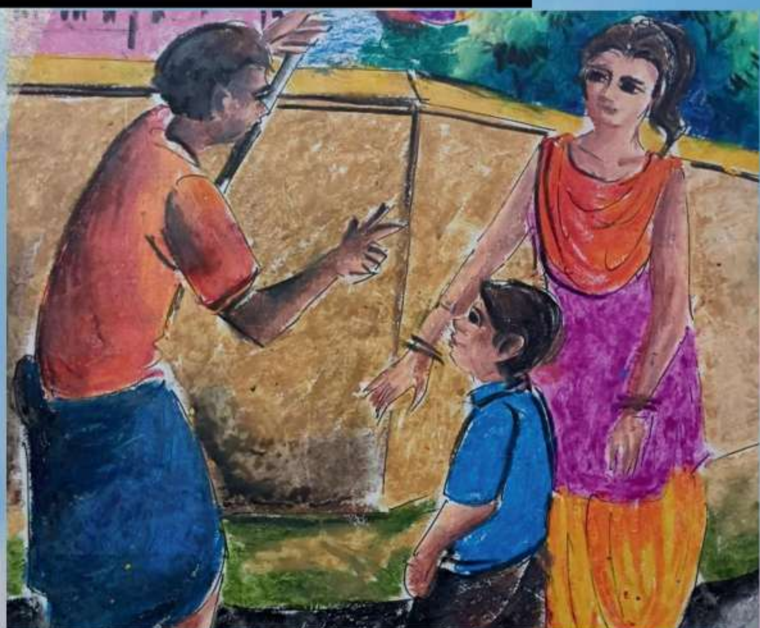

I Killed Her

I killed her
Strangled her till she was breathless and blue
She kept pleading to let go
In her final words she whispered, I was killing me too
I cleaned the crime scene and buried her in the dark
Then went through her things looking for a spark.

She had ribbons in her bag, and dresses and cars
Books, balloons and blue-eyed dolls
Feathers in notebooks and chocolate wraps
Eyelashes and butterfly wings that no longer flapped.
Her room smelled like cupcakes in spring
With pillow forts and a tent-like thing
Dragons and fairies, princesses and swords
A diary full of unspoken words.

Skirts that came down to the scars on her knees
And her fate was left to be handled by me
So I killed her
Strangled her till she was breathless and blue
When she kept pleading to let go
I knew I was killing me too.

Diya Bilahari
B. Sc. (H) Zoology
III YEAR

मेरे मन बाग में

मेरे मन बाग में, हृदय की पाह में,
कल्पना प्रीत की, अल्पना-सी सजी।

रतजगा मन मेरा, तेरी यादों में खो,
तुझको पाया, तुझी में निमग्न हो।
तुम श्वासों, हर इक स्पंदन में बुनी,
मेरे जीवन की इक गाथा अनसुनी।

गीतों में ढली, तुम कविता-सी कली,
जिसको लिखता-सुनता हूँ रोज़ ही।
ज़िंदगी के सभी मेरे इच्छित चयन,
जिसको पाने चले, वो है तेरा मन।

तुम नही, संग यादों के सिलसिले,
बह रही झील आँखों के कोर से।
अनकही पीर में फूल दिल का जले,
तेरे आने से महके मेरा उर प्रिये!

मौन के छोर पर सिंधु-सी ज़िंदगी,
गहरी सहमी हुई, गहन शोर है।
प्रीत की प्यास में आस का दीप है,
जो बुझाना-जलाना तेरे हाथ है।

आ गई तुम, जीवन उजाला हुआ,
महका गुलशन, जूही, चम्पा खिला।
तुम जो रुठी मनाऊँ मैं मन छोड़ के,
जीना-मरना हो संग अब ये वादा हुआ।

मेरे मन बाग में, हृदय की पाह में,
कल्पना प्रीत की, अल्पना-सी सजी।

वंशिका अरोड़ा
बी. एससी. जीवन विज्ञान
द्वितीय वर्ष

The Duel of SILENCE

Two souls sat in silence
Facing each other yet light years apart
Longing for words which will never be spoken
Dwelling on past words which left them broken

No sound created yet a million thoughts conveyed
The world oblivious to a bond getting frayed.
So here's a tale of tragedy
The tale of an unfinished chapter
Silence; an uncertainty between the now and after.

.It's a fire without fuel
A fight without reason
A revenge often cruel
A confusing bitter season
A trek without a guide
To unknown caverns where unsaid emotions hide
A scene of swords clashing without sound collide
A stabbing without lesions; a bloodless homicide.

It's a battle without a victor
A conflict without a survivor
A war of fruitless vengeance;
The infamous Duel of Silence.

Parthiv Pasumarti
B. Sc. (H) Biomedical Science
I Year

In the Heart of Delhi, Our College Stands

In the heart of Delhi, where the skies are wide,
Stands a place of wisdom, our college with pride.
Acharya Narendra Dev, where dreams take flight,
A beacon of learning, bathed in morning light.

Through corridors buzzing with passion and zeal,
Each step is a promise, each moment surreal.
From lecture halls to garden greens,
The spirit of discovery can always be seen.

The city's pulse echoes just beyond the gate,
Delhi's charm whispers, calling us to create.
Among historic streets and bustling bazaars,
We dream of futures under Delhi's stars.

Here we grow, here we learn,
With every page we eagerly turn.
From Science labs to life's grand scheme,
In this college, we chase every dream.

Acharya Narendra Dev, our guiding light,
In the vastness of Delhi, you stand bright.
Together we flourish, together we strive,
In this city's embrace, we come alive.

Akshat Jaiswal
B. Sc. (H) Physics
I Year

जग की लेखी न मिटे

जग की लेखी न मिटे,
ये कलम कहे मुस्काए,
न मनमानी, न आँखों का पानी,
तू व्यर्थ प्रयास किए जाए।

ना नभ सीमा, न धरा धरे है,
तू क्यूँ फिर परेशान,
मृत्युलोक में बंदे तू,
हर मोड़ पे ढूँढ़े मुस्कान।

मुस्कान तो आखिरी मंज़िल है,
सारे युद्ध के बाद,
युद्ध में बिन लहु गवाये,
तू शीर्ष की करे फरियाद।

तुम लड़ो, तुम भिड़ो,
भिड़ने वालों की सब शान,
रावण भी कथा में अमर हो गया,
कोशिश में जब हरि ने हरा प्राण।

तुम आस तो करो,
स्वयं पे विश्वास तो करो,
गति देख दूसरों की डर क्यों जाते हो?
द्वेष के वेग से भर क्यों जाते हो?

उसका साथी सफ़र अलग है,
या शायद सिर्फ गति में रहना,
उसकी चमक तो देख तू,
मन है बैठा गहना।

वो गहना तेरा श्रृंगार है क्या,
खुद को खामोश कर पूछूँ,
उस कनक से कल तेरा साकार है क्या?

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष)
कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

THE DIVINE WITHIN

She seeks the divinity
In the cracks of her ceiling in despair,
Recalling how painful anguish
Makes one yearn for compassion and love.
Soft gentle breeze grazes her skin,
Yet its burden goes beyond that.
It is blown away with a soft peck,
To take the pregnant silence of the terror
The flesh once knew before
The crack on her back
The burst of the ribs,
The rupture in her heart.
They are not merely stretch marks;
Look closely, and deeply
That is the verse
Written on her figure
By God.

If you are intelligent enough to understand,
You will infer what is unwritten.
Thats where you will discover divinity
Not above in the cracks,
But beneath her skin in the power
That lies within and the air sweeps
Through the countless wounds
She bore
And it transforms agony into strength.

Rashika
B. Sc. (H) Botany
II Year

प्रकृति और मनुष्य का संबंध

प्रकृति और मनुष्य का घनिष्ठ संबंध है। वह मनुष्य के सुख में सुखी और दुख में दुखी भी होती है। इस संबंध में श्री मैथिलीशरण गुप्त ने अपने खंडकाव्य 'पंचवटी' में उद्धृत किया है-

सरल तरल जिन तुहिन कणों से, हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीया प्रकृति हमारे साथ उन्हीं से रोती है।
अनजानी भूलों पर भी वह अदय दंड तो देती है,
पर बूढ़ों को भी बच्चों-सा सदयभाव से सेती है।

मनुष्य के लिए धरती उसके घर का आँगन, आसमान, छत, सूर्य-चाँद, तारे-दीपक, सागर-नदी, पानी के मटके और पेड़-पौधे, आहार के साधन हैं। इतना ही नही, मनुष्य के लिए प्रकृति से अच्छा गुरू नही है। आज तक मनुष्य ने जो कुछ हासिल किया है वह सब प्रकृति से सीखकर ही किया है। न्यूटन जैसे महान वैज्ञानिकों को गुरूत्वाकर्षण समेत कई पाठ प्रकृति ने सिखाए हैं तो वही कवियों ने प्रकृति के सानिध्य में रहकर अपनी कविता रूपी वाणी को नया स्वर दिया। इसी तरह आम आदमी ने प्रकृति के तमाम गुणों को समझकर अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव किए।

प्रकृति हमें कई महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है, जैसे पतझड़ का अर्थ पेड़ का अंत नही; इस पाठ को जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में आत्मसात किया उसे असफलता से कभी डर नही लगा और वह विचलित हुए बिना सफलता प्राप्ति के लिए संघर्ष करता रहा। इसी तरह फलों से पूरित किंतु नीचे की ओर झुके पेंड़ हमें सफलता और प्रसिद्धि मिलने या संपन्न होने के पश्चात् भी विनम्र और शालीन बने रहने की शिक्षा देते हैं।

महान उपन्यासकार प्रेमचंद के अनुसार साहित्य में आदर्शवाद का वही स्थान है, जो जीवन में प्रकृति का है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि प्रकृति में सभी का अपना महत्व है। एक छोटे-से- छोटा जीव भी प्रकृति के लिए उपयोगी है, जबकि मत्स्यपुराण में एक वृक्ष को सौ पुत्रों के समान बताया गया है। इसी कारण हमारे यहाँ वृक्ष पूजने की सनातन परंपरा रही है। पुराणों में कहा गया है कि जो मनुष्य नए वृक्ष लगाते हैं, वे शरीर त्याग के पश्चात स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक फलते-फूलते हैं। प्रकृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अपनी वस्तुओं का स्वयं उपभोग नहीं करती, कहा गया है-

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित संपति सचहि सुजान।।
रहीम

प्रकृति सदैव हमें नई सीख देते हुए जीवन के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है।

पर्वत कहता शीश उठाकर तुम भी ऊँचे बन जाओ,
सागर कहता लहराकर मन में गहराई लाओ।
समझ रहे हो क्या कहती, उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग,
भर लो, भर लो अपने मन में मीठी-मीठी मृदुल उमंग।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो, कितना भी हो सिर पर भार,
नभ कहता है फैलो इतना, ढक लो तुम सारा संसार।
सोहन लाल द्विवेदी

प्रकृति कभी भेदभाव नही करती, लेकिन मनुष्य जब प्रकृति से अनावश्यक खिलवाड़ करता है तब वह कुपित होती है और समय- समय पर अपना क्रोध बाढ़, सैलाब, तूफान और कई अन्य प्राकृतिक आपदाओं के रूप में व्यक्त करते हुए मनुष्य को सचेत करती है।
प्रकृति ही जीवन है, प्रकृति ही कविता है, प्रकृति की सुंदरता खुद में श्रृंगार रस का उपहार है, तो बादलों का गरजना-बरसना वीर रस का आगाज़ है। इसमें छिपी भिन्न-भिन्न आवाजें अनुप्रास अलंकार हैं, जिनको सुनकर मोहित होता संसार है। इसका प्रत्येक दृश्य मानव के लिए उपमा अलंकार का आधार है। प्रकृति ऐसी जो करती जीवन का संचार है, प्रकृति के विस्मयकारी रूप जीवन का सार है, प्रकृति ही जीवन का शिष्टाचार है।

प्रियांशु द्विवेदी
बी. एससी. (विशेष) रसायन विज्ञान
द्वितीय वर्ष

She

As beautiful as the first beam of light that falls on the dancing sunflowers
As enchanting as the last sunset,
She is as intelligent as the one above
I won't lie a single syllable about her,
She is God's most gorgeous creation ever.

Clad in a golden Kanjeevaram,
She looks like a goddess.
I try to facsimile her
Such a fool am I, I try to copy the Almighty.

She can be the gentlest kiss
She can be the wrath of God
All depends on whom she is facing.

She'll come like a thunderstorm to take revenge
on your sins
She'll make you her idol for your kindest things.

She is a warrior
She is a nurturer
She is a rebel
She is stubborn
She is the funniest person you will ever see
She is a confident lady
She is a mastermind.

'She' is the one inside you,
Waiting for a chance to conquer the world.

Ayushi Mishra
B. Sc. (H) Biomedical Science
II Year

तुम बहुत प्यारी हो

अक्सर पहचान नही दी जाती है तुम्हें,
पर तुम तो ब्रह्मा की विद्या हो,
सृष्टि संचालन का स्रोत हो,
महादेव की शक्ति हो।

पैरों की जूती नही,
तुम तो उनकी हमराही हो,
उनकी कहानी लिखने वाली स्याही हो।

तुम सुख का साधन नही,
तुम तो सुख-दुख की साथी हो।
गंगा-से संगम के लिए,
अलकनंदा की भागीरथी हो।

कम आँकते हैं तुम्हारी खूबी को,
पर अपने हर किरदार को निभाती बखूबी हो,
ज़रूरत नही तुम्हें 'सर्वगुण संपन्न' होने की,
जैसी भी हो, तुम बहुत प्यारी हो!
तुम बहुत प्यारी हो!

सिमरन
बी. एससी. (विशेष)
जैवचिकित्सा विज्ञान
तृतीय वर्ष

~~Meet up?~~

A Disdainful 2020

An era of turmoil,
Packed with the curses of broken hearts,
They couldn't stop themselves,
From going to the shopping marts.

Thousands dying on the streets,
Because of the nationwide lockdown,
But the fear still creeps,
Of going to one's hometown.

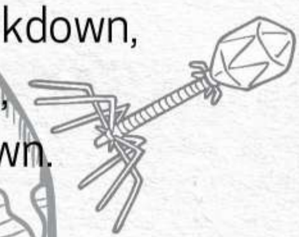

Keeping distance was a tough protocol,
By the passing clock,
It taught them all,
To follow and recall.

It shrunk the minds,
Of the rich and wealthy society,
By isolating them
From the impoverished citizens.

At the end, we learned the C of collaboration,
After seeing the difficulties
Faced by our near and dear ones...

Manasvi Sharma
B. Sc. Life Science
I Year

शायरी

यह चाँद भी कैसा है?
पूरे चेहरे पर गड्ढे,
पर फिर भी सुंदर कहलाता है,
किसी और की रोशनी में
बेहया जगमगाता है।

आगे चलते-चलते कल को गुज़रते देखा,
पीछे क्या कुछ बुरा जमा होते हुए देखा,
आगे एक रोशनी की बात सब ने की थी,
मगर वहाँ भी मैंने ऐसा कुछ खास न देखा।

दुनिया कहती है, बड़े मसरूफ हैं हम,
कभी नक़्काश, कभी फ़लसफी़, कभी पढ़ाकू हैं हम,
क्या बतायें, इस जहाँ से अब ताल्लुक कम रखते हैं,
बेकार बैठे रहे पूरा दिन, फिर भी मसरूफ कहलाते हैं हम।

विजयलक्ष्मी
बी. एससी. (विशेष) जन्तु विज्ञान
तृतीय वर्ष

DYSTOPIAN CROSSWORD

because it hasn't been censored yet!

Or as Big Brother would have it, there has never been any dystopia at all

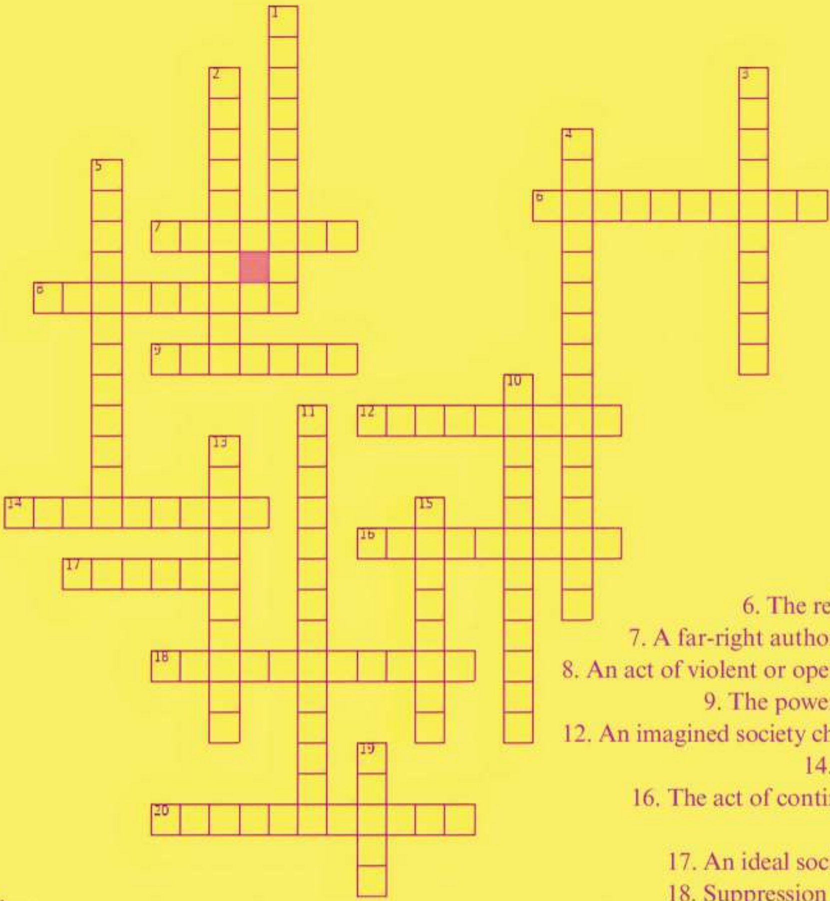

Clues:

Across

6. The refusal to accept or comply with something.
7. A far-right authoritarian ultranationalist political ideology.
8. An act of violent or open resistance to an established government.
9. The power to influence or direct people's behaviour.
12. An imagined society characterized by great suffering or injustice.
14. The state of being separated from others.
16. The act of continuing to live or exist, especially in difficult conditions.
17. An ideal society that is often contrasted with dystopia.
18. Suppression of speech or other public communication.
20. The act of subduing someone or something by force or oppression.

Clues:

Down

1. Dishonest or fraudulent conduct by those in power.
2. Prolonged cruel or unjust treatment of individuals.
3. The application of scientific knowledge for practical purposes.
4. A book by Margaret Atwood focusing on women's rights and totalitarian regimes.
5. A Dystopian novel in which emotions are suppressed and history is rewritten.
10. A political situation where the state holds total authority.
11. A Dystopian novel that highlights the division of people into sectors based on occupation and the telecast of their fight for survival.
13. Information, especially biased or misleading, used to promote a political cause.
15. A movement that emphasizes on the future and technological advancement.
19. The state of being barred from one's native country.

Compiled by Aishani Vashisht
Member, Students' Editorial Board

THE BROKEN SIDE

The world remains in chaos
Of a shuffling battle between men and women
Where freedom of men is justified
But when it comes to women, it is snatched away.

Most men are like, "Why blame us when only a few are wrong?"
The thing is, as we all say, not all men but still 'men'.

A horrendous case happened again in a state of our nation
Where a female doctor got raped and killed
Just because she was in her workplace and doing her duty

The nation is outraged and it should be
But what's the point if justice is denied?

People say women should have done this and that
But no one is going to educate men in this prospect
It's been happening for years and years
Women are declared as the weakest of all
Where men can dominate them once and for all.

I wonder if there is a sense of guilt in those who perpetrate this treachery of evil
Because I think if it did
They wouldn't dare to do so.

Blame on those who are still silent against the oppression of women
We aren't free to do anything at our will
Restrictions are placed at every step we take
We are advised to sacrifice ourselves
Just to make others feel happy.

I think it is time for the nation to change
Fear should pervade the rapist's mind
One would not dare to lay a hand on a woman
One shall know the consequences and the aftermath.

No one has the right to touch a woman's dignity
No one has the right to question her honour
No one has the right to blame her for the filth that a man has caused
No one has the right to cage her.

A rage is roaring inside me
Seeing that the situation is hard for me
As a girl who faces the evil eyes of them
I know how it feels to be a girl in this nation.

That's the truth no one can hide
Even after we try, the mind set won't change
That's the saddest thing to face
In this nation where I reside.

Shivisha Singh
B. Sc. (H) Biomedical Science
I Year

मनोज की कलम से

1) मुझे भाती है तेरी मुस्कुराहट,
यूँही नही हम तेरे दीवाने हुए,
इश्क में तबाह हुए होंगे काफ़ी आशिक,
सभी आशिक यहाँ परवाने नहीं हुए।

2) लिखता हूँ दिल के फसाने, सुनने कौन आए?
दर्द तो है बहुत, बताने कौन आए?
दिखाता नही हूँ ज़ख्म अपने,
सबके हाथों में नमक है, दवा लगाने कौन आए?

3) इश्क की राहों को छोड़ दिया हमने,
अब उस राह पर कभी नहीं जायेंगे,
याद करेंगे तुझे हर पल मगर,
यह ख्वाहिश कभी ज़ुबान पर नहीं लायेंगे।
दर्द के आँसू आते हैं आँखों में रोज़,
मगर उन्हें कभी बाहर नहीं लायेंगे,
सन्नाटा-सा छा गया है ज़िंदगी में,
अब शोर करके कभी झूठे ख़्वाब नहीं सजायेंगे।

4) अपनी हसरतों का गला घोट दिया मैंने,
अब दिल के आँसुओं से मुलाकात नही होती,
मैंने सोचा था की नही बताऊँगा दुनिया को मैं
कि अब तुझ से बात नही होती।

5) बैठा हूँ इंतज़ार में किसी के दीदार के लिए,
दिल भी है बेकरार किसी यार के लिए,
कोशिश है कि कोई यार मिल जाए,
दिल के सारे ज़ख्मों को एक पल में सिल जाए।
दिल के सारे गम को वह कुछ यूँ भर ले,
मेरी सारी परेशानियों को वह अपना कर ले,
क्या कोई मेरा ऐसा यार बन पाएगा?
जब भी मैं अकेला हूँ वह गले लगाएगा।
बैठा हूँ इंतज़ार में किसी के दीदार के लिए,
दिल है बेकरार उस यार के लिए।

6) तू दोस्त है मेरी ये हम भुलायेंगे नही,
याद करेंगे मगर तुझे बुलायेंगे नही,
ज़ख्म दिल पर देना अगर तेरा शौक है,
तो हम ज़ख्म छुपायेंगे, किसी को दिखायेंगे नही।
दर्द बहुत दिया है तूने,
हम दर्द को रखेंगे संभाल के, कभी दवा लगायेंगे नही,
तू शौक से कर बदनाम महफिल में,
हम कभी तेरा नाम ज़ुबाँ पर लायेंगे नही।
हमने तुझे सच्ची मोहब्बत दी,
दोबारा ये गलती दोहरायेंगे नही,
जिन गलियों में गुज़रा था एक वक्त हमारा,
उन गलियों में दोबारा जायेंगे नही।
तू कर गुज़ारिश अब लाख मगर,
हम अकेले खुश हैं किसी को अपनायेंगे नही।

मनोज कुमार
बी. एससी. (विशेष) भौतिक विज्ञान
द्वितीय वर्ष

Delhi - A New Home

You know why I love Delhi? Because it is like me. We are alike. Like two sisters – one a few centuries older.
Delhi is three thousand kilometres away from Kerala, where I come from. In terms of culture and people, it is even farther. But when I came here a year ago, it felt like coming back to a childhood home. One that you've only heard of in stories, one you've always pictured yourself belonging to. I never tried to fit in because I never had to. I would wake up in the morning and let Delhi take me wherever it wanted. New roads, new places, new people. For a city so engraved in history, Delhi surprised me with new thing every day. A year and so many places later, I bet there are still so many new things I haven't seen. It is ironic how I found independence and identity among the largest crowds in the country. Every day, this city brought me a little closer to myself – snuggling under thick blankets, cursing the harshest winter I have ever experienced, watching out of the metro's glass windows at the endless possibilities this place beholds, the company of a strong cup of coffee on my terrace after the summer sun had gone down and so much more…
Remember how I said we're alike? Let me point it out.
Delhi is loud. Haha! The cramped crowds, the packed traffic, the street musicians, the vendors, the bargaining customers begin with sunrise and seep through night.
Delhi is confusing. The vastness of the city is hard to wrap your head around. So many places to be, so many people that you meet. But you know what is more confusing? The metro! All these coloured lines! What do you mean I have to get off at Hauz Khas and walk almost a kilometre for yellow line transfer and then get on another train, so I can finally see India Gate??? Don't worry though. Once you get the knack of it, the metro will witness the best journeys of your life.
Delhi has the worst mood swings.

Delhi - A New Home

The winter, the summer and the little precipitation in between, not even the most brilliant writers can ever sum up the rage of Delhi's seasons in words. So I'll let you experience that on your own.

Delhi doesn't move on! All these forts and tombs and walls, the city still celebrates all the beautiful affairs it had. The kings, emperors and imperialists, they've all given something to the city and centuries later, she keeps them intact in her precious jewel box.

I am the same. I guess you are too. I don't think you choose Delhi, it chooses you. It chooses the ones who are worthy, the ones who are like it. The loud, confused, intense, deep dreamers. The ones who love passionately, the ones who never move on from the past, the ones who work for the future. Roam on the roads, taste the dishes, see the souvenirs. Because what happens in Delhi, stays in you. Forever! So when in doubt, walk out and let the city lead you. Through her streets, through her century-old stories.

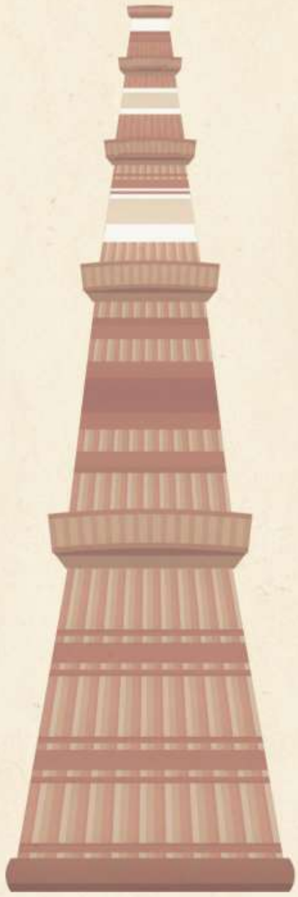

Diya Bilahari
B. Sc. (H) Zoology
III Year

रंगीन हाथों को रंगने वाले

अब आँसू भी सूख गए,
बस दिल में होड़-सी है,
सवालात ओले-से बरसात कर रहे,
घायल मैं जवाब तले दबती जा रही।

दम घुट सा रहा, साँसे अटक सी रहीं,
कैसे लोग जी रहे इस खौफ़नाक दुनिया में,
रंगीन हाथों को फिर क्यों रंग रहे?
रंगीन हाथ क्या नशा चढ़ा रहे,
कि रचयिता का भी डर न रहा?

सियासी खेल कितनों को कफ़न चढ़ा रहा,
ये सिलसिला अब न रुकेगा,
अति अंत तक चलेगा।
अब भी सवालों से घिरी हूँ
अंत कितना भयावह होगा?

शुभ्रा प्रियदर्शिनी
बी. एससी. (विशेष) भौतिक विज्ञान
तृतीय वर्ष

क्या तुम?

सब करते हैं बात, जाने की इस दुनिया में,
तुम ठहर कर बातें करोगी क्या?
सब लगते हैं पराए से, इस अनजाने शहर में,
तुम मेरी माँ- सी, मेरी बनोगी क्या?

माना कुछ गलतियाँ हुई हैं मुझसे भी,
पर मेरे बाबा जैसे उन्हें नकार कर,
मुझे अपना बनाए रखोगी क्या?

मैं आज भी रोज़ उन रास्तों और गलियारों में
करता हूँ इंतज़ार तुम्हारा,
तुम मुझे दिन में एक दफ़ा
याद भी करती हो क्या?

तुषार वशिष्ठ
बी. एससी. (विशेष) गणित
तृतीय वर्ष

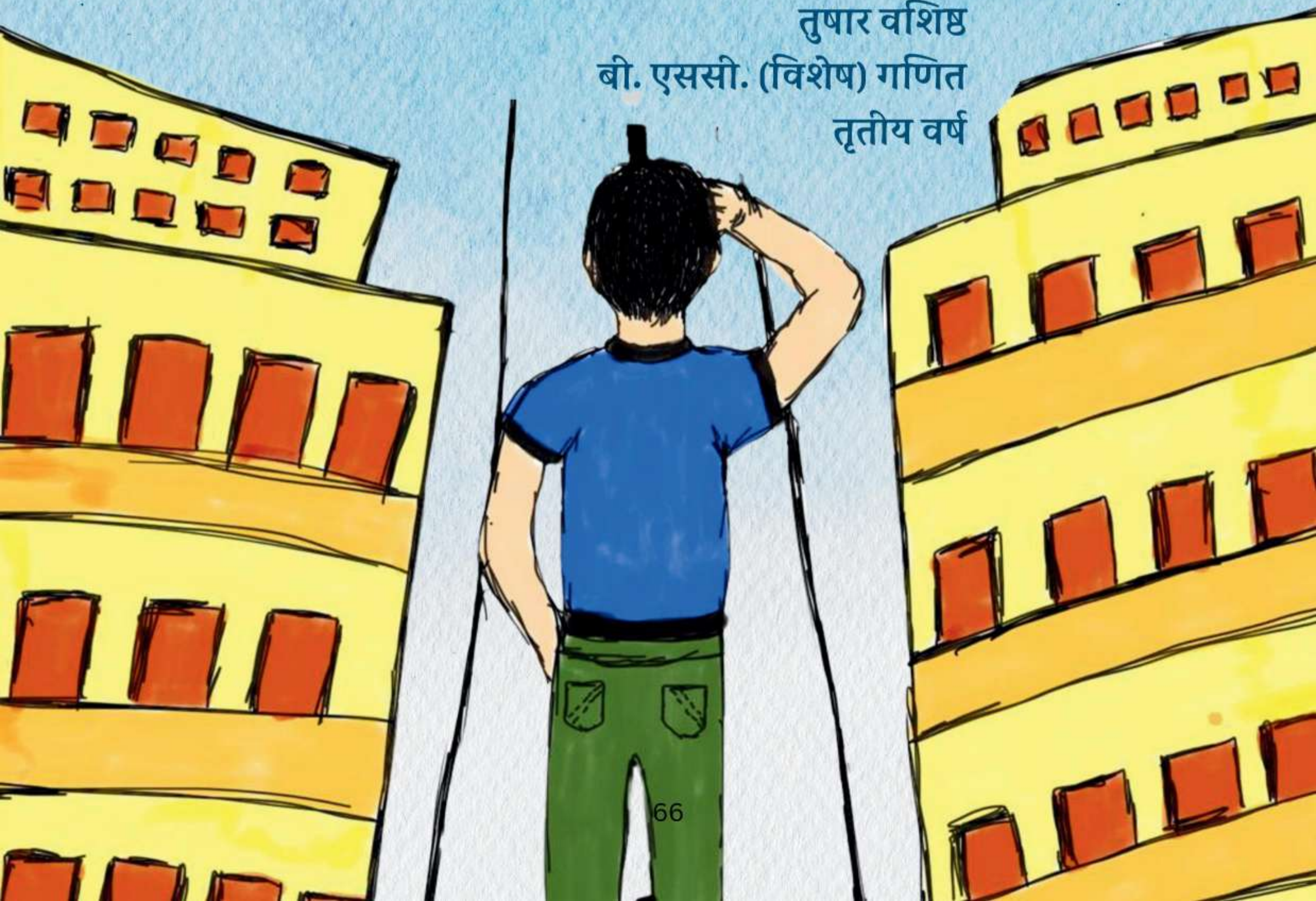

THE ART OF SUBJUGATION THROUGH THE LENS OF DYSTOPIAN LITERATURE

Dystopian fiction is a well-known genre that gives readers an opportunity to reimagine the world with alternate authoritarian and totalitarian societies, where governments impose absolute control and human rights are systematically compromised.

This is my favourite type of fiction because these narratives serve as a reimagining of reality in which the norms of freedom and individual rights, often taken for granted, are entirely stripped away. In these fictional worlds, the state wields unchecked power, exerting control over citizens' thoughts, beliefs and actions, and it challenges us to consider the role of social causes and activism, often dismissed or overlooked in our world as futile or insignificant.

I personally love this perspective because it really forces us to realise how privileged we are and how a systematic weaning of our rights may cause us to fall prey to totalitarian political ideologies. I feel that these fictional narratives are key to understanding how dictatorships work in real life as well. Through these imagined societies, we see our moral frameworks tested, and the flaws in our own thinking about freedom and governance are highlighted. The power of dystopian fiction lies in its ability to meticulously enforce new world orders and how its citizens are compelled to navigate and adapt to this oppressive reality (heavily consistent with dictatorships and military coups).

This genre often offers readers an observational stance, where we become witness to an alternative government system that imposes its authority through the four pillars of control; fear, surveillance, propaganda and punishment while also exposing the severe limitations imposed on personal autonomy and thus really forcing readers to reflect on the ethical boundaries of governance. What particularly piques my interest the most about these societies is the manipulation and propaganda tactics; often carefully chosen, as well as their modus operandi (for example, the conversation between the Head Gamemaker and the President of the state in The Hunger Games offers us a great example of how just a handful, or in this instance, a couple of people can choose the propaganda they want all of Panem to consume, so that the spirit of the rebels gets crushed).

The ways that are used to justify appalling human rights abuses, convincing the population that oppression is not only necessary but beneficial is another very common backdrop of these essays. In these fictional worlds, we encounter oppressive regimes that distort reality, using misinformation and coercive persuasion to instil fear and dependency among citizens. The media, education systems and public messaging in these societies work tirelessly to embed a single narrative: that conformity is essential, dissent is dangerous and the government is the only source of safety and security.

From a third-person's perspective, readers can easily perceive the absurdity and cruelty of these justifications which might appear to the reader as thinly veiled lies or overt power grabs. Yet, the characters within these narratives, immersed in their reality and denied alternative viewpoints, are often convinced of the righteousness of the state's actions. This contrast between the readers' awareness and the characters' acceptance creates a powerful cognitive dissonance, urging readers to question how authoritarian systems manipulate collective consciousness and make the unacceptable appear justifiable.

Take for example, George Orwell's 1984, a classic dystopian novel that brilliantly demonstrates this manipulation. In 1984, the Party employs language control through "Newspeak" and relentless surveillance to maintain control over individuals. The protagonist, Winston Smith, initially recognizes the Party's deceptions, yet the constant exposure to propaganda and brutal re-education breaks his resistance. To the reader, the manipulation tactics of the Party are transparent; we can see through the Party's slogans like "War is Peace" and "Freedom is Slavery." Yet Winston, after enduring the oppressive weight of these tactics, is eventually forced to accept and even love Big Brother, highlighting how relentless psychological manipulation can undermine even the strongest-willed individuals.

Another well-known example (and my personal favourite), is Margaret Atwood's The Handmaid's Tale, where the theocratic society of Gilead uses a combination of religious ideology and violence to justify the subjugation of women. Through religious propaganda, the government enforces its rigid social hierarchy, presenting the oppression of women as a moral and divinely ordained structure. Here, characters like Offred experience both awareness of and submission to the absurdity of their world. This duality not only conveys the horror of Gilead's society but also critiques real-world tendencies to justify inequality and subjugation through similar tactics, employing highly sensitive and volatile aspects of society, such as religious ideology, to subjugate. I like to think of it as the heads of state being really aware of just how sensitive and personal these values are to a person and then use these exact personal ideologies as a shield against rebellion, so much so that going after these religion and cultural based dystopias would mean rebelling against the victim's own sense of self. Again, pillars of strength (religion, culture, individuality) are used to weaken and subjugate the very citizen they seek to strengthen.

These stories also prompt readers to deeply consider what freedom truly means. In dystopian fiction, the absence of freedom is starkly portrayed, forcing us to confront what we value about our own lives and society. The freedom of expression and grieving are two powerful motifs in these narratives, once again highlighting the personal liberties that oppressive regimes often target first.

The freedom to grieve is another overlooked right often targeted in dystopian societies. Grief is a personal response to loss and a natural part of the human experience. Trauma and grief have been explored very intelligently by Margaret Atwood and Suzanne Collins through their characters Offred and Katniss. Totalitarian governments in dystopian fiction often undermine and make active efforts to dismiss this right, preventing individuals from expressing their sorrow or loss. This prohibition serves to dehumanize the population, further breaking their spirits and solidifying the state's control. By denying individuals the right to grieve openly, the state attempts to suppress personal connections and emotional ties that could foster feelings of being united in grief as a community and prevent any subsequent dissent or rebellion.

In Aldous Huxley's Brave New World, grief and emotional distress are anesthetized by a drug called "soma," which eliminates any sense of personal or existential sorrow. Here, the authority uses pleasure and distraction as forms of control, subtly removing the capacity for deep personal emotions, including grief. The inability to mourn the loss of relationships, or even one's own autonomy, demonstrates the emotional and psychological cost of state-mandated happiness, raising questions about the true nature of freedom and the value of suffering as a part of the human condition.

Dystopian fiction, therefore, offers much more than an escape into a fictional, cautionary world; it holds up a mirror to our own societies and challenges us to reflect on how far we might go in compromising our liberties for the sake of security or conformity. These narratives compel readers to question their own beliefs, especially regarding social causes, civil rights and the worth of individual autonomy. I strongly feel that these pieces of literature act as an "intellectual scrub", challenging us to really assess the current state of our rights; urging us to re-evaluate the freedoms we have and the vigilance required to maintain them. In a world where freedom and autonomy are not guaranteed, dystopian fiction reminds us of the resilience and courage, vigilance and intelligence necessary to protect our most fundamental rights.

References:

1. Orwell, G. (1949). 1984. London: Secker & Warburg.
2. Atwood, M. (1985). The Handmaid's Tale. Toronto: McClelland & Stewart.
3. Huxley, A. (1932). Brave New World. London: Chatto & Windus.
4. Arndt, M., & Lawrence, F. (Writers). (2013). The Hunger Games: Catching Fire [Screenplay]. Lionsgate. pp. 42-44. Retrieved from https://assets.scriptslug.com/live/pdf/scripts/the-hunger-games-catching-fire-2013.pdf

Aishani Vashisht
Member, Students' Editorial Board

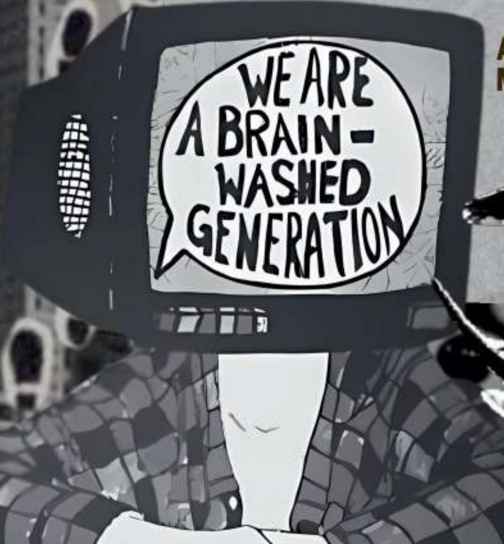

My Great-grandfather

I don't remember him much. Except that he was a short man with a stoop and nicely trimmed white hair. He was really old and from what I could count back then, he was way older than fifty! My mother told me he was almost a hundred, but since that was a number I couldn't comprehend in my three-year-old brain, I chose not to care about that. Now I realise that he was a man who had outlived a lot of his contemporaries and lived to see three generations of his legacy going through almost all the major events of life. My great grandfather, Chathan.

There isn't much I know about his youth or childhood, because he was on his deathbed with tubes through his nostrils and mouth in the first memory I have of him. I do know that he was married to Karumbi, my great-grandmother, that he had a son Thankappan, who is my grandfather and that we shared the same star sign. I wonder if that was why he could only recognise me when he was bedridden and I had gone to visit him with my parents. Back then I was hiding behind my mother, scared of this almost skeletonised man, but had he died 17 years later, I bet it would have been a very emotional moment for both of us.

In my second memory of him, it was just his face in the newspaper with a very calm but curious expression. Perhaps that was one of the only times his photo was taken and the camera must have been a peculiar object for him. I remember carrying the obituary column, showing his picture to everyone including my grief-stricken mother with pride. For a minute, I believe that made me the cruellest three-year old on the planet.

My Great-grandfather

He was one hundred and six, if I am not wrong. A man who lived to see white men walk around in uniforms giving orders, to brown men reclaiming their land, to his granddaughters' marriages getting captured on a video cam.

He shows up on my mother's wedding album and my naming ceremony a few times. A very old man with a calm face and eyes that hid the wisdom from the long life he lived. There is another picture as well, me as a toddler, in my mother's lap and him looking at me like I am going to be the only person who he won't forget, even on his deathbed.

He's probably looking down at me as I am writing this, or as you're reading this. I hope he gets to know that I look up to him as well sometimes and that someday we'll both be on the same side and I will get to hear the tonnes of stories that he has lived.

Diya Bilahari
B. Sc. (H) Zoology
III Year

क्या लिखूँ?

चाँद-सी मुस्कान लिखूँ,
फूलों से पहचान लिखूँ,
तुझको अब मैं नूर लिखूँ,
या तुझको मैं हूर लिखूँ?

लिख दूँ तुझ पर एक लेख,
या पूरी एक किताब लिखूँ,
नदियों की तू शांत नहर,
या तुझको मीठा आब लिखूँ?

गीतों की तू मीठी धुन,
या घुंघरू की झंकार लिखूँ,
सुहानी-सी है तू एक शाम,
या खुद को तेरे नाम लिखूँ?

है तेरा हर अंदाज़ अलग,
तुझको एक विचार लिखूँ,
है कौन, ये बतलादे तू,
या तुझे खुदा का उपहार लिखूँ?

मनोज कुमार
बी. एससी. (विशेष) भौतिक विज्ञान
द्वितीय वर्ष

माँ

तुझसे हाथ छुड़ाकर भागा था,
दुनिया देखने को माँ,
दुनिया देखी तो जाना,
तेरा साथ ही तो दुनिया थी माँ।

दुनिया मेरी माँ हँसना तेरा,
नैनों में तेरे बसना मेरा,
दुनिया मेरी गुस्सा तेरा, h
मेरी दुनिया हर किस्सा तेरा।

गुलाब की सुन्दर लालिमा,
देन है उसकी डाली, माँ,
होके डाली से जुदा,
हो जाती वह काली, माँ।
मेरी कली की तू वो डाली है, माँ,
जुदा होकर जिससे, हर कली काली है, माँ।

ग्रंथों में वेदों में माँ,
मैंने जितनी देवी देखी हैं,
बस नाम सबका अलग-अलग है,
सारी देवियाँ तुझमें, तू एक ही है।

मेरे काल की तू काली है, माँ,
मेरे रक्त की तू लाली है, माँ,
मेरे अक्षर की तू सरस्वती,
मैं पुष्प तो, तू डाली है, माँ।

मेरे सुबह की लाली है, माँ,
चाँद की क्या चादर है, माँ,
जो रूप से तेरे मेल करे,
आँख खोल के ताक ले जो अम्बर को,
रवि आँख मूँद ना झेल सके।

तुझसे हाथ छुड़ाकर भागा था,
दुनिया देखने को माँ,
दुनिया देखी तो जाना,
तेरा साथ ही तो दुनिया थी माँ।

दुनिया मेरी माँ हँसना तेरा,
नैनों में तेरे बसना मेरा,
दुनिया मेरी गुस्सा तेरा, h
मेरी दुनिया हर किस्सा तेरा।

गुलाब की सुन्दर लालिमा,
देन है उसकी डाली, माँ,
होके डाली से जुदा,
हो जाती वह काली, माँ।
मेरी कली की तू वो डाली है, माँ,
जुदा होकर जिससे, हर कली काली है, माँ।

ग्रंथों में वेदों में माँ,
मैंने जितनी देवी देखी हैं,
बस नाम सबका अलग-अलग है,
सारी देवियाँ तुझमें, तू एक ही है।

मेरे काल की तू काली है, माँ,
मेरे रक्त की तू लाली है, माँ,
मेरे अक्षर की तू सरस्वती,
मैं पुष्प तो, तू डाली है, माँ।

मेरे सुबह की लाली है, माँ,
चाँद की क्या चादर है, माँ,
जो रूप से तेरे मेल करे,
आँख खोल के ताक ले जो अम्बर को,
रवि आँख मूँद ना झेल सके।

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष) कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

Western Feminism & भारतीय फेमिनिनिटी

A Comparative Study

Women's empowerment is a process that enables women to take control of their lives, make informed decisions and access resources and opportunities that would lead to their full development. This is derived from the need to challenge and transform patriarchal structures, attitudes and practices that underpin gender discrimination, marginalization and exclusion. Empowered women would be able to exercise autonomy and agency in their private and public life.

It entails equal opportunities in education, employment, health and political life; to develop self-respect, self-confidence, and strength; to think and express their opinions, needs, and desires; to participate fully in decision-making processes that concern their lives; to live free from violence, exploitation, and discrimination.

Women's empowerment is multidimensional; it includes aspects of social, economic, political, cultural, and psychological elements. It takes into consideration differences in experiences and perceptions that exist among women themselves and tries to respond to these various intersecting forms of oppression and inequality.

Western feminism and Bhartiya femininity represent two distinct approaches to understanding and addressing gender inequality, shaped by their unique cultural, historical and philosophical contexts

Western feminism, emerging in the 18th century, emphasizes individual rights, autonomy, and equality, often focusing on challenging patriarchal structures and institutions through reason, rationality and scientific inquiry. With its evolution through various waves, from suffrage and property rights to intersectionality and digital activism, Western feminism has prioritized gender equality, reproductive rights and sexuality, influenced by key figures like Mary Wollstonecraft, Simone de Beauvoir and Gloria Steinem.

In contrast, Bhartiya femininity, rooted in ancient Indian philosophy and spirituality, emphasizes interconnectedness, community, and holistic well-being, drawing on concepts like Shakti, Dharma, Karma, and Yoga. It seeks a balance between individual growth and family and social responsibilities, incorporating spiritual and emotional dimensions, and has evolved through movements like 19th-century social reform and 20th-century nationalism, influenced by figures like Pandita Ramabai, Sarojini Naidu and Vandana Shiva.

While Western feminism often prioritizes individual empowerment, Bhartiya femininity seeks collective transformation, reflecting fundamental variations in cultural and philosophical contexts that lead to diverse strategies for empowerment and social change.

Furthermore, Western feminism has been critiqued for its universalizing tendencies, neglecting diverse experiences and perspectives, whereas Bhartiya femininity emphasizes contextualized understanding and inclusive approaches. Additionally, Western feminism has focused on gender roles and identity, whereas Bhartiya femininity explores the intersections of gender with caste, class, religion and culture, highlighting the complexities of Indian society.

Bhartiya femininity also draws on indigenous knowledge systems such as Ayurveda and folk practices to promote women's health and well-being. By recognizing and respecting these differences, we can foster a more nuanced understanding of gender empowerment and work towards a more inclusive and equitable society, acknowledging the strengths of both approaches and learning from their limitations.

A comparative study of Western feminism and Bhartiya femininity offers valuable insights for crafting more inclusive and effective strategies for women's empowerment. By integrating the strengths of both frameworks, a more inclusive and comprehensive empowerment strategy can emerge. Combining Western feminism's focus on individual rights with Bhartiya femininity's emphasis on collective and spiritual well-being could lead to more sustainable empowerment initiatives. Contextualizing empowerment efforts within cultural, social, and historical frameworks, while balancing individual autonomy with collective responsibilities, is crucial. These approaches, along with educational programmes, legal reforms, community engagement, and continuous learning, can foster a more holistic and effective pathway to women's empowerment. Future research could explore the intersectionality between these philosophies, the role of men in empowerment, and the impacts of globalization, spirituality, and digital tools, ensuring that empowerment strategies evolve to address the complexities of gender equality in diverse contexts.

Siya Gupta
B.Sc. (H) Zoology
II Year

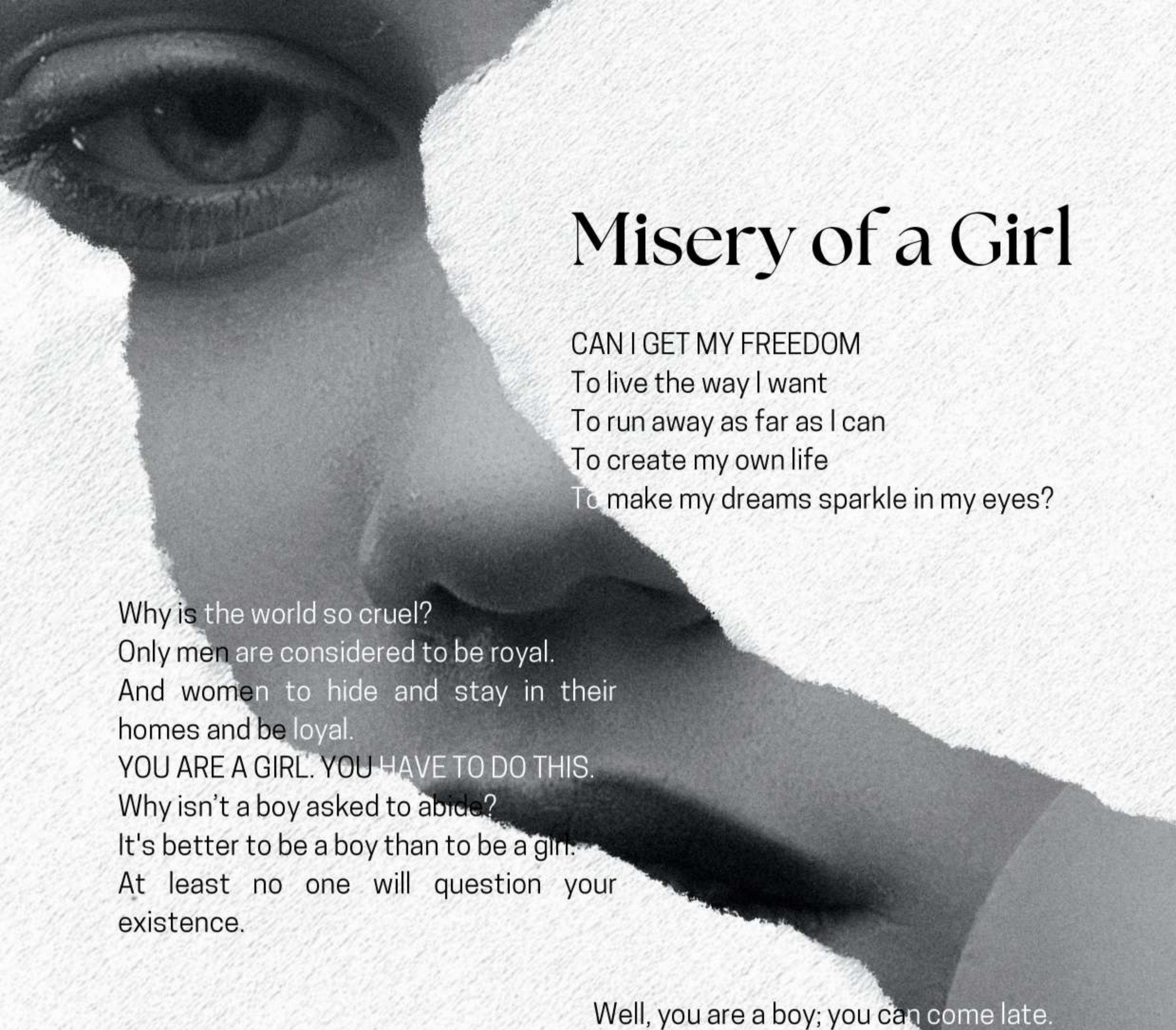

Misery of a Girl

CAN I GET MY FREEDOM
To live the way I want
To run away as far as I can
To create my own life
To make my dreams sparkle in my eyes?

Why is the world so cruel?
Only men are considered to be royal.
And women to hide and stay in their homes and be loyal.
YOU ARE A GIRL. YOU HAVE TO DO THIS.
Why isn't a boy asked to abide?
It's better to be a boy than to be a girl.
At least no one will question your existence.

Well, you are a boy; you can come late.
Oh, the world isn't safe for girls. Be home by eight.
You can marry whoever you want, my son.
Our values do not allow our daughters to make boyfriends for love and fun.
Wish it was not like that today.
I hope someone understands where I want my way
Hoping to be alive
To live life my way and be content.

Aisha Gupta
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

मुड़ कर आजा रे

भीग के बरखा में बिरहा के, खत भी लिखा जो भीगा रे,
सातों रंग का इंद्रधनषु भी, बेरंगा सा फीका रे,
कंठो के मेरे राग भी रसिया, बिन रागिनी रोए रे,
शशि शीर्ष पर चढ़ कर डोले, पर आँखें न एक पल सोए रे,
बैठा उदास है, नाराज़ है, आजा इसे मना जा रे,
रक्त रगों में राग छेड़ के रसिया तोहे पुकारे रे,
आँखों की ओट से धड़कन झाँके, मनबसिया मुड़ कर आजा रे।

रूठने की रीत पुरानी, ये रीत मुझे न भाये रे,
पर भरी-भरी अँख रोये मनवा, जब तू सपने में आये रे,
बीती होली जो रंगी थी चोली, वो चीर अब तक पास मेरे,
झड़े रंग उस दपुट्टे के भी, पर टूटी न अखियन की आस मेरे,
या संग मेरे, नही तो डोली संग तेरे, उठेगा मेरा जनाज़ा रे,
रक्त रगों में राग छेड़ के रसिया तोहे पुकारे रे,
आँखों की ओट से धड़कन झाँके, मनबसिया मुड़ कर आजा रे।

संग सावन कितने बीते रे, जंग ज़माने से भी जीते रे,
फिर अब कहाँ तू हार गई,
किस ओर नदी की धार गई,
किधर से उगता अब सूरज तेरा,
किसने केश पे तेरे किया बसेरा?
बस एक खत लिख कर समझा जा रे,
रक्त रगों में राग छेड़ के रसिया तोहे पुकारे रे,
आँखों की ओट से धड़कन झाँके, मनबसिया मुड़ कर आजा रे।

महंत मास बसंत का,
लिखे प्रीत कथा हर पंत की,
उसी कलम से लिख दी कैसे,
तूने कथा हमारे अंत की,
जानू मैं, न साजिश है ये,
किसी और की तुझसे गुज़ारिश है ये।

चल, काँटों की तो फितरत है काटना,
पर माशूका तो मेरी गुलाब थी,
बाद में हुई होगी शायद-
ना शुरू से इतनी बेआब थी,
मर भी जाऊँ फुरसत से, कोई नगमा वैसा गाजा रे,
रक्त रगों में राग छेड़ के रसिया तोहे पुकारे रे,
आँखों की ओट से धड़कन झाँके, मनबसिया मुड़ कर आजा रे।

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष) कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

चले गए, भले गए

कहकर बस एक बात यही,
हम मिलेंगे फिर कभी,
कि फिर कभी अरमानों का मुकम्मल आशियाना होगा,
मिलेंगे फिर कभी, मुझे अब जाना होगा।
जब तक छाया, भू, गगन, धरा,
जब तक जलधी है जल से भरा,
और जब तक आँखों में आस धरा,
तब तक तू मेरी और मैं तेरा।

इतना कुछ कह के पिया तुम चले गए जी,
बरसों बीते पर लगता है कल गए जी,
दिन, दिन से ना महसूस होते,
आँखों के आँसू भी रोते।
कहने को जग में लाखों मगर,
मन के जग में अकेले हैं हम।

पछेया बयार पिया छेड़े सतावे,
मन में मिलनवा की अगिया लगावे,
जिया सुलगावे पिया तोरी मुस्कनिया,
जाओ रे, जलाई दिए मोरी जवनिया।

जमुना किनारे पिया, जलाया था प्रीत दिया,
कसमें थी रहेंगे संग हम, बनके श्री राम-सिया,
श्री राम की रामायण का हमें अंत ना पता था,
आज फिर एक सिया अकेली है; इसमें भी राघव का खता था।
टूट गया वह दिया पिया जमुना के एक झोखे से,
जलता प्यार का दिया नही बेईमानी धोखे से,
टूटा दिया रौशन होता नही, क्या खुद सुलगकर रौशन करें?
ऐ जान मेरे इस जहान के, तू ही बता हम क्या करें?

कहते थे तुम, मैं तेरी दिन-रात हूँ,
मैं ही अंत तुम्हारी और मैं ही शुरुआत हूँ,
पूछना था कि जीवन में तेरे, अब दिन-रात नही होता क्या?
मेरी रात यहाँ तो रो रही, तू सूखी आँखों सोता क्या?

होने को तो हो जाएगा, तेरा रोम-रोम किसी और का,
बनके निकलोगे तुम सूरज किसी और के भोर का,
पर शामों में चाँद तले मेरा ही मुखड़ा पाओगे,
मेरी जान, तूने मुझे भुला दिया, यह भूल कभी ना पाओगे।

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष) कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

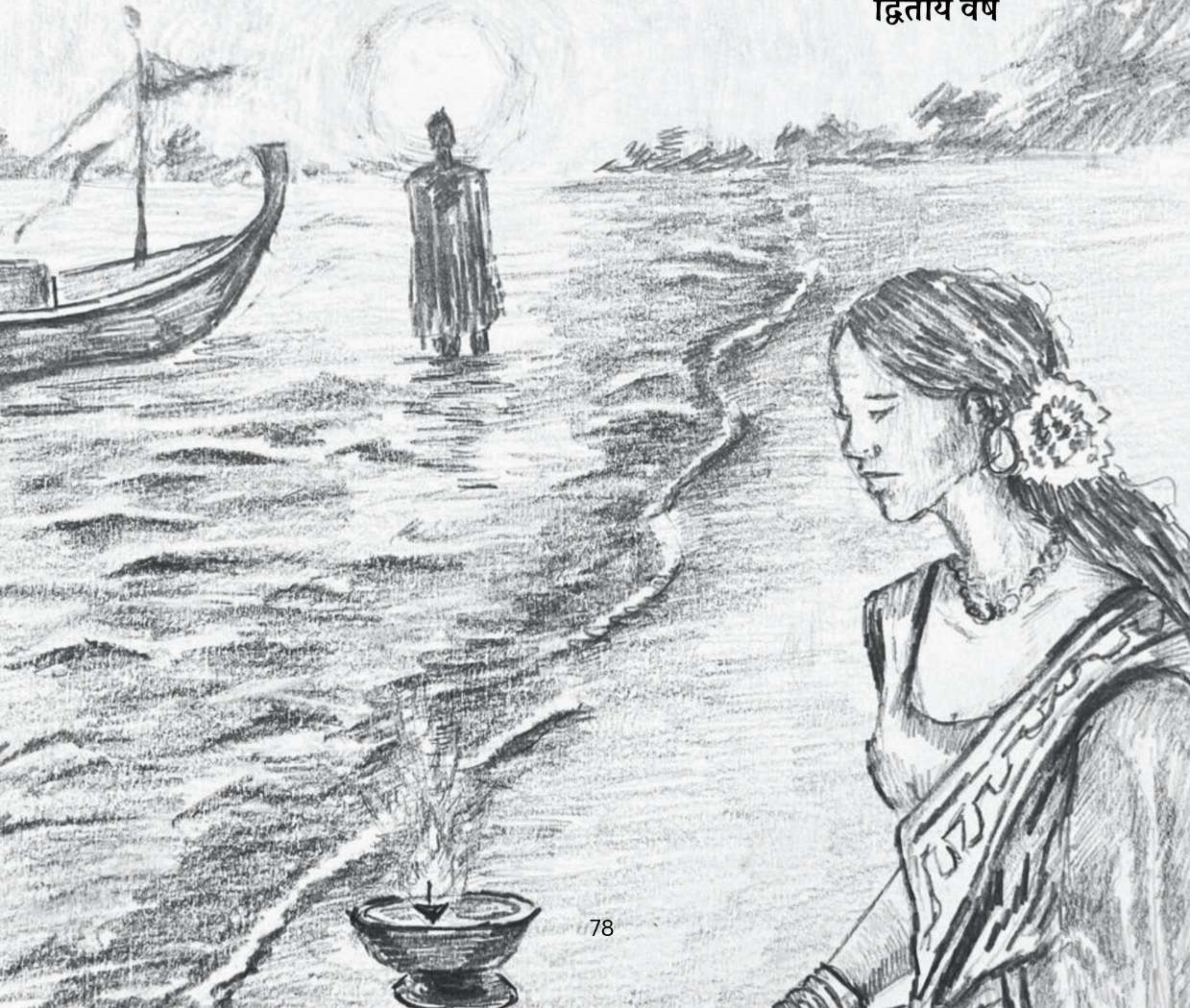

Something New Now

On separate paths, we now must roam,
No longer lovers, but something more,
A stronger bond, forever to hold,
Like a tree's roots, firm and bold.

Not friends, or best friends, it's true,
We're something special, me and you,
Memories woven, a tapestry grand,
In each other's hearts, we'll forever stand.

In separate journeys, we now embark,
Yet you'll remain close, even in the dark,
A special place, you'll always hold,
In this story of ours, a lot is still untold.

Nausheen
B. Sc. Life Science
I Year

Whispers

Each night, I gaze at the constellations
Searching for you, in their ethereal light
I remember how, at just nine of my life
Your eyes brimmed with tears when
I was wounded.
How your embrace shielded me from life's harshness.

Now, existence feels hollow without you.
I yearn for you in every moment of joy and sorrow
Thinking, perhaps you are gazing at me still.

Anushka Sharma
B. Sc. (H) Biomedical Science
I Year

Echoes of Us

I recollect the days we'd sit and fantasize,
Talking about the drone's and the sky's soft luminescence
Mapping the future on paper with carefree palms,
Building castles out of clumsy paths.

We vowed then, through thick and thin,
That no matter what, we'd always win
We'd stand side by side, come what may,
But life, it seems, had another say.

Now, void fills the space between,
Where laughter once painted every scene
The echoes of us, so vivid, so dear,
Now, feel like whispers I strain to hear.

I wonder, do you think of me too?
Of all the things we swore we'd do
Of those nights under the star's soft light,
When we thought forever was in our sight.

But time has a way of pulling apart,
The closest bonds, the strongest hearts
Yet still, I hold our memories tight,
In the quiet moments of the night.

Though we drifted, like leaves in the wind
I'll never forget where we've been
And even if we're worlds apart,
You'll always have a place in my heart.

Anushka Sharma
B. Sc. (H) Biomedical Science
I Year

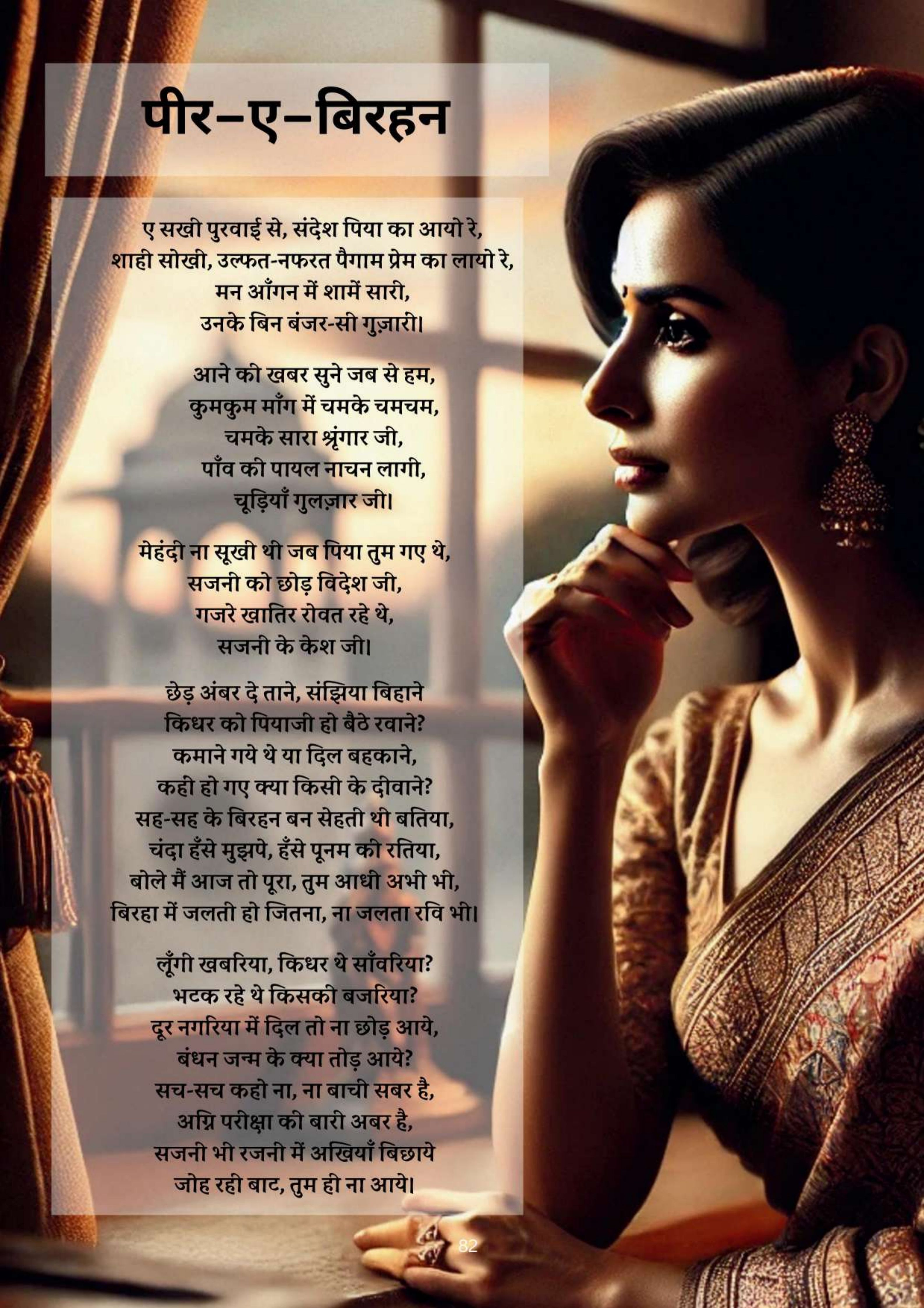

पीर–ए–बिरहन

ए सखी पुरवाई से, संदेश पिया का आयो रे,
शाही सोखी, उल्फत-नफरत पैगाम प्रेम का लायो रे,
मन आँगन में शामें सारी,
उनके बिन बंजर-सी गुज़ारी।

आने की खबर सुने जब से हम,
कुमकुम माँग में चमके चमचम,
चमके सारा श्रृंगार जी,
पाँव की पायल नाचन लागी,
चूड़ियाँ गुलज़ार जी।

मेहंदी ना सूखी थी जब पिया तुम गए थे,
सजनी को छोड़ विदेश जी,
गजरे खातिर रोवत रहे थे,
सजनी के केश जी।

छेड़ अंबर दे ताने, संझिया बिहाने
किधर को पियाजी हो बैठे रवाने?
कमाने गये थे या दिल बहकाने,
कही हो गए क्या किसी के दीवाने?
सह-सह के बिरहन बन सेहती थी बतिया,
चंदा हँसे मुझपे, हँसे पूनम की रतिया,
बोले मैं आज तो पूरा, तुम आधी अभी भी,
बिरहा में जलती हो जितना, ना जलता रवि भी।

लूँगी खबरिया, किधर थे साँवरिया?
भटक रहे थे किसकी बजरिया?
दूर नगरिया में दिल तो ना छोड़ आये,
बंधन जन्म के क्या तोड़ आये?
सच-सच कहो ना, ना बाची सबर है,
अग्नि परीक्षा की बारी अबर है,
सजनी भी रजनी में अखियाँ बिछाये
जोह रही बाट, तुम ही ना आये।

लाल स्याही से आँख मोरी रंगाये गयो जी,
पगली नाम मोरा धराये गयो जी,
आ भी जा सजना, रात बड़ी खार भयी,
नोचन को देहिया पड़े है कुछ पीछे,
लाज बिल्कुल बची ना है आँखन के नीचे,
इनको ही कल थी रोटी खिलाई,
इन ने भी भौजी थी कहके बुलायी,
कवने भँवर में गुम हो साँवरिया?
हरने को चीर मेरा दर पे ये खड़े हैं,
मेरे हाथों से हथियार इनके बड़े हैं,
कान्हा का अवतार ना कलियुग में होगा,
बचेगा ना जोगन का केसरिया जोगा,
द्रौपदी ना कही भी, दुर्योधन सभी हैं,
गिरधारी का नाम मात्र गुंजन।
तुम ही बनके कृष्ण आ जाओ पिया जी,
लौट जाना बचा के भले ही जिया जी,
ना मेरी माई बची है, ना कोई कहने को अपना,
एक तुम ही सगे हो, जो बन बैठे हो सपना।
खौफ भरी अखियाँ,
छत से झाँक रही सखियाँ,
ना कोई परिंदा बचाने को आया,
छन भर में रिश्ता अपना से पराया।
हर नारी जो ना कर सकती
जौहर को मान के भक्ति,
सौंप दिया खुद को अग्नि के तेजस में
घुल गई वो अपने अंत के रस में,
आरंभ एक ऐसा बन के गई,
पापी के पंजे में पड़ने से
पावक में मरना ही सही।
जो दुनिया किसी की कभी ना थी हुई
वो दुनिया तेरी भी कभी ना हुई,
फिर ना कभी उस आँगन से बिरहन की हुँकार हुई
न परदेस से पिया लौटा, जाने कहाँ अखियाँ चार हुई,
पर पायल की झंकार उस आँगन से अक्सर आती है,
जिस अग्नि की गोद में बैठी थी, आज तक जलती
वो बाती है।

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष) कम्प्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

दर्पण

शाश्वत शुक्ला 'जुगनू'
बी. एससी. (विशेष) इलेक्ट्रॉनिक्स
द्वितीय वर्ष

कैसे हैं आप लोग, उम्मीद करता हूँ अच्छे ही होंगे। बहुत दिनों बाद आप लोगों से मिल रहा हूँ, कही भूल तो नही गए हैं मुझे? अगर भूल गए हैं तो मैं याद दिला देता हूँ, अरे मैं इस इंस्टाग्राम अकाउंट धारक का साथी उनकी कलम (वास्तविकता में कीबोर्ड) हूँ।

असल में पिछले दिनों में व्यस्तता के कारण मेरे मालिक ने मुझे लंबे अवकाश पर भेज दिया था, लेकिन अब वापस बुला लिया है। आखिर कब तक मुझसे दूर रहते, अब उनकी सारी मन की बातों को मैं ही तो सुनता हूँ और सेव करके रखता हूँ।

बहरहाल अब ये सब बातें हो गई हों तो आज जिस काम के लिए आया हूँ वो कर लेता हूँ।

ऊपर इस छवि में आपको क्या दिख रहा है?

निश्चित ही आपका उत्तर होगा "

छवि में तुम्हारे

मालिक और एक दर्पण दिख रहे हैं";

सही उत्तर है आपका।

ये छवि तो पुरानी है मगर मेरे मालिक को दर्पण पर अपनी एक टिप्पणी व्यक्त करनी थी जिसके लिए उन्होंने इस छवि को चुना।

मेरे मालिक ने मुझसे 'दर्पण' के ऊपर कुछ विचार साझा किये, और उन विचारों को आपके बीच प्रस्तुत करने का काम मुझे सौंपा है। तो चलिए अब मैं उनके विचारों पर थोड़ी रोशनी डाल कर आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

दर्पण! अगर मैं आप से पूछूँ कि दर्पण क्या है, तो निश्चय ही आप यही बोलेंगे की ये एक निर्जीव वस्तु है, लेकिन अगर आप ऐसा सोचते हैं तो अपनी इस सोच की एक गठरी बनाइये और कचरे के डब्बे में डाल आइये क्योंकि ये कोई निर्जीव वस्तु नही है।

हाँ देखने में तो निर्जीव ही लगेगी परन्तु है नहीं। अगर मैं आपसे कहूँ की आप दर्पण का प्रयोग किसलिए करते है? तो आपका उत्तर वही होगा जो मैं सोच रहा, सही भी है, लेकिन उस उत्तर को एक बार और पढ़िए और समझिये और कुरेद के उसके भीतर के असल अर्थ को समझिये।

दर्पण निर्जीव नही बल्कि वो एक जीवंत वस्तु है जो आपको भविष्य के लिए आत्मविश्वास देती है और आपके भूत के अनुभवों से आपको सीख लेने के लिए अग्रसर करती है।

अब आप कहेंगें की तुम्हारे मालिक कहना क्या चाहते हैं? धैर्य रखें, सब समझाता हूँ।

मान लीजिए आप जब बाहर जाते हैं तो कई बार खुदको दर्पण में निहारते हैं, देखते हैं कही चेहरे पे कुछ लगा तो नही है, बाल सही हैं ना, दाँतों में कुछ फँसा तो नहीं है वगैरह वगैरह।

और जब संतुष्ट हो जाते हैं तो आपका आत्मविश्वास भी बढ़ जाता है, ऐसा लगता है मानो दर्पण खुद आपसे कह रहा हो "जाओ यार, बहुत हो गया, कितनी बार खुदको देखोगे, मस्त एकदम रापचीक तो लग रहे हो"।

क्यों, सही कहा ना मैंने?

लेकिन अगर ऊपर वाली परिस्थिति के बाद इसके विपरीत किसी परिस्थिति की चर्चा दर्पण के परिपेक्ष्य में की जाए तो?

चलिये वो भी देखते हैं।

जीवन में कभी न कभी तो आप से कोई भूल ज़रूर हुई होगी (मेरे मालिक से भी बहुत सी हुई हैं) और आपको उसका पछतावा भी होता होगा।

और जब उस पश्चाताप की इच्छा से आप खुदको दर्पण में देखते हैं तो कैसा लगता है?

बेशक शर्मिंदगी महसूस होती होगी, उस काले भूत को मिटाने की सनक उत्पन्न होती होगी, मानो वो दर्पण आपसे कह रहा हो कि "क्यों शर्मिंदा हो! तुमने काम ही ऐसा किया है, अब पश्चाताप करो"।

दर्पण आपको आपके उन सभी कृत्यों से रूबरू कराता है जो आपने अपने भूत में किये होंगे। मानव जीवन में एक ऐसा इंसान ज़रूरी होता है जो आपको आपकी अच्छाइयों के साथ-साथ आपको आपकी कमियों से भी रूबरू कराये लेकिन सबके जीवन मे ऐसा इंसान मिलना मुश्किल होता है। शायद इसीलिए ईश्वर ने दर्पण की रचना की होगी। क्योंकि ये दर्पण ही है जो सभी के पास होता है और सबके साथ होता है, हर परिस्थिति में।

दर्पण आपको वो हर बातें, आलोचनायें, चुगलखोरी आदि दिखाएगा जो दुनिया वाले आपके लिएकर रहे हैं। और दर्पण ये सब आपको नीचा दिखाने के लिए नही बल्कि आपको धरातल से ऊँचा उठाने के लिए करता है ताकि आप आलोचना को शक्ति में परिवर्तित कर सकें।

अभी हाल में ही मेरे मालिक ने स्वामी विवेकानंद के विचारों पर आधारित स्वामी श्रीकांतानंद द्वारा लिखी गई एक पुस्तक 'यूथ अराइज़ अवेक ऐंड नो योर स्ट्रैंथ' पढ़ी।

जिसमें उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी द्वारा कही गयी एक कमाल की बात पढ़ी हालांकि वो किताब अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गयी है लेकिन मैं यहाँ उसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत कर देता हूँ

(अब यही तो मेरा काम है)

"मनुष्य त्रुटि से सत्य की ओर नहीं, बल्कि निम्न सत्य से उच्च सत्य की ओर यात्रा करता है। मानव जन्म की सुंदरता यह है कि हमने जो किया है उसे हम पूर्ववत कर सकते हैं"।

अब शायद इस कथन का आशय स्पष्ट करने की आवश्यकता तो नहीं होगी क्योंकि इतने समझदार तो आप लोग हैं ही। अब जैसा कि आपने पढ़ा, इस कथन में साफ-साफ कहा गया है कि मानव जीवन में आप अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं,

इसके लिए बस आपके अंदरपश्चाताप की भावना होनी चाहिए। और इस पश्चाताप की लौ को आपके अन्दर जागृत करने काकार्य करता है ये दर्पण।

अब दर्पण की इतनी चर्चा करने के बाद मानो ऐसा लग रहा है जैसे दर्पण कवि हरिवंश राय बच्चन की उन चार पंक्तियों को पढ़ रहा है जो कुछ इस प्रकार हैं-

आओ अपनी लघुता जानें अपनी निर्बलता पहचानें, जैसा जग रहता आया है, उसी तरह से रहना होगा साथी सब कुछ सहना होगा।

आओ अपनी लघुता जानें
अपनी निर्बलता पहचानें,
जैसा जग रहता आया है,
उसी तरह से रहना होगा
साथी सब कुछ सहना होगा।

अब शायद कही न कही चीज़ें आपको समझ आने लगी होंगी। हालांकि मेरे मालिक की बातों और उनको समझना कोई आसान काम नहीं, फिर भी अगर आप समझ गए हों तो समझ जाइये आप ज्ञानी हैं और अगर नही समझे तो दुबारा पढ़कर समझने का प्रयास करिए। और हाँ, एक बात और, ये सब लिखकर मेरे मालिक लेखक बनने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, ये तो बस उनका एक शौक है। अब उनकी सारी बातें मैं ही जानता हूँ इसीलिए उनकी इस टिप्पणी को आपके समक्ष भी मैं ही प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैं मेरे मालिक की कलम

हँसते-हँसते

पाना मुश्किल था खोने से
तो खो दिया हँसते-हँसते,
ज़ालिम आँखें ले रोक ना तुझको
तो रो दिया हँसते-हँसते l

कौन सा रोका होता तो
रुक जाती तू यादों-सी,
रुकना तेरी फ़ितरत ना,
तू आज़ाद बरसातों-सी।
एक सफर है कर ले चाहे,
अलग तू जितने भी रस्ते,
पाना मुश्किल था खोने से,
तो खो दिया हँसते-हँसतेl

भले पीछे चलते-चलते दो बार लड़खड़ाया था,
तुझे याद नहीं शायद, पर मैंने हाथ बढ़ाया था,
मेरे तपन के सूर्य से पूरे विश्व में सवेरा था,
हाय! तू देखती भी कैसे, तेरी आँखों में तो अंधेरा था।
होंठ पे आके लौट गई जो,
हम ने दम तोड़ा तरसते,
पाना मुश्किल था खोने से,
तो खो दिया हँसते-हँसतेl

आज नशे को मात दे दिया
तेरी यादों के मदिरालय ने,
साकी रो रही साथ में,
मेरे कल्पित खयालों में।
पर आने दिया ना आज भी मैंने,
उस साकी को पास मेरे,
जो जगह थी तेरी, सदा रहेगी,
तू रहे, ना रहे पास मेरे।
छिल गई सारी अंगुलियाँ,
मोह डोर कसते-कसते,
पाना मुश्किल था खोने से,
तो खो दिया हँसते-हँसतेl

दो दिन हुए थे मिलके ही,
बोलो मैं कितना बोलता,
पर हर वाणी में असर था तेरा,
जब भी मैं मुँह खोलता।
खींच के ख़्वाबों से काँधे पे लाके तुझे बिठाया था,
,

मन में तो कब के एक हुए थे, बस मुख से ना बताया था
यही मलाल ले लाँघ रहा हूँ, संताप की सारी सीमायें,
बसंत में हलंत बन ,विष रुत-सा तुम क्यों आए?
विष तुझमें इतना है तो
जाती जा डसते-डसते,
पाना मुश्किल था खोने से
तो खो दिया हँसते-हँसतेl

बन कहाँ पाया तेरे बालों का गुलाब?
बन भी ना पाया तेरे दिल का ख़्वाब,
ना साथ किस्सा हुआ, ना तेरा हिस्सा हुआ
मैं हुआ भी तो रक़ीब का शीशा हुआ!

तू होती हवाएँ तो उड़ तुझमें जाता,
रास्ता तू होती तो मुड़ तुझमें जाता,
बह तुझमें जाता जो होती समय तू,
सबसे पहले मैं मरता अगर बनती प्रलय तू।
कि मरते-मरते प्राण भी मेरा
जाए तुझमें बसते-बसते,
पाना मुश्किल था खोने से
तो खो दिया हँसते-हँसते।

निकलोगे कही तुम सँवरकर कभी,
ले हाथ गैर का हाथों में,
मरघट पर मेरी राख हँसेगी
मेरे ऐसे हालातों में।
मन उलझन में मात के मितवा
मौत माधुरी पाएगा,
मरने को पर बचेगा क्या?
पहले ही मर जाएगा।

वो हाथों को ले हाथों में, करना पार था दरिया जी,
उन हाथों को हार बना, घूमे संग गैर बावरिया जी,
आज नही तो कल को शायद बारी मेरी आ जाए,
दुआ जो कैद बादलों में घर ख़ुदा का पा जाए।
या खोज ख़ुदा ले मुझको आके
या काल ही मुझको खा जाए,
कब्र पे मेरे आए वो,
उसके नाम मेरे गुलदस्ते,
पाना मुश्किल था खोने से
तो खो दिया हँसते-हँसते।

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष) कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

बेरंगा इंद्रधनुष

रंग नही ला पाता सवेरा, चारों पहर बेरंगा है,
धुंधली लागे नियति इनकी, या नसीब से पंगा है,
खूब चमकते हैं वह सितारे, आसमान पर छाते हैं,
अनदेखे रह जाते हैं कुछ, रो कर भी ना कह पाते हैं।

तरंगे जहाँ से निकल रही है, सुखी को भी रुलाने की,
आँसू में खुद के डूब न जाना, समय है कथा दिखाने की,
यह बात नही है बरसों की, होगी बस कल या परसों की,
ठाकुर का आलीशान बागान है, फसल लगी है सरसों की।
कुछ देर चल कर वहाँ से, पीड़ा में कोई रोयेगा,
आगाज़ होगा निठुरता का अब, इंसानियत सोएगा।

सूखे पड़े हैं बर्तन ऐसे, मिला न हो सदियों से दाना,
चूल्हा ऐसे खंडित है, फूँका ना हो वर्षो से खाना,
लेटा हुआ है वहाँ पर कोई, महिला ज्ञात पड़ती है,
कराह रही है, गिरी पड़ी, जीतेजी वह सड़ती हैI
थाम के दरिया आँखों का, बगल में कोई रोता है,
नन्हा-मुन्हा बच्चा ये, उस स्त्री का संतान इकलौता है,
गोल-मटोल पर आँखें नम, कमज़ोर सा पूरा तन है।

बोल नही पाता है कुछ भी पर, समझ सब कुछ जाता है,
बिन बोले कैसे यह बच्चा देखो, अपनी गृह स्थिति बताता है,
आया कोरोना कुछ दिन पहले, पिताजी बेरोजगार हुए,
मुंबई से गाँव आते-आते, कितनों के कर्ज़दार हुए
लाला भी राशन ना देता बिन कमाए नोट,
मदद मूर्ति से माँगते-माँगते सूख गए माँ के होठ।

दो वक्त की रोटी चल जाती थी, घर-घर बर्तन घिसने से,
रुका सिलसिला यह भी जब, चोट लगी माँ को चक्की पीसने से,
तीन दिनों से खाया ना हमने कुछ भी खाना था,
व्याकुल हो उठे पापा, पिता का धर्म निभाना था,
तुरंत बाँध कर सामान अपना, बाबूजी तैयार हुए,
शहर जा रही मालगाड़ी पर, वह सवार हुए।

आशा थी कि ढेर सारे पैसे पापा लेकर आयेंगे,
पहले की तरह खुशी-खुशी हम हलवा पूरी खायेंगे,
सेठ बनकर सिंघाड़े इमरती मैं उड़ाऊँगा,
फिर से पहले की तरह, तीनों वक्त का खाना खाऊँगा।

यही सोचकर मन में ही, बैठे महसूस कर रहा था,
क्या पता था, एक खबर हवा के रस्ते आ रहा था,
आग लगी कारखाने में, पापा जहाँ कमाते थे,
फिर खुला ना रास्ता वो कभी, पापा जहाँ से आते थे,
बैठे-बैठे बिन धमाके, नष्ट हुआ संसार हमारा,
पहाड़ ना टूटा दुखों का, गिर गया आसमान सारा।

जीवन पर आफत आई है, सोने से भी महंगी ब्याज साहूकार ने लगाई है,
स्वाद के लिए अब खाना ना था, खाना जीने की दवाई है,
चोटिल माँ कमा ना पाती थी, उम्र मेरी भी छोटी,
देखने को तरस जाते थे, बस एक वक्त की रोटी।

लगी थी चोट पेड़ से गिरकर, माँ को नही बताया था,
पता नही जग लेखक के पास, अभी कितना उधार बकाया था,
बिन खाए हफ्तों तक सिर्फ, पानी पर चलता रहा गुजारा,
क्या पता क्या शक्ति थी मुझ में, गर्म हुआ माँ का शरीर सारा,
लगा बुखार पैसे लगते हजार, एक रुपए नही थे खाने को,
सोच भी नही सकते थे, डॉक्टर से दिखलाने को।

हुआ कोरोना लगता सब को, रहते थे सब हमसे दूर,
अकेले में सड़ने को, हो गए हम दोनों मजबूर|
इतना बस कहते-कहते बच्चा, डूबा अश्रु दरिया में,
एक चीख बस देकर आखिरी, माँ गई देव नगरिया में।

क्या होगा उस बच्चे का अब, इस भौतिक समाज में?
गरीब का जहाँ पर खून है पानी, अमीरों के इस राज में,
अगली बार बस, एक गरीब को करने से पहले रवाना,
सोच लेना तेरे कुछ सिक्के, दे सकता है उसे एक वक़्त का खाना।

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष) कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

A Marvel Out of Your Misery

There's a void brewing in my heart
I can sense, I can see
But I cannot feel, I don't know what to feel.
Uncertainty and anonymity, my old friends have a strong hold
on me
Has my life always been this uneasy?

There's a lump in my throat
I can breathe and I can surely eat
But this air is foreign and the food is making me queasy.

They nudge me to speak
I try but I cannot talk, a bit inconvenient this seems.
I understand them but there appears to be a misunderstand-
ing about me
I resign, wondering if the world around me is holding back a silent
scream
I try to shout at them but it comes out as a heave
I quickly realize my voice has left me; all the sound of this world
tucked
somewhere far out of my reach.

This can't be me
My body is an empty box
This life is alien to me.

A Marvel Out of Your Misery

I pick up my pen and fumble
Confusion envelops me
I cannot write; words look like numbers
Poems I used to create, now I can't read
Letters with no string, my brain and I are no longer linked.

How much longer could I now live?
Foggy thoughts cloud my vision as I try to make decisions
All sense, all meaning has vanished in thin air
Life and death are a dramatic pair.

Now what purpose could a broken human like me serve?
Perhaps something still – I thought as they thrust a brush into my hand
My last reprieve!

I guide my hands or perhaps they guide me
And I scribble and scratch, stroke and swipe, splatter and stipple
I circle – I can make circles, I beam
Triangles bring me fleeting joy and then I'm stuck again with shapes I can no longer name and stars I cannot complete.

My mind is drowning or torturing me with a will of its own
I torture it back, finishing the scenery before me
Shapes... something green...sky...books...music notes... sand...withering heart...wilting mind...hands...war...waffles...windows...and ice cream.

A Marvel Out of Your Misery

Making sense all at once and then nothing at all
A magical painting, they call it.
An exceptional work of art or a surprisingly working mind?
Black and white life; coloured thoughts – a breathing painting
Cheering, awing, gaping, gasping, crying
They say it's a masterpiece!

I wouldn't know but I still try to fathom the unfathomable life in the painting
The life they now see
The life I lived as a waste of a human being
Who cannot feel but see
Who can hear but not scream
Me – a voice without a voice
Words fail me but my art speaks
That is the beauty of the mind, they say; revealed by the testimony of a brush and a beautiful canvas sheet
I, who cannot talk or write but my message has touched the hearts of those around me.

Message to be blind and still see
To be deaf and still hear
To be mute and still speak
To not feel and still stay in touch
To not smell and still breathe
To lose all and still not give up
To live and be free or to be free and live
To create a marvel out of your misery!

Priya Pandey
B. Sc. (H) Botany
I Year

Potential of AI in College Education

Revolutionizing Learning for the Future

Artificial Intelligence (AI) is disrupting industries around the world and the education industry is no exception. Colleges and educational institutes are facing the challenge of adapting to a fast-changing world. AI stands at the very peak of innovation, offering ideas and solutions that help in enhanced and personalised learning and support students and educators in the same manner. In this article, we have tried to explore the potential of AI in revolutionizing college education and how it is shaping the future of learning.

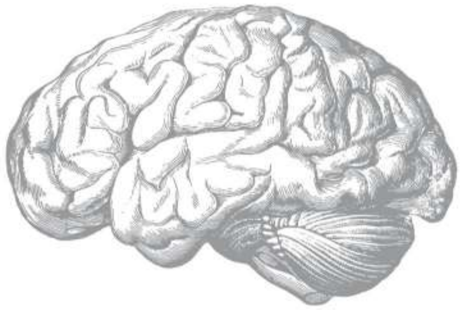

Personalized Learning at Scale

One of the most significant contributions of AI to college education is the ability to provide personalized learning experiences. In traditional classrooms, it is difficult for educators to consider the diverse learning styles and pace of individual students. AI-powered systems are able to analyse a student's learning habits and performance in real-time and in turn offer customized resources and recommendations best suited for the student.

For example, adaptive learning platforms can adjust the difficulty of course content based on a student's progress, ensuring that they are neither overwhelmed nor under-challenged. This helps students to master concepts at their own speed, which is particularly valuable in subjects like Mathematics and Computer and Science, where foundational knowledge is crucial.

Enhancing Teaching Efficiency

AI is not only transforming the student experience but also enhancing teaching efficiency. Administrative tasks such as grading, attendance tracking and responding to routine queries consume a considerable amount of the educators' time. AI-driven systems can automate these tasks, helping educators to focus on more critical aspects of teaching, such as mentoring and providing personalized feedback.

Potential of AI in College Education

Revolutionizing Learning for the Future

For example, AI-powered grading systems can evaluate multiple-choice tests, short answers, and even tests and evaluation conducted in a computer environment, using algorithms to assess the accuracy of the content as well as grammatical quality. These systems can also identify patterns in students' responses to highlight common areas of difficulty, allowing educators to adjust their teaching strategies accordingly.

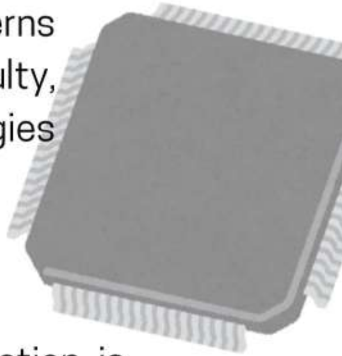

Predictive Analytics for Student Success

Another groundbreaking application of AI in college education is predictive analytics. AI systems can analyse student data-such as attendance, engagement in online platforms, assignment submissions, and test scores, to predict academic outcomes.

By identifying students who are at risk of falling behind or dropping out, colleges can offer timely interventions, such as counselling, tutoring, or additional support. This data-driven approach has the potential to significantly improve student retention rates.

AI-Enhanced Course Development

The rise of AI is also enabling educators to develop more effective courses. AI algorithms can analyse vast amounts of educational data, identifying what works best for student engagement and learning outcomes. This insight allows educators to refine their course content, structure, and delivery methods.

Potential of AI in College Education

Revolutionizing Learning for the Future

Moreover, AI can assist in designing virtual and augmented reality environments that simulate real-world scenarios for hands-on learning experiences in fields like medicine, engineering, and business. These immersive learning environments are transforming theoretical knowledge into practical skills, making graduates better prepared for the workforce.

Challenges and Ethical Considerations

Despite its numerous advantages, the integration of AI in college education comes with challenges. Data privacy is a primary concern as AI systems rely on collecting and analysing large amounts of personal data. It is crucial for institutions to ensure that student data is handled ethically and securely.

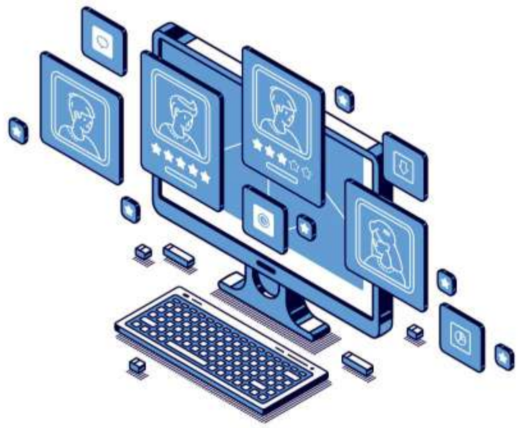

Additionally, there is the question of whether AI will replace human educators. While AI can augment teaching, it cannot replicate the empathy, mentorship and creative problem-solving that human educators provide. The ideal approach lies in finding a balance where AI supports, rather than replaces, the essential human elements of education.

Potential of AI in College Education

Revolutionizing Learning for the Future

As AI continues to advance, its role in college education will likely expand. In the near future, we can expect AI-powered systems to play a key role in lifelong learning, offering tailored education and reskilling opportunities to individuals at different stages of their careers. AI will also likely enhance global education by bridging language barriers through real-time translation tools and making quality education accessible to remote and underserved populations.

The integration of AI in college education is not just about efficiency, it's about creating more inclusive, personalized and engaging learning environments. By accepting the potential of AI, colleges can prepare students for the challenges and opportunities of the future, equipping them with the skills needed to thrive in an AI-driven world.

Dr. Chandra Kanta Samal
Associate Professor
Department of Computer Science

Dr Mehtab Alam
Guest Faculty
Hindi

चुप्पी

कुछ ना कहकर भी, बहुत कुछ कह गई,
ये चुप्पी तुम्हारी, सब हाल कह गई।

ना आवाज़ तुमने की, ना एक लफ्ज़ मैंने कहा,
तेरी नजरें कर गयी, इस दिल का हाल बयाँ।

ना तुम कुछ कह सकी, ना मैं कुछ कह पाया,
ना कोई इशारा तुमने किया, ना मैं इशारे से कुछ कह पाया।

ना तार दिया कोई तुमने, ना मुझे कोई खत मिला,
मैं फिर भी वो कहानियाँ सारी, तेरे चेहरे पर पढ़ आया।

ना कोई आहट हुई, ना कोई शोर हुआ,
ना जाने फिर कैसे, आज ये दिल चूर-चूर हुआ।

ना शब्द बचे तुम पर, ना शब्द बचे हम पर,
फिर भी इन नज़रों से, ना जाने आज ये गुफ्तगू
किस कदर हुई।

ना तेरी इन पलकों पर तूने कोई मोती आने दिए,
ना हमनें उन मोतियों के लिए, कोई तार बना कर दिए।

ना मैं शायर कोई, ना तुम शायरा कोई,
फिर इस दिल में ना जानें, आज ये गज़लें कैसे जग आयी!

ना अलविदा तुझसे कहा गया, ना अलविदा हम कह पाए,
फिर भी न जानें कैसे, आज उस राह पर एक दूजे का हाथ
कैसे छोड़ आए!

ना तुमने एक बार भी पलट के देखा हमें,
ना हम तेरे दीदार के लिए एक बार पलट पाए,
आखिर क्यों, अपने सारे किस्से कहानी उस दिन,
हम दोनों उस राह पर ही छोड़ आए।

आयूष सैन
बी. एससी. (विशेष) वनस्पति विज्ञान
प्रथम वर्ष

मेरी माँ

कि सीने में दफ़न मेरे ये घाव
आज स्याही से बयाँ कर पाउँगी क्या?
मेरी माँ, मैं तेरे जाने के गम को भुला पाऊँगी क्या?

पीड़ा से फटता है अब मन मेरा,
मेरे ज़ख्मों पर अब मरहम लगाने वाला कोई नहीं।
क्या मैं मेरे मन के घाव अब वापस बुन पाऊँगी क्या?
मेरी माँ, मैं तेरे जाने के गम को भूल पाऊँगी क्या?

दिल के टुकड़े हैं अब बिखरे,
चुनने वाला अब कोई नही।
क्या वापस खुद को मैं समेट पाऊँगी क्या?
मेरी माँ, मैं तेरे जाने के गम को भुला पाऊँगी क्या?

जब शब्द में दर्द घुल कर भी यूँ कंठ के अंदर सिमटा हो,
जब कहने को यूँ लब मेरे बेबस हों,
और सुनने वाला अब कोई न हो।
क्या मैं मेरे मौन में सिमटी चीखें सह पाऊँगी क्या?
मेरी माँ, मैं तेरे जाने के गम को भुला पाऊँगी क्या?

आदर पाना है नदियों सा तो पहाड़ मुझे अब छोड़ने होंगे,
राहों के इन कंकड़ को पायल समझ पहन पाऊँगी क्या?
मेरी माँ, मैं तेरे जाने के गम को भुला पाऊँगी क्या?

सिमरन शर्मा
बी. एससी. (विशेष) वनस्पति विज्ञान
प्रथम वर्ष

विकसित भारत के लक्ष्य, चुनौतियाँ और संभावनाएँ

एक ऐसे भारत का निर्माण, जहाँ गरीबी, अशिक्षा, असमानता, और बेरोजगारी की जगह समृद्धि, शांति और विकास हो, यह हर भारतीय का सपना है। हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 2047 तक भारत को 'विकसित राष्ट्र' बनाने का आह्वान किया गया, जिसका लक्ष्य भारतीय स्वतंत्रता की शताब्दी दिवस तक भारत को विकसित बनाना है। विकसित भारत का तात्पर्य केवल आर्थिक समृद्धि से नही है, बल्कि हर क्षेत्र में संतुलित प्रगति से है, तात्पर्य है आर्थिक सशक्तिकरण से, शिक्षा और कौशल विकास से, सामाजिक न्याय और समानता से, कुरीतियाँ मुक्त समाज से, सुदृढ़ स्वास्थ्य सेवा से, प्रदूषण मुक्त पर्यावरण से, स्वच्छ ऊर्जा और टिकाऊ विकास से और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर मजबूत व प्रभावशाली नेतृत्व से।

स्वच्छता, सम्पन्नता और समानता से परिचित भारत,
कर्मठता, कुशलता और परिपक्वता से सिंचित भारत,
मानवता, उदारता और प्रसन्नता से निहित भारत।
दुराचार, भ्रष्टाचार और रूढ़िवादिता से रहित भारत,
ज्ञान, विज्ञान और तकनीकों से प्रफुल्लित भारत,
प्रेम, आदर और आशीर्वाद से फलित भारत।
है लक्ष्य हमारा विकसित भारत।

भारत ने अपने स्वतंत्रता के 77 वर्षों में निःसंदेह तरक्की की है, तमाम विपरीत परिस्थितियों को भेदते हुए आज विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है, लेकिन विकसित होने का सपना अभी अधूरा है, क्योंकि आज भी आर्थिक असमानता एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है। देश की संपत्ति का बड़ा हिस्सा मुट्ठीभर लोगों के पास केंद्रित है, जबकि बड़ी आबादी आज भी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है। गाँवों और शहरों के बीच भी विकास का भारी अंतर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत ने परचम लहराया है लेकिन वर्तमान में भारत की शिक्षा प्रणाली में कई खामियाँ हैं, जैसे प्रैक्टिकल ज्ञान की कमी और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव। युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और रोजगार-योग्य कौशल प्रदान करना बेहद ज़रूरी है। ज़रूरी है कि शिक्षण संस्थानों को सुचारू रूप से चलाया जाए, योग्य व कर्मठ शिक्षकों की नियुक्ति की जाए, शिक्षण संस्थानों को समय से वित्तीय सहयोग प्रदान की जाए। शिक्षा प्रणाली में सुधार करना एक बड़ी चुनौती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने कुछ नए बदलाव लाने का प्रयास किया है, लेकिन इसका प्रभाव पूरी तरह दिखने में समय लगेगा।

स्वास्थ्य जगत में भी भारत दुनिया के अग्रिम देशों में है, भारत की स्वास्थ्य संस्थायें अपना दबदबा कायम कर रही हैं, पर कोविड-19 महामारी ने भारत की स्वास्थ्य प्रणाली में मौजूद खामियों को उजागर कर दिया। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के साथ रोजगार के अवसर पैदा करना एक कठिन कार्य है। हालाँकि स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा मिला है, लेकिन संगठित क्षेत्र में रोजगार की कमी अब भी चिंता का विषय है। देश की युवा जनसंख्या को सही दिशा में उपयोग करना 'डेमोग्राफिक डिविडेंड' का लाभ उठाने के लिए जरूरी है।

भारत बुनियादी ढाँचों के विकास में काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है, लेकिन हाल ही में देखे गए ढाँचों का गिरना और कम टिकाऊ होना चिंताजनक है। विकसित राष्ट्र बनने के लिए सुदृढ़ बुनियादी ढाँचा जरूरी है। इसमें सड़क, रेल, बंदरगाह, बिजली और इंटरनेट कनेक्टिविटी शामिल हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे की कमी विकास की गति को धीमी कर सकती है।

सरकार ने प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना और स्मार्ट सिटी मिशन जैसे कदम उठाए हैं, लेकिन अब भी लंबा रास्ता तय करना बाकी है। ज़रूरी है कि ढाँचों का निर्माण भ्रष्टाचार मुक्त रूप से हो, टिकाऊ ढाँचे बने और साथ ही सतत् विकास के उद्देश्यों के खिलाफ न हो।

भारत ऋतुओं का राजा है। विभिन्न ऋतुयें भारत के पर्यावरण को अनुकुल बनाती है, परन्तु बढ़ते शहरीकरण ने पर्यावरण को खतरे में डाल दिया है। ऐसे में 2047 तक भारत शायद विकसित तो हो जाएगा लेकिन रहने लायक नहीं रह जाएगा। इसीलिए जरूरी है कि विकास के साथ-साथ पर्यावरण की सुरक्षा का विशेष रूप से ध्यान रखा जाए। बढ़ते प्रदूषण, वनों की कटाई, और जलवायु परिवर्तन से निपटना आवश्यक है। टिकाऊ विकास के लिए स्वच्छ ऊर्जा के स्रोतों को अपनाना जरूरी है। भारत शुरू से ही भ्रष्टाचार व अनियमितता का शिकार रहा है।

कई विकास कार्य सिर्फ और सिर्फ भ्रष्टाचार व अनियमितता की वजह से ठप या देर से होते हैं। किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी शासन-व्यवस्था पर निर्भर करता है। भारत में अभी भी भ्रष्टाचार एक बड़ा मुद्दा है, जो विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा डालता है। पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासनिक तंत्र स्थापित करना बेहद ज़रूरी है | इसके लिए ज़रूरी है नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने की, त्वरित व कठोर कार्यवाही करने वाली कानून व्यवस्था की।

भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में बसती है, ऐसे में ग्रामीण विकास के बिना विकसित भारत की परिकल्पना अधूरी है। बीते कुछ दशकों में ग्रामीण संकट देखा जा सकता है, ऐसे में ग्रामीण संकटों पर विशेष रूप से अध्ययन कर नीति निर्माण व उसके क्रियान्वयन पर जोड़ दिया जाये। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रायोगिक व कौशल प्रदान करने वाली शिक्षा, कृषि संबंधी शिक्षा एवं शोध को बढ़ाने की जरूरत है। जलवायु परिवर्तन से आए दिन बिगड़ती कृषि व कृषि संबंधित व्यवसायों की हालत चिंताजनक है, ग्रामीण उद्योगों की भी हालत गंभीर है, ग्रामीण विकास ठप-सा हो गया है, लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, जिससे शहरी जनसुविधायें भी अस्त-व्यस्त हो गई हैं, ऐसे में जरूरत है कि ग्रामीण व्यवसायों को बढ़ावा दिया जाए, ग्रामीण क्षेत्रों में जनसुविधाएँ सुदृढ़ की जाए। ग्रामीण विकास पर ध्यान दिए बिना विकसित भारत का सपना देखना एक कोरी कल्पना है।

भारत में डिजिटल इंडिया अभियान और तकनीकी विकास ने देश के विभिन्न हिस्सों में इंटरनेट और तकनीक की पहुँच को बढ़ाया है।

स्टार्टअप्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसी नई तकनीकों से रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। यदि इस प्रौद्योगिकी का सही उपयोग किया जाए, तो यह भारत को वैश्विक तकनीकी हब बना सकता है। भारत में स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया। युवाओं में उद्यमिता को प्रोत्साहित कर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं। आत्मनिर्भर भारत का सपना तभी साकार होगा जब स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। भारत सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को तेजी से अपना रहा है। ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ यह पर्यावरण को सुरक्षित रखने में भी मदद करेगा। इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA) के नेतृत्व से भारत वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान मजबूत कर रहा है। भारत की कूटनीति और वैश्विक मंचों पर बढ़ती भागीदारी भविष्य में देश को एक महत्वपूर्ण भूमिका में ला सकती है। G20 की अध्यक्षता और संयुक्त राष्ट्र में सक्रिय भूमिका से भारत ने अपनी साख मजबूत की है। एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सहयोग को और बढ़ावा देना जरूरी है। महिलाओं की भागीदारी के बिना विकास अधूरा है। हाल के वर्षों में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता में भागीदारी बढ़ी है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'स्टैंड अप इंडिया' जैसी योजनाएँ इस दिशा में अहम भूमिका निभा रही हैं।

भारत की वर्तमान विकास की गति और नीति को देखते ये तो साफ है कि 2047 तक विकसित होने से कोई नही रोक सकता, लेकिन इस विकास की गति के साथ जिस गति से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा है, हवा पानी दूषित हो रहे हैं, वो भारत के भविष्य के लिए खौफ़नाक है। यही समय है कि हम अपनी कार्य प्रणाली में बदलाव लायें, हमारे हर विकास का क्रियाकलाप सतत् विकास के पैमाने पर सही होना चाहिए। विकास के इस भाग दौड़ में कही ऐसा न हो कि मानवता भूल जाए, कही ऐसा न हो कि हम प्रकृति को नजरअंदाज कर दें। 2047 का विकसित भारत केवल एक सपना नहीं है, बल्कि यह हमारी सामूहिक आकांक्षाओं और मेहनत का परिणाम होगा। यदि हम सही दिशा में प्रयास करें और हर चुनौती का डटकर सामना करें, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में विश्व मंच पर गर्व से खड़ा होगा।

उज्जवल कुमार
बी. एससी.(विशेष) जैवचिकित्सा विज्ञान
तृतीय वर्ष

मैं उस ख़ूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ

आज वक्त से गुज़ारिश है, ज़रा ठहर जा, उसे पढ़ लेने दो,
बड़ी मुश्किलों से मिली कश्मकश में मुझे, गहराइयों से उसे समझ लेने दो,
मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ, ज़रा उसे पढ़ लेने दो।

मेरे जीवन का प्रारूप है हर शब्द, सुख-दुःख और मेरी मुस्कान छिपी है इसमें,
दो पल ज़रा हँस लेने दो,
मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ, ज़रा उसे पढ़ लेने दो।

एक अनजान-सी डगर थी, और अनजाने थे सारे लोग,
भर कर लाया था सपने हजार, जो संजोये थे मैंने हर बार, उसे आज पूरा कर लेने दो,
मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ, ज़रा उसे पढ़ लेने दो।

मेरी भोली-सी सूरत, नटखट-सी सीरत,
ढेर सारी खुशियों का गोदाम हूँ मैं, मेरा नाम है मिस्टर पन्ना, आज सब जप लेने दो,
मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ, ज़रा उसे पढ़ लेने दो।

लगता है सब बस कल की ही बात है पर बीत गए कई साल,
पढ़ते–पढ़ते आया नहीं कभी आपसे मिलकर बिछड़ जाने का कोई बुरा ख्याल,
आज सब कुछ बयाँ कर लेने दो,
मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ, ज़रा उसे पढ़ लेने दो।

ऐ वक्त, रुक जा ज़रा, मुझे आज सब कुछ संजो लेने द,
मुझे मेरे दोस्तों से मिलकर, विदा लेने दो, कुछ और हँसी के पल बिता लेने दो।
मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ, ज़रा उसे पढ़ लेने दो।

पर अब पन्ना पलट लेने दो, मुझे आगे बढ़ने दो,
नम आँखों से कहा, मुझे अपनी सारी कहानी कह लेने दो।
मैं उस खूबसूरत किताब का एक पन्ना हूँ, ज़रा उसे पढ़ लेने दो।

डॉ. अंबिका
सहायक प्राध्यापिका
भौतिकी विभाग

Rape Culture Revisited:

How Recent Scandals Are Shaping the Fight for Justice

The fight against rape culture in India has come into sharp focus in the wake of a slew of incidents in recent times which have exposed the dark underbelly of the society's attitude towards women. These scandals have brought to the forefront not only the grim realities of living as a woman in India but also the systemic failures that perpetuate this sexual violence. The challenges faced by women are both acute and multidimensional and without urgent and deep-seated change, their future is precariously threatened.

The Reality of Rape Culture in India

Rape culture is deeply embedded in Indian society and affects millions of women every day. It is a culture that normalizes misogyny, victim-blaming and allows the protection of women to fall short most of the times. Scandals in recent times underline how shockingly women face up to the reality. To mention a few, for instance, the Nirbhaya gang rape in 2012, though it brought some legal reforms, showed how delays and inefficiencies are packed in the justice delivery system. Unfortunately, this did not work out as a solution. The unabated incidents of sexual violence continue to stupefy the nation and understate the magnitude of the problem.

Rape Culture Revisited:

How Recent Scandals Are Shaping the Fight for Justice

Women are forced to navigate a world where the threat of personal safety is invariably compromised. In a culture of impunity over sexual violence, rarely are perpetrators prosecuted, while survivors bear the brunt of stigma, lack of support, and an inefficient legal process. These systemic shortcomings contribute to an atmosphere where women are systematically disempowered and their cries for justice are frequently ignored or undermined

Recent Scandals and their Consequences

Recent scandals have brought into sharp focus the challenges faced by women in India. Whether it is the gang rape of a young woman in a bustling city or the brutal assault on another in a locality considered safe, each incident presents a grim picture of a society that is failing its women. These cases are not isolated but part of a larger pattern of violence so intrinsic to both societal attitudes and institutional failures. As always, these incidents of violence against women have provoked protests and outcry from the public, demanding justice. The response, however, has been lukewarm in most cases. The need for legal reforms have been urgently felt but the efforts in this direction have been slow and grossly inadequate to stem the root cause of the problem. For instance, though the introduction of stringent laws and fast-track courts is a welcome move, yet it has failed to make much difference in the daily life as far as women are concerned.

Rape Culture Revisited:

How Recent Scandals Are Shaping the Fight for Justice

Furthermore, societal reactions to these incidents tend to dramatize the cases rather than stress on the long-term solution. Media reporting is often transient; very little reporting is done on legal follow-up and survivor support. All this adds to a feeling of helplessness in women's mind and points to the need for an integrated struggle against rape culture.

The Future at Risk

If these structural aspects are not resolved, the future will remain precariously insecure for women in India. The perpetuation of rape culture stands to dent the perceived progress in gender parity and human rights. Normalization of violence and trivialization of women's experiences culminate in making women's lives precarious. This calls for urgent change from all avenues of government, judicial, and societal levels if it is not to be a harbinger of worse times ahead. A change that must be brought about in the legal system has to be an assurance of speedy and appropriate justice to survivors. Changes in the societal mindset about women and sexual violence need to make a shift towards a culture of respect and accountability.

Rape Culture Revisited:

How Recent Scandals Are haping the Fight for Jus

Awareness programmes should be carried out with the purpose of challenging the sense of misogyny in the younger generation to attain equality between the sexes. It is time that society comes forward, amidst these issues, to embrace a profound change and strive for a future wherein women can live free from the shadow of violence and fear. Without this change in place, the future of women in India will remain at grave risk and justice will be an uphill battle.

Siya Gupta
B. Sc. (H) Zoology
II Year

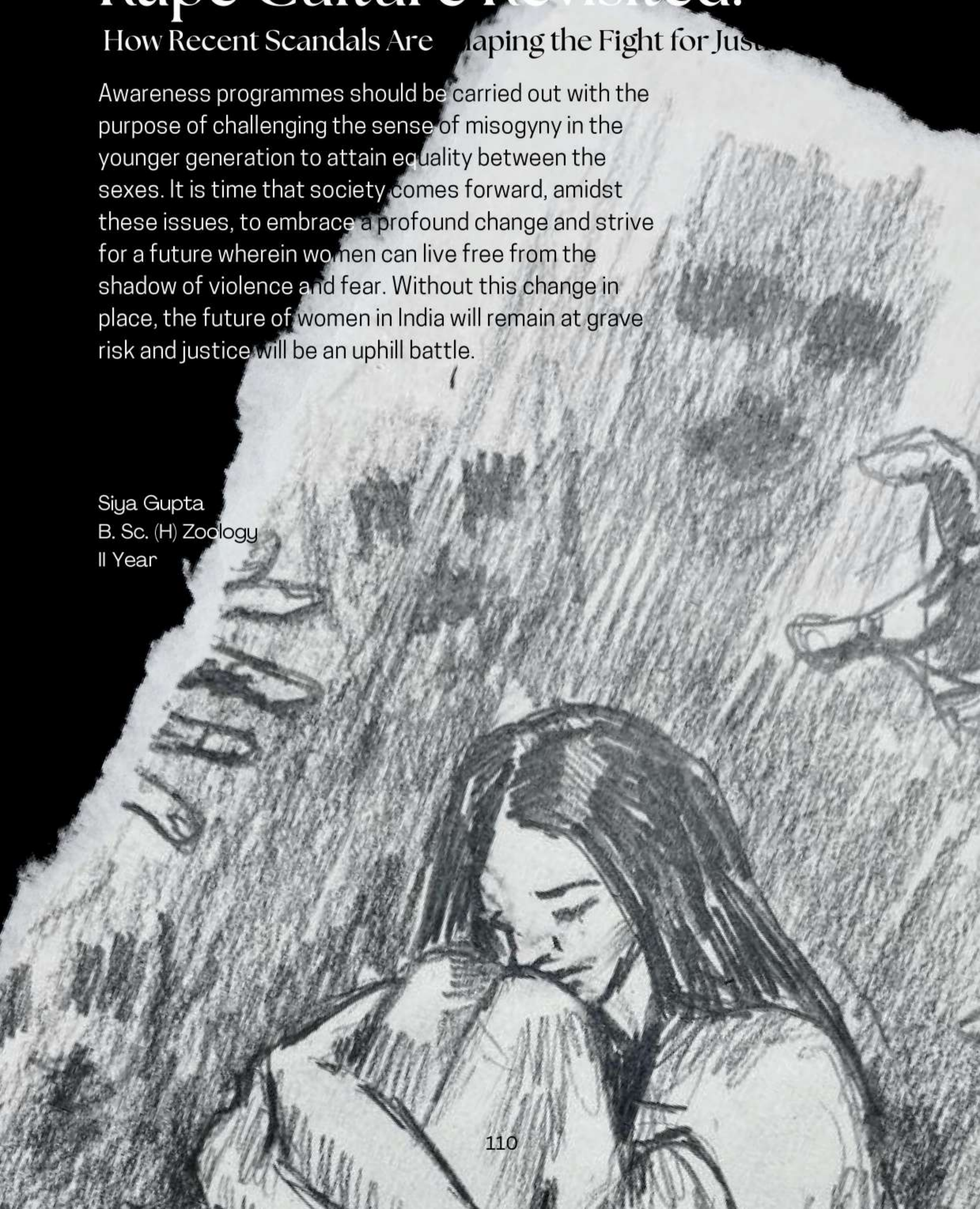

वो

सच कहते हैं लोग
वो है वैसी,
चारु-सी चमक
और शीतल बहती सरिता जैसी|

मंद-मंद बहती वायु में
चल चमकती निदाघ की बाहों में,
उस लाल गुलाब पर बैठी,
उस कोमल तितली जैसी|

अधरों पर वो प्यारी मुस्कान
मृगनयनों-सी आँखें समान,
उसकी मधुर आवाज़ इतनी मीठी,
सुरीली कोकिला जैसी|

अनंत उत्तमता है उसमें
कितनों की मैं बात करूँ,
बस यही इच्छा है मन में
कि हर पल उसके साथ रहूँ|

और सच कहता हूँ,
उसके जैसी मैंने कभी ना देखी,
मैं ठहरा बंजर सा चाँद
वो पूरित वसुधा जैसी।

शाश्वत शुक्ला 'जुगनू'
बी.एससी. (विशेष) इलेक्ट्रॉनिक्स
द्वितीय वर्ष

जल की जादुई कहानी

जल है जीवन का आधार, इसके बिना सब बेकार।
धरती पर ये अमृत धारा, हरियाली का है सहारा।

नदियों का ये मीठा पानी, जीवन को देता है रवानी।
बिन इसके सब सूना-सूना, हर जीव का ये है नगीना।

जल की बूँदें मोती जैसी, धरती की ये शान है ऐसी।
सागर की लहरें गाती गीत, पानी की महिमा है कल्पनातीत।

बादल बनकर उड़ता पानी, फिर बरसकर देता जवानी।
फूलों में रंग, फलों में रस, पानी से ही है सबका विकास।

पानी की हर बूँद अनमोल, संभालो इसे, ये है अनुकूल।
बर्बादी से इसे बचाना, हम सबका है ये पैगाम।

जल है जीवन का आधार, आओ मिलकर करें विचार।
संरक्षण इसका है ज़रूरी, तभी होगी धरती पूरी।

जल की महिमा गाओ सब, संभालो इसे, यही है सब।
धरती पर ये अमृत धारा, हरियाली का है सहारा।

सुधांशु कुमार
बी. एससी. (विशेष) इलेक्ट्रॉनिक्स
प्रथम वर्ष

शुचिता

सूरज की लालिमा के साथ शुचिता ने आँखें खोली और उठते ही तैयारी में लग गई। इस दिन का उसे बेसब्री से इंतज़ार था, राष्ट्रीय लंबी कूद प्रतियोगिता का दिन। पैरों में पट्टी बाँधे, नंगे पैर वह अपनी ही धुन में स्टेडियम की ओर दौड़ी जा रही थी।

"अरे मैडम ज़रा देख के, अगर चोट लग जाती तो मेरी आफत होती", आवाज़ सुनकर शुचिता अपने विचारों से निकली और पाया कि वह सड़क के बीचोंबीच खड़ी है और यातायात नियमों के विरुद्ध चल रही है। राघव ने अगर गाड़ी समय पर ना रोकी होती तो आज वह जीती ना बचती। शुचिता ने तत्काल सभी से माफी माँगी और बताया कि प्रतियोगिता में जाने की जल्दी के कारण उसे रास्ते का ध्यान नहीं रहा। दिमाग में विचारों का तूफान और बढ़ी हुई धड़कन के साथ उसने छलांग लगाई, पहला प्रयास– 3.0 मीटर, दूसरा प्रयास– 2.8 मीटर। अंकतालिका में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 3.5 मीटर था। सभी खिलाड़ी अपने शुभचिंतकों के आशीर्वाद से आह्लादित हो रहे हैं और शुचिता का हृदय एक आग में जल रहा है। अन्य परिवारों को देख वह अलग ही विचारों में डूबी है जो उसकी हृदयाग्नि के लिए घी समान काम कर रहे हैं।

"बेटा, तू पूरे दिन मैदान में रहती है, क्या तू अपने बाप को नहीं जानती?"

"माँ तुम चिंता ना करो, एक दिन में बहुत बड़ी खिलाड़ी बन जाऊँगी फिर सब सही हो जाएगा।"

दोनों की आँखों में उम्मीद, विश्वास, डर और ना जाने कितने ही भावों का मिश्रण था।

"कौन क्या बनेगा, लगता है पिछला सबक भूल गई हो तुम दोनों।" इतना कहते ही नशे में धुत वह आदमी अपनी पत्नी को बेरहमी से मारने लगा, लगता था की उसे मार के ही दम लेगा। संभवतः शुचिता भी उस दिन उसकी मार से ना बचती यदि माँ ने गाँव से भागने में उसकी मदद ना की होती।

शहर में आए उसे छः महीने हो गए थे और दूसरे ही दिन उसकी मुलाकात एक हमउम्र लड़की से हुई। दोनों के अनकहे शब्द शायद एक ही कहानी कह रहे थे। आपसी सहानुभूति और लगाव उनकी दोस्ती का आधार बने। दोनों एक ही झुग्गी में रहती थीं, मिलकर काम करती और अपने-अपने लक्ष्यप्राप्ति की ओर प्रयास करती।

अंतिम प्रयास - 3.8 मीटर। पोडियम के शीर्ष स्थान पर खड़ी शुचिता की समाधि भंग करती है तालियों की गड़गड़ाहट, जिसमे शामिल है कुछ जाने पहचाने हाथ। उसकी सहेली जो अपनी नौकरी से कुछ समय चुराकर उसकी खुशी में शामिल होने आई है, उसके पीछे खड़ा राघव जिसकी आँखों में एक अलग ही चमक है और उसके साथ खड़ी उसकी माँ जिसके पास इस वक्त आँखों में आँसुओं के सिवाय कुछ नहीं है। शुचिता की माँ जो चार महीने पहले राघव के यहाँ नौकरानी बनी है, आज राष्ट्रीय स्तर विजेता की माँ है।
जीत के इस क्षण में शुचिता हैरान है, इतने बड़े परिवार में जो उसके लिए खुश हैं, उनमें से जिनसे वह परिचित है, उनमें वह सबसे ज्यादा किसकी शुक्रगुज़ार है। वह पिता जिसने कभी उसे बेटी का सम्मान नहीं दिया, वह माँ जिसने स्वयं कष्ट सहकर उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, वह दोस्त जिसने उसे तब सहारा दिया जब उसके पास कुछ नहीं था या फिर वह अजनबी जिससे वह आज सुबह ही मिली थी और उसने बिना कुछ पूछे बताए सभी कुछ पढ़ लिया था।

अंशिका शर्मा
बी. एससी. (विशेष) जन्तु विज्ञान
2021-2024
(जीसस एंड मेरी कॉलेज द्वारा हिंदी दिवस 2023 पर आयोजित अंतरमहाविद्यालय लघु कथा लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त।)

कलम खामोश है

कोई अपराध सुनकर फिर पुलिस बहरी हुई होगी,
कलम खामोश है तो बात कुछ गहरी हुई होगी।

मुझे लगता है मंदिर-मस्जिदों में जंग हुई होगी,
किसी बिटिया की दामन दाग से बदरंग हुई होगी।
या संभव है सियासत ने कोई एहसान किया होगा,
गिराने को किसी की झोपड़ी का फरमान दिया होगा।

हो सकता है विधायक निवास में अय्याशी हुई होगी,
या अदालत में किसी निर्दोष को फाँसी हुई होगी।
जो दिखता है इन आँखों से वो सब सच नही होता,
कलम! शब्दों की चुप्पी भी मगर अच्छा नही होता।

वो रूठा है क्या जिसको तुम दिल-ए-इकरार कहते हो,
बताओ बात क्या है, हमको तो तुम यार कहते हो।
कहीं ऐसा ना हो कि शब्द को स्याही निगल जाये,
लिखो कागज़ पर कुछ ऐसा कि पत्थर भी पिघल जाये।

शायद शब्दों पर भी सरकार की पहरी हुई होगी,
कलम खामोश है तो बात कुछ गहरी हुई होगी।

रितिक यादव
बी. एससी. (विशेष) वनस्पति विज्ञान
द्वितीय वर्ष

DELHI DARSHAN

Compiled by Diya Bilahari
Member, Students' Editorial Board

Ever since the 8th century, Delhi has been eyed on by so many dynasties and rightfully so, "jagah hai hi itni khaas". Owing to the men who came, conquered and got erased with the currents of time, Delhi is a museum on its own. Forts, palaces, masjids, bore wells, history never sleeps in Delhi. So is the city itself. The crowd of Delhi is unimaginably huge. Statistically speaking, it is second among the most crowded cities in the world. The streets are cramped, markets bustling, the metro (the lifeline of Delhi) is almost always packed. You have heard of India Gate, you've heard of Red Fort, you've seen where the President lives, you've discovered the multicultural markets of Delhi, probably even bagged an amazing deal at Sarojini Nagar. Now sit back and enjoy while we take you across the less explored parts of Delhi.

Agrasen Ki Baoli

Agrasen Ki Baoli is a 60-meter long and 15-meter wide historical stepwell in Delhi. Although there isn't much historical information as to who built this stepwell, its architectural style can be traced back to the Delhi Sultanate. A horror story tails the stepwell and visitors have reported having paranormal experiences here. If you are someone with a passion for horror movies or are in the quest of something supernatural, Agrasen Ki Baoli must be on your wish list. The nearest metro station is Rajiv Chowk. Do give it a try!

Tughlaqabad Fort

Tughlaqabad Fort was constructed in 1321. This 700 year old fort is one of the closest monuments to Acharya Narendra Dev College. Once fabled to have housed diamond markets during its prime, the fort is now in ruins. The fort's curse is said to have caused the end of dynasties that have owned it but now it is a very peaceful place offering amazing views of South Delhi. The nearest metro station is Govindpuri.

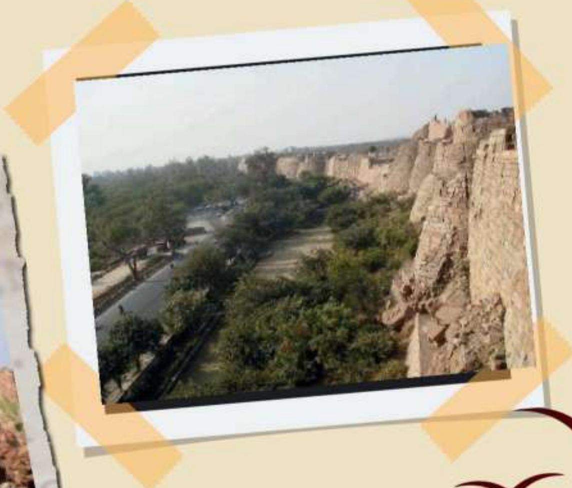

Haveli of Mirza Ghalib

Ghalib Ki Haveli is a haveli in Gali Qasim Jan, Ballimaran, in the Chandni Chowk neighbourhood of Old Delhi. It was the residence of the 19th-century Indian poet Ghalib and is now a heritage site. Its Mughal architecture reflects the time when the Mughal era was on the decline in India. The place boasts of a serene ambience where you can experience the magic of poetry.

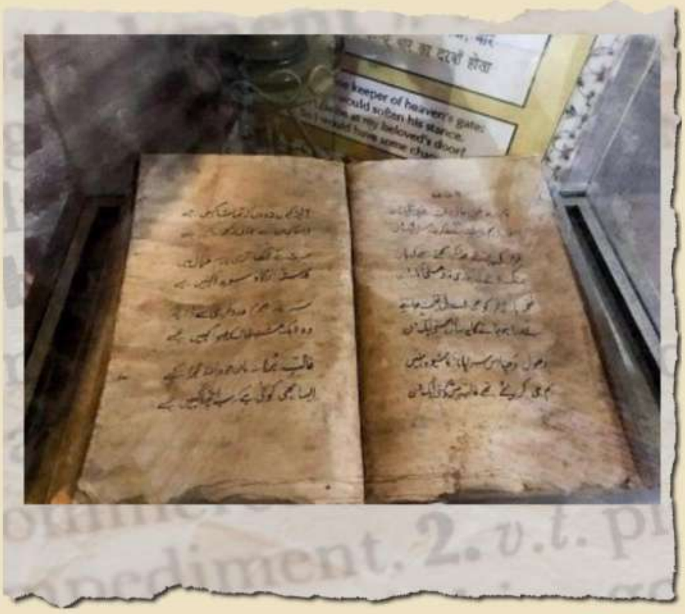

NSD Canteen

If you have cravings for homemade food, you can always go to the NSD canteen that serves delicious Indian Thali , rajma chawal, kadi chawal , etc. the nearest metro station is Mandi House. Known as the cultural hub of Delhi, Mandi House hosts some of the finest art institutions in India – National School of Drama, Kathak Kendra, Bharatiya Kala Kendra, FICCI, Russian Culture Centre to name a few. Thus, the area is a common spot for a diverse range of people.

We're sorry, we couldn't put any picture here due to copyright issues but you can google it :)

Tea Room by Blossom Kochhar

A lovely place with white interiors, books, dainty china and a view of the trees is bound to brighten up your spirit. This silent place in the middle of a chaotic city is a must visit place for book lovers. The nearest metro station is Hauz Khas. If you are craving for some hot piping tea with a tasty snack, with the comfort of a book in your hands, Tea Room is your destination.

खेलों के क्षेत्र में उभरता भारत: आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप, पेरिस ओलपिक्स, पेरिस पैरालपिक्स 2024

आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप 2024: टी-20 विश्व कप का आयोजन आईसीसी (अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) द्वारा किया जाता है। इसका मुख्यालय दुबई में स्थित है। यह टूर्नामेंट प्रत्येक दो वर्ष पर आयोजित किया जाता है। इस वर्ष वेस्टइंडीज और संयुक्त राज्य अमेरिका की सह- मेजबानी द्वारा इसका 9वाँ संस्करण 02 जून से 29 जून 2024 तक आयोजित किया गया, जिसके अंतर्गत कुल 55 मैच खेले गए। आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप 2024 में भारतीय टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए खिताब अपने नाम किया। यह जीत न केवल क्रिकेट के खेल में भारत की मज़बूती को दर्शाती है, बल्कि यह हर भारतीय के लिए गर्व का एक अद्वितीय क्षण था। विश्व कप के हर मैच में खिलाड़ियों का जोश और उत्साह देखते ही बनता था। इस जीत ने भारत के क्रिकेट प्रशंसकों को नया जोश और उत्साह प्रदान किया।
फाइनल मैच किंग्स्टन ओवल स्टेडियम, बारबेडोस में 29 जून, 2024 को आयोजित किया गया, जिसमें भारत ने दक्षिण अफ्रीका को हराकर 17 साल बाद दूसरी बार टी-20 विश्व कप का खिताब अपने नाम किया। टी-20 विश्व कप की श्रेणी में यह भारत की दूसरी जीत रही। इससे पहले 2007 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित टी-20 के प्रथम संस्करण में कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के नेतृत्व में पाकिस्तान को हराकर भारतीय टीम ने विश्व कप अपने नाम किया था। यह भारत का 11 साल बाद पहला आईसीसी खिताब है, पिछली बार भारत ने महेंद्र सिंह धोनी की ही कप्तानी में 2013 में चैंपियंस ट्रॉफी जीती थी। इसी के साथ रोहित शर्मा भारतीय क्रिकेट के इतिहास में दूसरे कप्तान बन गये जिन्होंने आईसीसी टी-20 विश्व कप ट्रॉफी जीती।
भारतीय टीम की इस जीत का श्रेय कप्तान, कोच, और टीम प्रबंधन के साथ-साथ खिलाड़ियों के समर्पण और मेहनत को जाता है। कप्तान ने बेहतरीन रणनीति बनाई और खिलाड़ियों ने उसे मैदान पर बेहतरीन तरीके से लागू किया। बल्लेबाजी, गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण, तीनों क्षेत्रों में टीम ने एकता और संगठितता का उदाहरण पेश किया। रोहित शर्मा, विराट कोहली, और सूर्यकुमार यादव जैसे अनुभवी खिलाड़ियों ने महत्वपूर्ण क्षणों में अपनी भूमिका निभाई, जबकि नए खिलाड़ियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।
भारतीय टीम ने फाइनल मैच में 20 ओवर में 07 विकेट पर 176 रनों का स्कोर बनाया। बल्लेबाजी में आक्रामकता और समझदारी का अद्वितीय संयोजन देखा गया, जिसने भारतीय टीम को एक मजबूत स्थिति में रखा। फाइनल मैच में, भारतीय गेंदबाजों ने भी अपने प्रदर्शन से विपक्षी टीम, दक्षिण अफ्रीका, को बांधे रखा और टीम को विजय तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दक्षिण अफ्रीका 20 ओवर में 08 विकेट पर 169 रन ही बना पाया और इसी के साथ भारतीय टीम 07 रनों से दक्षिण अफ्रीका से फाइनल मैच जीत गयी। इस विश्व कप में भारतीय टीम ने बिना किसी मैच को हारे एक और इतिहास रच दिया।

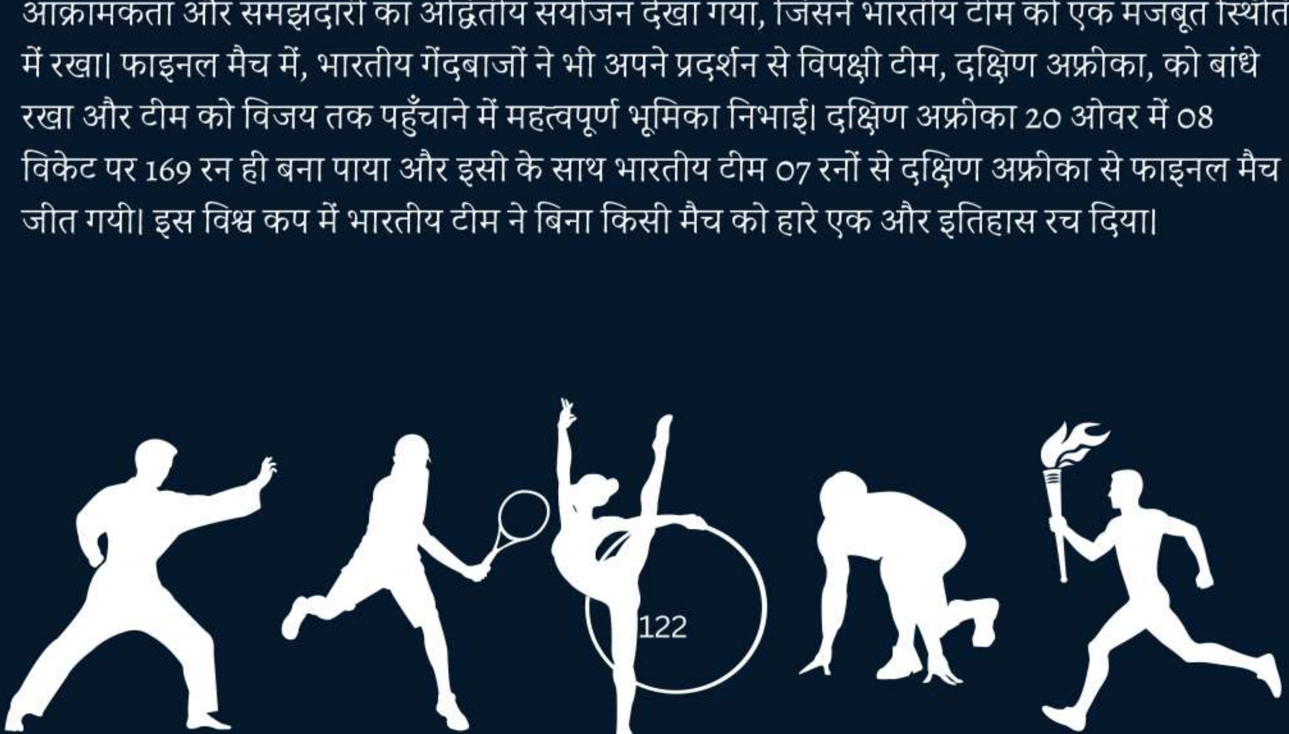

फाइनल मैच में प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड विराट कोहली, प्लेयर ऑफ द सीरीज का अवार्ड जसप्रीत बुमराह एवं स्मार्ट कैच ऑफ द मैच का अवार्ड सूर्यकुमार यादव को दिया गया। इस ऐतिहासिक जीत के साथ ही भारत के तीन जांबाज खिलाड़ी रोहित शर्मा, विराट कोहली और रवीन्द्र जडेजा ने क्रिकेट विश्व कप से संन्यास ले लिया।

भारत की यह जीत न केवल खिलाड़ियों की मेहनत का फल है, बल्कि यह भारत के क्रिकेट इतिहास में एक नया अध्याय है। इस जीत ने भविष्य के युवा खिलाड़ियों के लिए एक प्रेरणा का काम किया है और पूरे देश को एकजुट किया है। यह ऐतिहासिक क्षण भारतीय क्रिकेट के सुनहरे पन्नों में हमेशा के लिए दर्ज हो गया है।

पेरिस पैरालंपिक्स 2024: पेरिस पैरालंपिक्स 2024 भारतीय खेल इतिहास में एक नया अध्याय लेकर आया, जहाँ हमारे पैरा-एथलीटों ने अद्वितीय प्रदर्शन करके देश का नाम रौशन किया। इन खिलाड़ियों ने अपनी मजबूत इच्छाशक्ति, कठिन मेहनत, और अदम्य साहस के बल पर देश के लिए कई पदक जीते। इस ऐतिहासिक जीत ने भारतीय खेल प्रेमियों को गर्व और आनंद से भर दिया है और यह प्रेरणा का स्रोत बन गया है।

भारत के लिए पैरालंपिक खेलों में पदक जीतने वाले प्रथम खिलाड़ी मुरलीकान्त पेटकर थे। इन्होंने 1972 हेडिलबर्ग, जर्मनी पैरालंपिक में तैराकी स्वर्ण पदक जीता था।

पैरालंपिक्स 2024 का आयोजन 28 अगस्त से 08 सितम्बर 2024 तक पेरिस, फ्रांस में किया गया। यह पैरालंपिक खेलों का 17वाँ संस्करण था। भारतीय पैरा-एथलीट दल से कुल 84 खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिन्होंने 12 खेलों में हिस्सा लिया। यह पैरालंपिक खेलों में भेजा गया भारत का अब तक का सबसे बड़ा दल रहा। भारतीय पैरा-एथलीट पेरिस 2024 में तीन नए खेलों: पैरा- साइकिलिंग, पैरा- रोइंग और ब्लाइंड- जूडो में हिस्सा लिया।

पेरिस पैरालंपिक्स 2024 के उद्घाटन समारोह में भारत के ध्वज-वाहक सुमित अंतिल और भाग्यश्री जाधव थे, जबकि समापन समारोह में हरविंदर सिंह और प्रीति पाल थे।

पेरिस पैरालंपिक्स 2024 में, भारतीय पैरा- एथलीट दल ने कुल 29 पदक (07 स्वर्ण, 09 रजत और 13 कांस्य) जीतकर देश का नाम गौरवान्वित किया है। पैरालंपिक 2024 में भारत पदक तालिका में 18वें स्थान पर रहा, जो कि अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है।

पेरिस पैरालंपिक्स 2024 में भारत के पदकवीर:-

अवनि लेखरा (शूटिंग) - स्वर्ण पदक, वूमेन्स 10 मीटर एयर राइफल (SH1)

मोना अग्रवाल (शूटिंग) - कांस्य पदक, वूमेन्स 10 मीटर एयर राइफल (SH1)

प्रीति पाल (एथलेटिक्स) - कांस्य पदक, वूमेन्स 100 मीटर रेस (T35)

मनीष नरवाल (शूटिंग) - रजत पदक, मेन्स 10 मीटर एयर पिस्टल (SH1)

रुबीना फ्रांसिस (शूटिंग) - कांस्य पदक, वूमेन्स 10 मीटर एयर पिस्टल (SH1)

प्रीति पाल (एथलेटिक्स) - कांस्य पदक, वूमेन्स 200 मीटर रेस (T35)

निषाद कुमार (एथलेटिक्स) - रजत पदक, मेन्स हाई जम्प (T47)

योगेश कथुनिया (एथलेटिक्स) - रजत पदक, मेन्स डिस्कस थ्रो (T47)

नितेश कुमार (बैडमिंटन) - स्वर्ण पदक, मेन्स सिंगल्स (SL3)

मनीषा रामदास (बैडमिंटन) - कांस्य पदक, वुमेन्स सिंगल्स (SU5)

थुलासिमथी मुगरुसन (बैडमिंटन) - रजत पदक, वुमेन्स सिंगल्स (SU5)

सुहास एल यथिराज (बैडमिंटन) - रजत पदक, मेन्स सिंगल्स (SL4)
शीतल देवी- राकेश कुमार (तीरंदाजी) - कांस्य पदक, मिक्स्ड कंपाउंड ओपन
सुमित अंतिल (एथलेटिक्स) - रजत पदक, मेन्स जैवलिन थ्रो (F64)
नित्या श्री सिवन (बैडमिंटन) - कांस्य पदक, वुमेन्स सिंगल्स (SH6)
दीप्ति जीवनजी (एथलेटिक्स) - कांस्य पदक, वुमेन्स 400 मीटर (T20)
मरियप्पन थंगावेलु (एथलेटिक्स) - कांस्य पदक, मेन्स हाई जम्प (T63)
शरद कुमार (एथलेटिक्स) - रजत पदक, मेन्स हाई जम्प (T63)
अजीत सिंह (एथलेटिक्स) - रजत पदक, मेन्स जेवलिन थ्रो (F46)
सुन्दर सिंह गुर्जर (एथलेटिक्स) - कांस्य पदक, मेन्स जेवलिन थ्रो (F46)
सचिन सरजेराव खिलारी (एथलेटिक्स) - रजत पदक, मेन्स शॉट पुट (F46)
हरविंदर सिंह (तीरंदाजी) - स्वर्ण पदक, मेन्स इंडिविजुअल रिकर्व ओपन
धर्मबीर (एथलेटिक्स) - स्वर्ण पदक, मेन्स क्लब थ्रो (F51)
प्रणव सूरमा (एथलेटिक्स) - रजत पदक, मेन्स क्लब थ्रो (F51)
कपिल परमार (जूडो) - कांस्य पदक, मेन्स 60 किलो (J1)
प्रवीण कुमार (एथलेटिक्स) - स्वर्ण पदक, मेन्स हाई जम्प (T44)
होकाटो होटोजे सेमा (एथलेटिक्स) - कांस्य पदक, मेन्स शॉट पुट (F57)
सिमरन शर्मा (एथलेटिक्स) - कांस्य पदक, वुमेन्स 200 मीटर (T12)
नवदीप सिंह (एथलेटिक्स) - स्वर्ण पदक, मेन्स जेवलिन थ्रो (F41)

भारतीय पैरा-एथलीटों की यह जीत सिर्फ खेल का एक हिस्सा नहीं है, बल्कि यह उनकी कठिन यात्रा, संघर्ष, और आत्मविश्वास का प्रतीक है। उन्होंने शारीरिक चुनौतियों को मात देकर यह सिद्ध किया कि आत्मबल और दृढ़ इच्छाशक्ति से किसी भी चुनौती का सामना किया जा सकता है। यह जीत उन लाखों दिव्यांग लोगों के लिए प्रेरणा है जो अपने जीवन में कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

पेरिस पैरालंपिक 2024 में भारतीय पैरा-एथलीटों का प्रदर्शन हमें यह सिखाता है कि जब हौसला बुलंद हो, तो कोई भी बाधा इतनी बड़ी नहीं होती कि उसे पार न किया जा सके। यह जीत भारत के लिए एक गर्व का क्षण था, और हम सभी उम्मीद करते हैं कि भविष्य में भी हमारे पैरा-एथलीट इसी तरह देश का मान बढ़ाते रहेंगे।

सन्दीप गुप्ता
सदस्य, संपादक मंडल

Positive Calendar 2023

Compiled by Diya Bilahari
Member, Students' Editorial Board

January

1. James Webb Space Telescope's first images: The highly anticipated James Webb Space Telescope released its first stunning images of the universe, providing unprecedented insights into the cosmos.
2. AI breakthroughs: Several significant advancements in artificial intelligence were made, including the development of more powerful language models and AI-driven medical diagnostics.
3. Climate change initiatives: Countries around the world announced ambitious plans to reduce greenhouse gas emissions and combat climate change.
4. Economic recovery: Many economies continued to recover from the COVID-19 pandemic, with job growth and increased consumer spending.
5. Scientific discoveries: Scientists made several groundbreaking discoveries, such as the identification of a new species of dinosaur and the potential for life on other planets.

February

1. NASA's DART mission success: NASA's Double Asteroid Redirection Test (DART) successfully impacted the asteroid Dimorphos, demonstrating the potential for planetary defense against near-Earth asteroids.
2. AI-Powered medical breakthroughs: AI technology was used to develop new diagnostic tools and treatments for various diseases, including cancer and heart disease.
3. Global vaccination efforts: Continued progress was made in global vaccination efforts against COVID-19, helping to reduce the spread of the virus and save lives.

March

1. Historic climate agreement: A major international climate agreement was reached at, setting ambitious targets for reducing greenhouse gas emissions and transitioning to a clean energy economy.
2. Nobel Prizes given: The Nobel Prizes were awarded to individuals who made significant contributions in their respective fields, including medicine, physics, chemistry, literature, peace and economics.
3. Space exploration milestones: Several space exploration milestones were achieved, including the successful launch of a new space telescope and the landing of a spacecraft on a distant planet.

April

1. Plastic removed from the Great Pacific Garbage Patch: The Ocean Cleanup removed 220 tons of plastic from the Great Pacific Garbage Patch, the world's largest accumulation of ocean plastic.

May

1. Women's rights: Spain became the first European country to offer paid menstrual leave, and women were granted the right to vote in Vatican City.
2. Forest recovery: In Brazil, the new president has slowed deforestation in the Amazon rainforest by 48% in eight months. In California, giant redwoods that were burned in 2020 wildfires began to grow new buds.
3. A young man's day made: In Hapeville, Georgia, police officers bought a young man a PlayStation 5 after he asked strangers for yard work to save up for one.

June

1. Malaria vaccine: The World Health Organization (WHO) recommended the R21/Matrix-M vaccine, which is cheaper and more effective than the first vaccine approved in 2021.
2. LGBTQ community wins: Several countries made a progress towards legalizing same-sex partnerships, including Nepal, Latvia, Peru, and South Korea.
3. Kerala woman with cerebral palsy clears UPSC exam: A young woman from Kerala cleared the civil services exam despite suffering from cerebral palsy.

July

1. Chandrayaan -3 launch success: India successfully launched its third lunar mission, Chandrayaan -3, aiming to land a spacecraft on the Moon's South Pole.
2. Renewable energy expansion: India made significant strides in expanding its renewable energy capacity, including solar and wind power.

August

1. India becomes the first country to land near the Moon's South Pole.
2. Bangladesh became the first country to eliminate visceral leishmaniosis, a life-threatening illness caused by a parasite.

September

1. After nearly 200 years, a small holly tree has been rediscovered in Brazil after being presumed extinct.
2. Conservation efforts in Bhutan have led to a 39.5% increase in the snow leopard population, the World Wildlife Fund said.
3. For the first time, geneticists have been able to recover RNA, the genetic material present in all living cells, from the remains of an extinct species.

October

1. The end of Alzheimer's edged nearer, after two drugs were found to slow down the disease.
2. A new cervical cancer treatment using cheap, existing drugs was described as "the biggest improvement in the outcome of this disease in over 20 years".

November

1. Trapped workers rescued from Silkyara tunnel in Uttarakhand.

December

1. PM Modi inaugurates the redeveloped Ayodhya railway station, flags off 8 trains.

BREAKING BARRIERS FOR WOMEN

IN STEM AT ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE

With a great amount of talent and dedication, women at Acharya Narendra Dev College in Delhi University are breaking new barriers in STEM courses. The inspiring journeys of these female students are captured in the story along with major achievements and strong support systems instituted for their success. Women form about 45% of the total number of students in STEM programmes at ANDC and represent a vibrant, pluralistic community committed to fostering growth in knowledge and innovation. This can be further extended to include streams like Computer Science, Physics, and Electronics, in which female students are marking and setting new records.

The achievements of female students at ANDC are remarkable:

- Research Excellence demonstrated by Ms Priya Sharma, a third-year student of the Computer Science department, internationally has reflected brilliance in the domain of machine learning algorithms. Her project was accepted for presentation at a high-profile conference and was critically acclaimed for its novelty and fresh approach to predictive analytics.

BREAKING BARRIERS FOR WOMEN

IN STEM AT ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE

Her work furthered research by the academia and had practical implications for technological development, so that's why she is scoring high here.

Neha Patel, a second-year student of the Department of Physics came first in the 2023 National Science Olympiad. This feat in the competitive platform underlined her exceptional grasp of both the theoretical concepts and practical applications of Physics. Patel's achievement reflects her academic ability and her capacity to make considerable contributions in the field of Physics.

The girl students at ANDC are doing well, if not better, in entrepreneurship, too. A team of students at the Department of Electronics started a firm that produced affordable smart home technologies. Their creative solutions earned them seed funding from the local incubator and proved that female students can transform their theoretical knowledge into enterprises, just like the male students.

BREAKING BARRIERS FOR WOMEN

IN STEM AT ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE

Although they have achieved much, female students in STEM at ANDC encounter the following challenges:

- Gender bias still remains; the number of stereotypes about women in technical fields is high, and those stereotypes, or rather prejudices, affect perceptions and opportunities. In this regard, ANDC has launched a couple of initiatives: mentorship programmes and workshops on understanding and how to change these gender biases for a more accessible environment.

- The sheer weight of the nature of the coursework, personal commitments, and extracurricular activities often seems too burdensome to manage. Many female students struggle with balancing responsibilities that go on to affect their academic performance and result in a deterioration of well-being. ANDC does extend counselling services and flexibility in academic options to such students to cope with their workload and maintain a healthy balance.

BREAKING BARRIERS FOR WOMEN

IN STEM AT ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE

There is a need for more women role models and mentors. ANDC therefore ensures that it invites successful women professionals to speak at seminars and involves students in networking events with various leading industry experts to share advice and inspiration.

Furthermore, ANDC awards scholarships and grants, especially to women pursuing studies in the sciences and technology, to ease the stress of finances and allow students to follow scholarly and research activities. These financial aids enable talented students to have ample time to study and research without having a hammering concern over lack of funds. The college sponsors mentorship programmes, which match female students with female faculty members and professionals.The SPIE Society at ANDC firmly believes that empowerment of women is the key to the progress of the various streams of Science, technology, engineering, and Mathematics. The Society organizes workshops, seminars, and networking events related to optics and photonics.

BREAKING BARRIERS FOR WOMEN
IN STEM AT ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE

Further planned activities include mentorship programmes for female students, necessary facilities towards research, and celebration of success stories of women in technology. Looking ahead, the future of women in STEM at Acharya Narendra Dev College appears to be bright. True to the cause, the commitment of the college stands tall by providing support to its female students as challenges are addressed and with a seamless rise for continued success as these pioneering women continue to make meaningful contributions in their fields. In doing so, they help not only themselves in their career advancement but also pave inspirational paths for forthcoming generations of women in STEM. These women owe their stories to the continued support and encouragement in STEM. ANDC provides an environment that nurtures inclusivity and excellence for its women students, putting them in a better position to excel in their areas of innovation. Their achievements and perseverance serve as a strong testament to the impact of dedicated support for women in the field of STEM.

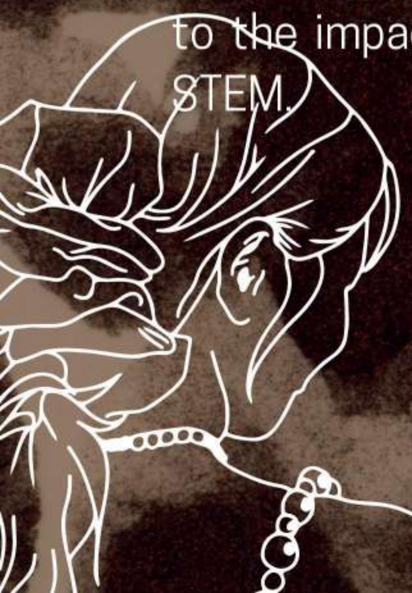

Siya Gupta
B. Sc. (H) Zoology
II Year

अवध निरंजन

अवध निरंजन वचन सताये,
प्राण देके भी वचन निभाये,
वर्ष चतुर्दश, विकट वनवासों के,
गिन सके न दशरथ, माले पर सासों के।

सज के पुष्पक पग देखे है,
हरि पधारो जग देखे है,
सारे नैन में आस सजा के,
आँखें झुकी, लोग देखे हैं।

शोभित तारों से गगन भी जगमग,
हरखित हरि नाम से रग-रग,
राग में राघव तान छिड़ी है,
अंत प्रतीक्षा की सकल घड़ी है।

आने की जो खबर हुई है,
आज अयोध्या अमर हुई है,
कलयुग में शुभ धाम पधारे,
खुद प्रभु श्री राम पधारे।

इतनी जगमग धरती कैसे?
अचरज में हैं तारे सारे,
ऐ रवि तू देर से ढलना,
ऐ पवन तू मद्धम चलना।

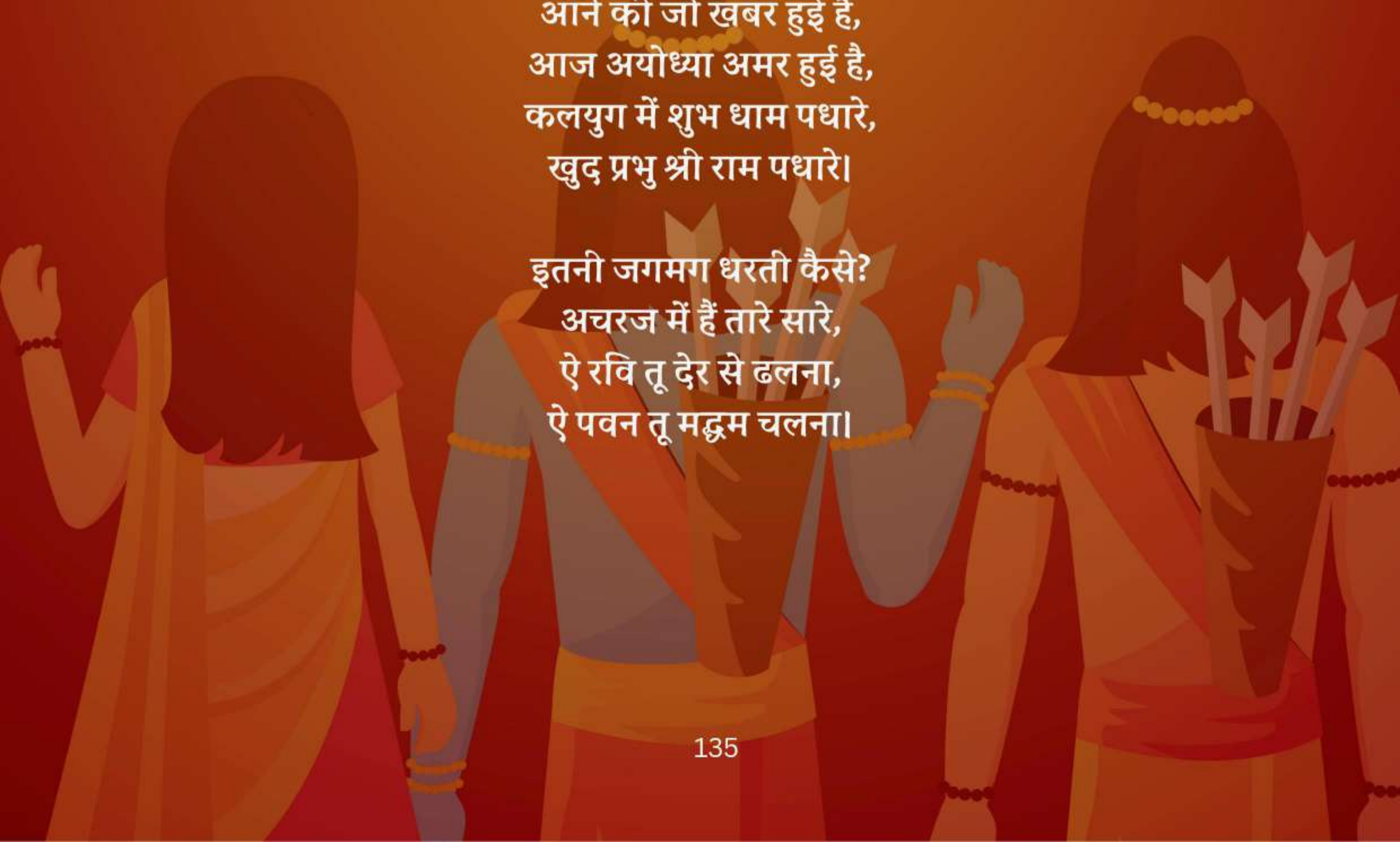

सुर में सारे मंगल गाओ,
रुक ना जाना, ढोल बजाओ,
नेह सजा कर अवध नचाओ,
गति गीत की रुक ना जाए,
चाहे पवन से साँस ले आओ।

गगन गुलाल से रंग डालो,
होली-दिवाली एक साथ मनालो,
ये एक दिन एक साल के जैसा,
इस दिन को नया साल मना लो।

सुभम कुमार तिवारी
बी. एससी. (विशेष) कंप्यूटर साइंस
द्वितीय वर्ष

उत्तर प्रदेश

रामलला और नटखट कान्हा जहाँ
बदलते वेश,
जिसकी मिट्टी इश्क घोल दे वो है उत्तर
प्रदेश।

यहाँ धड़कनों में बहता गंगा-यमुना का
पानी है,
माँ सरयू के आँचल में रघुराज की अवध
कहानी है।
यहाँ गोवर्धन पर्वत है, वंशीधर की वंशी
धुन है,
और वृन्दावन की गलियों में अपनी श्री
ठकुरानी हैं।

यहाँ लखनवी लहज़ा है, मथुरा का मीठा
पेठा है,
रायबरेली की रबड़ी मिश्री में घुल के
बैठा है।
यहाँ चटपटी चाट अवध के घाट पर
खाकर देखो तुम,
मिठास किसे कहते हैं आम के बाग़ में
आकर देखो तुम।

AIIMS, IIT पंख खोलता, कन्नौज
फ़िज़ा में इत्र घोलता,
आगरा वाला ताजमहल सौहार्द प्रेम के
नज़्म बोलता।
यहाँ की सड़कें तय करती सरकार कौन
सी लानी है,
यहाँ हवायें राजनीति की लिखती नयी
कहानी हैं।

खीरी बिजनौर हैं गन्ना बेल्ट, यहाँ देसी घी
के घेवर हैं,
मेरठ, कैराना, सहारनपुर पश्चिम यू. पी.
के जेवर हैं।
यहाँ मुहब्बत खेतों से और हल-बैलों से
होती है,
आँच मान-सम्मान पर हो तो तल्ख़
किसानी तेवर हैं।

मस्ती उमंग की आदत है, रामपुर की
अदब इबादत है,
आकर देखो बागी बलिया यहाँ क्रांति
और बगावत है।
साहित्य गज़ल की है धरती गोरखपुर,
देवरिया, आज़मगढ़,
नमन है गाज़ीपुर को जिसकी देश को
भेंट शहादत है।

जहाँ प्यारा पक्षी सारस है, जहाँ हर एक
पत्थर पारस है,
जहाँ घाट पर दिल खो जाता है वो प्यारा
शहर बनारस है।
हम पुलकित हैं, हर्षित हैं कि ये भूमि
अभिमानी है,
प्रयागराज के संगम की पूरी दुनिया
दीवानी है।

जहाँ केसरिया संग धानी का बना रहता
परिवेश,
जिसकी मिट्टी इश्क़ घोल दे वो है उत्तर
प्रदेश।

रितिक यादव
बी. एससी. (विशेष) वनस्पति विज्ञान
द्वितीय वर्ष

The Hidden Magic of
COLLEGE DAYS

I never thought the best days of my life,
Would unfold in the chaos of college halls,
I expected a routine, nothing more
But fate had other plans, a hidden blessing in store.
I was ready to stay unseen, unnoticed,
Hiding behind walls I built so high,
But moments shattered them, one by one,
And suddenly, I felt alive inside.

To the friends who made me feel like I belong,
You saw the real me when I could not.
You laughed with me, stood by me
Even when I was lost, you kept me strong.
To my family, who anchored me,
And the teachers, who believed in me
When I doubted myself the most,
You all saw a light I was yet to see.

College was wild, messy and real,
I faced storms like everyone else,
But somehow, they passed,
Like fleeting shadows, I could never hold.

And now, as I stand on the edge,
Looking back at what feels like a blur,
I realise I barely blinked,
And those years were gone.

But they've shaped me, moulded me,
And now I move forward,
Not as who I thought I would be,
But as the man college helped me become.

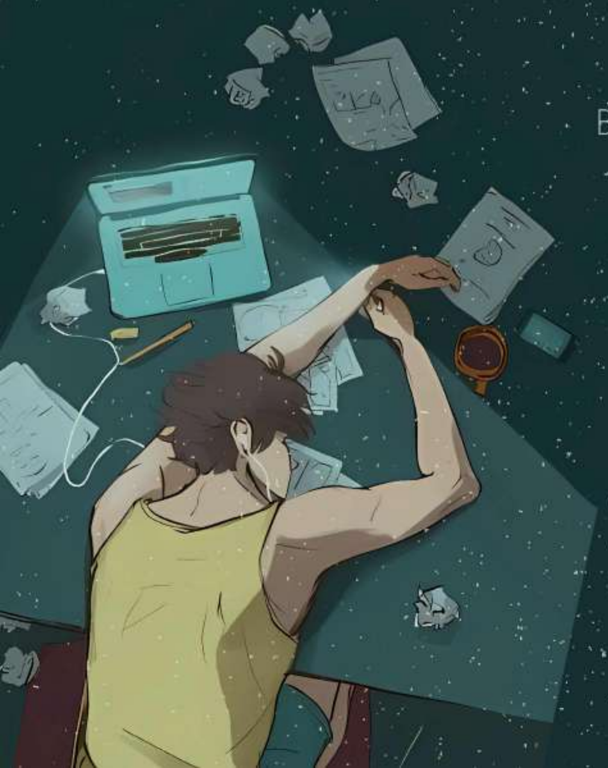

Ankit Goyal
B.Com (H)
II Year

पहेलियाँ

निर्देश :- हर पहेली के नीचे बने खानों में उनका जवाब लिखें। जिस खाने के नीचे जो संख्या लिखी है, उसमें लिखे अक्षर को मुख्य वाक्यांश के उसी संख्या वाले खाने में लिखें एवं मुख्य वाक्यांश का पता लगाएँ।

1. सोने की वह चीज है, पर बेचे नहीं सुनार
मोल तो ज्यादा है नहीं, बहुत है उसका भार।

	1		

2. तीन अक्षर का मेरा नाम, आदि कटे तो बने चार।
अंत कटे तो न मैं जानू, बोलो करो सोच-विचार।

2		

3. आदि कटे तो गीत सुनाऊँ, मध्य कटे तो संत बन जाऊँ,
अंत कटे साथी बन जाता, सबके मन को हरदम भाता।

3		

4. खाते नही चबाते लोग, काठ में कड़वा रस संयोग।
दाँत जीभ की करे सफाई बोलो बात समझ में आई?

4

5. पैरों में जंजीर पड़ी, फिर भी चलती जाए,
पगडंडी हो सड़क, गाँव-गाँव पहुँचाए।

5

6. शुरू कटे तो पशु हो जाता, बीच कटे तो काम
आखिर कटे तो पक्षी होता, बताओ मेरा नाम।

6

7. हाथ आए तो सौ – सौ काटे
जब थके तो पत्थर चाटे।

7

मुख्य वाक्यांश :-

	भि		
2		4	10

9	7	8

6

3	5	1

कुंजी :

1. चारपाई
2. अचार
3. संगीत
4. दतून
5. साइकिल
6. कागज
7. चाकू

मुख्य वाक्यांश :- अभिनव विचारों का संसार

साक्षी वर्मा (सदस्य, संपादकीय मंडल) द्वारा संकलित

DYSTOPIAN

CROSSWORD

ANSWERS

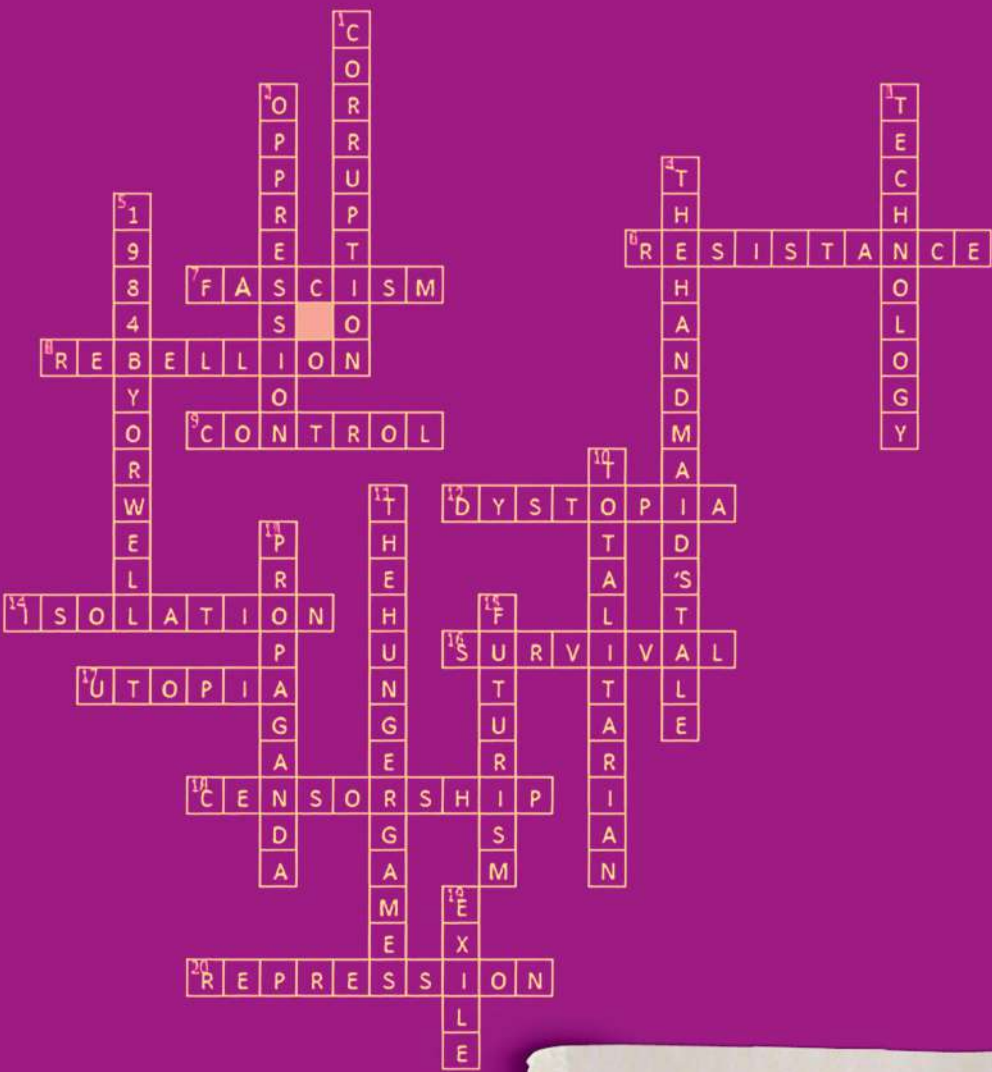

Compiled by Aishani Vashisht
Member, Students' Editorial Board

SOCIETY SCOOP

Compiled by : Aishani Vashisht and Ayushi Mishra, Members Students' Editorial Board

Dive into the vibrant tapestry of student life at Acharya Narendra Dev College. Here, we have put the spotlight on the diverse range of societies that enrich our campus community. From music to dance, theatre to debate, there is a society for everyone.
Explore the profiles of each society, learn about their mission, events and how you can get involved. Discover hidden talents, forge lifelong friendships, and make the most of your college experience.

NATIONAL SERVICE SCHEME, ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE UNIT

What is NSS?

NSS is a flagship programme of the Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India. The primary objective of NSS is to develop the personality and character of the youth through voluntary community service. 'Education through Service' is the purpose of NSS. With the motto "NOT ME BUT YOU", the NSS unit of Acharya Narendra Dev College (ANDC), stands out as a distinguished entity, consistently contributing to the arena of social service. Our efforts, particularly in health, education and social justice, have garnered commendation and set benchmarks for impactful community service.

What is new and exciting this year at NSS ANDC?

This year, we will focus on maximum participation from our volunteers in different national level camps and events along with continuing existing projects and events. We wish to provide opportunities to each volunteer to participate in the activities and events that are necessary for the development of their personality.

Why should students join NSS ANDC?

NSS provides opportunities to participate in national level camps like RD Camp, Independence Day Celebration Camp, National Integration Camp, National Adventure Camp and national level events like National Youth Festival. An NSS certificate adds to one's CV. NSS also provides a platform where we can understand the social aspects of the world and can gain leadership skills.

DHUN, THE MUSIC SOCIETY

DHUN, the Music Society of Acharya Narendra Dev College was started in 2018. It aims to foster musical talent, promote and provide opportunities for students inclined towards music. Its objective is to build a creative community where students can meet, collaborate and share their passion for music, while enhancing their skills through workshops, training sessions and masterclasses. Our music society encourages cultural exchange by exposing members to diverse musical genres and traditions, organizes collaborative projects like composing original music and forming ensembles, and supports campus events with musical performances. Additionally, it connects members with alumni and professionals to explore networking and career opportunities in music.

What is new and exciting this year at Dhun?

After a successful audition round, currently our society has 50 members, selected in various categories of vocalists and instrumentalists. There are various activities and events planned for this year. We would be arranging various workshops focusing on both Classical as well as Light Music. Collaborations of Dhun members with other societies in various college events are also planned. Regular practise and jamming sessions will also be conducted for the members to develop coordination and improve their skills.

Why should students join Dhun?

Joining DHUN offers numerous benefits:
1. Develop musical skills and confidence.
2. Explore new genres, styles and instruments.
3. Improve teamwork and collaboration.
4. Showcase talent in concerts, events and competitions.
5. Gain stage experience and overcome performance anxiety.
6. Network with music professionals and alumni.
7. Improve mental health through music.
8. Develop leadership and management skills by joining the student body.

DHWANI, THE THEATRE SOCIETY

Dhwani is the theatre society of Acharya Narendra Dev College. With roots going back to 2003 and its current form emerging in 2009, it is the oldest society in the college and has a long legacy of artistic excellence.

What is new and exciting this year at Dhwani?

Every year Dhwani puts together new theatre productions, including but not limited to, stage plays, street plays and mime acts. Work on our annual production is already underway and this year, we're trying to bring ideas and concepts to the forefront that haven't been explored much in the Delhi University Theatre Circuit. We hope to bring our productions to you very soon.

Why should students join Dhwani?

Dhwani offers an excellent platform for young adults to work in the theatre sphere, even if they're complete beginners. There are a lot of skills that you can pick up working on productions as a member of Dhwani, from the art of writing and emotional expression to crafts and music. We always aim to create a dynamic, encouraging and engaging learning environment for our members. People with all sorts of different skills and talents have always found a home in Dhwani and they will continue to do so.

DHWANI, THE THEATRE SOCIETY

MAAYRA,THE DANCE SOCIETY

Maayra is a place for students to explore and try different dance forms, practice and excel at them. It can also be a place for expanding your creativity every time we start a new dance routine. Students also learn teamwork and a sense of community feeling.

What is new and exciting this year at Maayra?

This year we will focus on maximum participation by the students in different forms and styles. We wish to provide a stage to everyone to showcase their skills. We plan on entering different competitions as well and bring laurels to the college.

Why should students join Maayra?

Students looking for a platform to showcase their talent and to sharpen their overall development should look forward to joining Maayra.

PARITANTRA, THE ECO CLUB

An eco club is a group, often found in schools or communities, dedicated to promoting environmental awareness and sustainability. Members engage in activities like tree planting, recycling drives and educational campaigns to encourage eco-friendly practices.
Paritantra is our college's eco club.

What is new and exciting this year at Paritantra?

Workshops on sustainable living, including DIY eco-friendly products, waste management, and energy conservation are being organized to educate engage members. Regular clean-up drives in local parks and neighbourhoods are being conducted to promote cleanliness and environmental stewardship.

Why should students join Paritantra?

Students should look forward to joining the eco club for the following reasons:

Environmental Awareness: Students learn about pressing environmental issues and how they can contribute to solutions.
Skill Development: Participation in activities like organizing events, public speaking and project management help to develop valuable skills.
Community Engagement: Eco clubs often work on community projects, fostering a sense of responsibility and connection with the local area.

Personal Growth: Involvement in eco-friendly initiatives can boost self-esteem and provide a sense of accomplishment.
Positive Impact: Students can make a tangible difference in their environment, promoting sustainability and conservation.

TARK,THE DEBATING SOCIETY

TARK is the debating society of ANDC, known for fostering critical thinking and public speaking skills among its members. It typically engages in structured debates and discussions on various topics, aiming to enhance persuasive abilities and promote intellectual engagement.

What is new and exciting this year at TARK?

TARK will organize an intercollege debate competition in collaboration with the Eco Club and various other debating competitions.

Why should students join TARK?

TARK organizes regular debates, workshops and competitions, providing its members opportunities to practise argumentation and rhetoric. Members may also participate in inter-college competitions, engage in peer feedback sessions and explore a wide range of contemporary issues.

SPIE, STUDENT CHAPTER AT ANDC

SPIE is the International Society for Optics and Photonics, a professional organization dedicated to advancing light-based technologies. Founded in 1955, SPIE supports research, education and industry by organizing conferences, publishing research, and providing resources for professionals in fields like optics, photonics and imaging.

At Acharya Narendra Dev College, the SPIE chapter brings together students from diverse disciplines such as Botany, Zoology, Biomedical Science and Life Sciences. It aims to promote interdisciplinary learning, foster hands-on experience and build a collaborative community. The chapter hosts workshops, seminars and project-based learning opportunities, empowering students to apply photonics and optics in innovative ways that act as a bridge between science and technology.

What is new and exciting this year at SPIE?

We have so far successfully conducted Material Alchemy and Arduino workshops along with excursions to CSIO Chandigarh and our teams have participated in various workshops this year. We plan on doing AN AR VR, a satellite communication workshop for an optics fair and school outreaches.

Why should students join SPIE?

Students get a chance to learn university level research skills and the opportunity to publish research papers at the undergraduate level.

Students are also welcome to hone skills other than research such as Graphic Designing, Video Editing and other creative skills.

GOOGLE DEVELOPER GROUPS (GDG) ON CAMPUS

Google Developer Groups on campus, previously known as Google Developer Student Clubs (GDSC), are dynamic communities that unite students passionate about technology and innovation, with support from Google. Our mission is to enhance accessibility to technology and empower the next generation to thrive in a rapidly evolving digital landscape.

What's new and exciting happening this year?

By founding the Google Developer Group on our campus this year, we're excited to make a lasting impact. This year, we'll host Google speakers for industry insights, collaborate with international organizations for a global perspective and conduct hands-on workshops to upskill our members. We plan on holding recruitment drives to help grow our vibrant community.

Why should students join GDG on campus?

Ignite your passion for innovation with exhilarating events, hands-on projects, hackathons and expert-led workshops. This international chapter offers everything from practical learning to dynamic networking, earning a spot on your university's to-do list.

STARTUP SPOTLIGHT

BOOKWITHUVA

BookWithUVA is a student centric stationery-based Start up, established with the solemn mission to provide students with all kinds of books and other study material, delivered in their college and at very affordable prices. It was founded on August 29, 2022. It is pre-incubated at ANDC inStart Foundation, certified by the Ministry of MSME. Our team of 30+ students, has diligently demonstrated unwavering commitment to innovation and a potential for substantial expansion.

As a result, we have 60+ products and essential services such as book renting and book reselling, along with a user-friendly website, self-designed inventory management software, an innovative delivery system and much more. In the course of two years, we have been operating successfully in multiple colleges of Delhi University, DU SOL and IGNOU with tremendous response from students. We have served 10,000+ customers and delivered more than 25000 orders and have crossed a turnover of INR 20 lakhs.

What's new this year?

- Students will be given more authority.
- More practical on-field work with training in various aspects.
- Easier ordering with scheduled timings. Great offers for the first year students.
- We are also planning on opening other outlets in various other locations across Delhi.

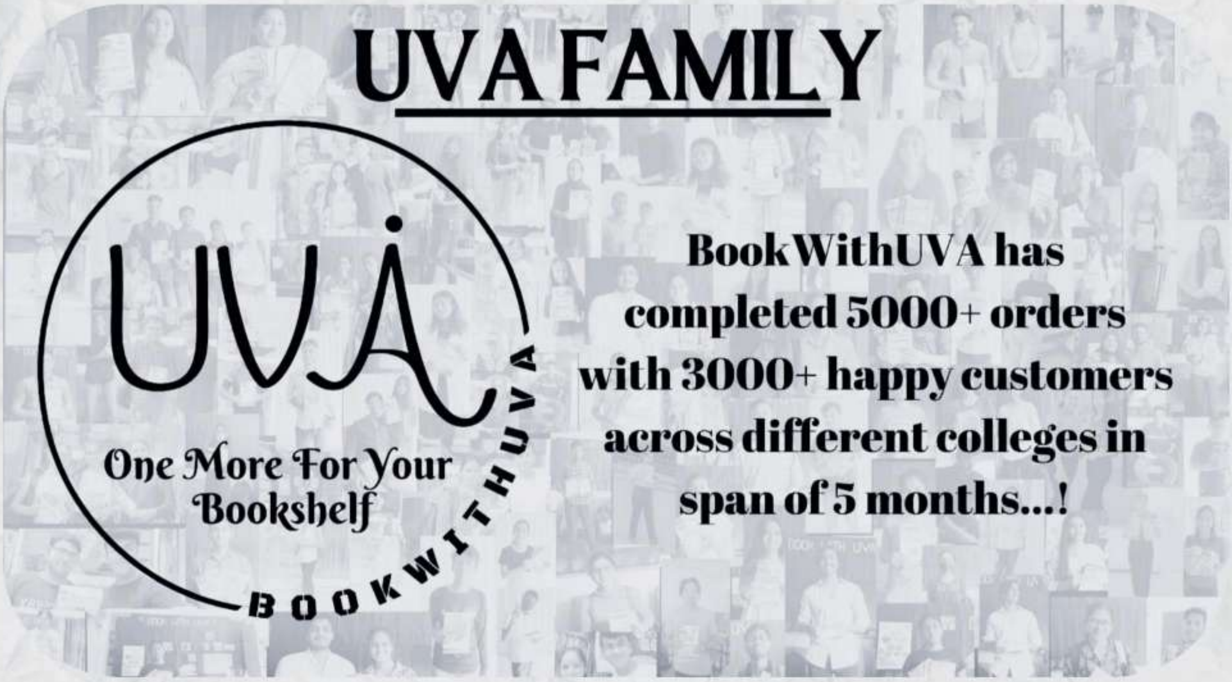

COLLEGE EVENTS

Pictures

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

VC's VISIT 2024

V-LAB

Fresher's Debate

SPORTS DAY

2024

FRESHMAN ORIENTATION

ONAM

Workshops

GPS Map Camera
New Delhi, Delhi, India
G7Q7+FMQ, Bal Mukund Khand, Giri Nagar, Kalkaji, New Delhi, Delhi 110019, India
Lat 28.538806°
Long 77.264245°
10/08/23 01:27 PM GMT +05:30
Google

Seminars

International Society for Microbial Ecology
Role and Targets, As per ISME mandate

ART OF SCIENTIFIC WRITING AND COMMUNICATION
ISME

AND MEMORIAL LECTURE

CAMERA 003 I LOVE YOU

OUR BEST MEMORIES

Alumni meet

CAMERA 003

5 YEARS TOGETHER

12.10.24

FRESHER'S DAY

Until we meet again.
Farewell '24.

Leiothrixx

DANDIYA NIGHT

DIWALI MELA

CREATIVE Corner

SHAURYA
B. SC. (H) BOTANY
I YEAR

NIKHIL SAINI
B. COM. (H)
III YEAR

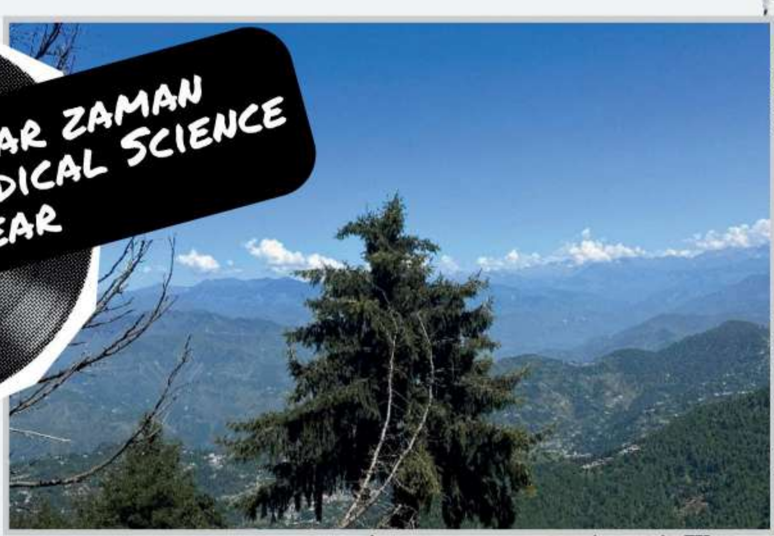

MAHRUKH NIGAR ZAMAN
B. SC. (H) BIOMEDICAL SCIENCE
III YEAR

Summer

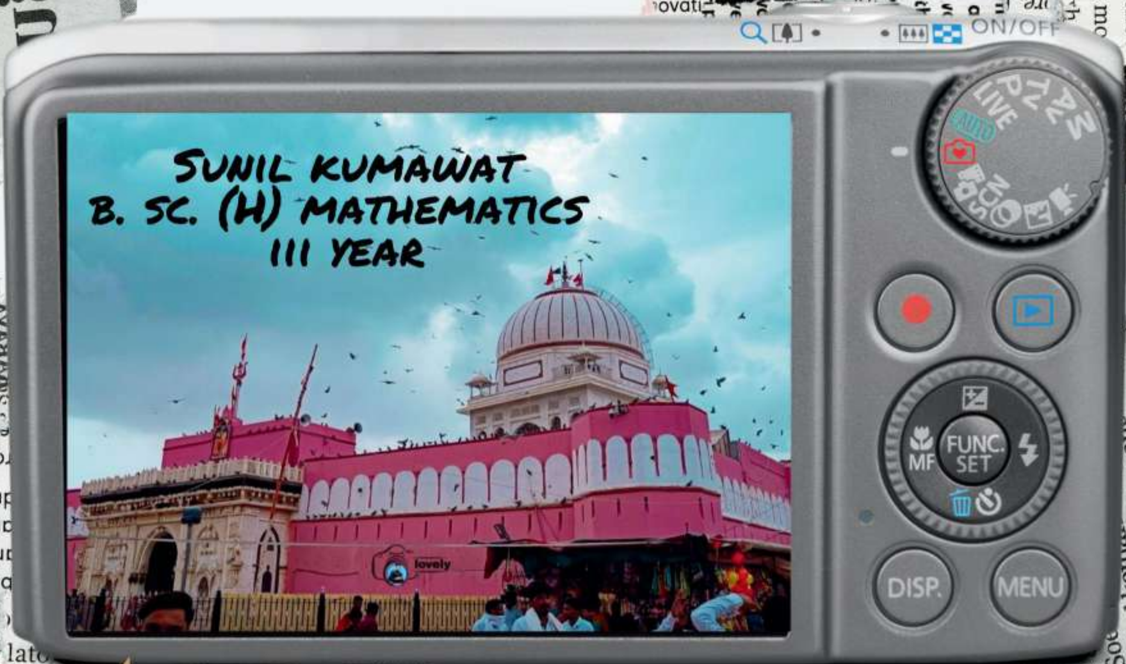

Memories

The Honoured One

Arpita Pradhan
B. Sc. (H) Mathematics
II Year

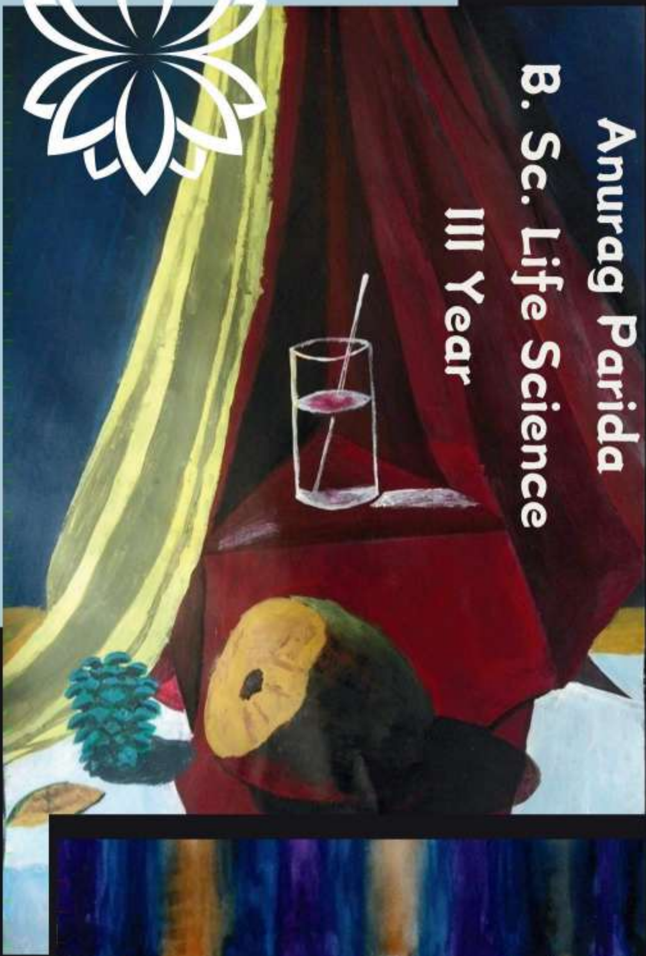

Anurag Parida
B. Sc. Life Science
III Year

Alankrita Pandey
B. Sc. (H) Botany
I Year

Anurag Parida
B. Sc. Life Science
III Year

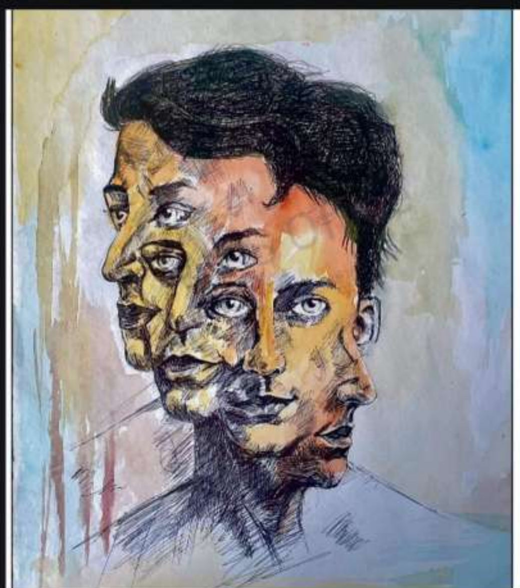

Alankrita Pandey
B. Sc. (H) Botany
I Year

VIJAYALAKSHMI P A
B. SC. (H) ZOOLOGY
III YEAR

AARUSHI SHARMA
B. SC. LIFE SCIENCE
I YEAR

NIKHIL SAINI
B. COM. (H)
III YEAR

VIJAYALAKSHMI P A
B. SC. (H) ZOOLOGY
III YEAR

Vishwa Deepak Shrivastava
B. Sc. Life Science
2021-2024

SHINAYA SINGH
B. SC. (H) BIOMEDICAL SCIENCE
I Year

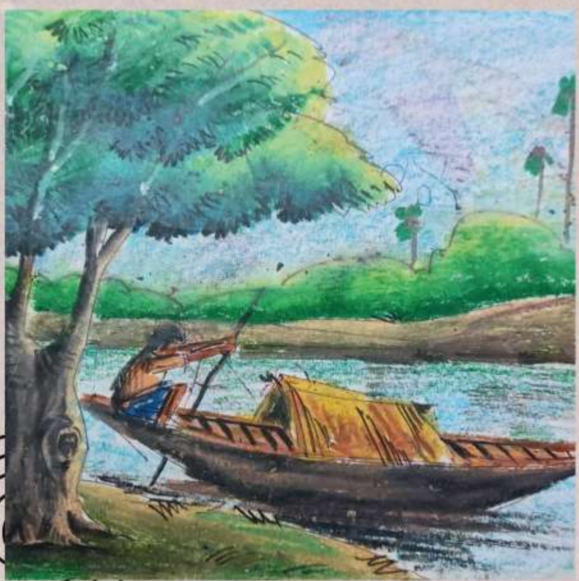

Sayanti Dey
B. Sc. (H) Botany
I Year

PRIYA PANDEY
B.SC. (H) BOTANY
I Year

Albums

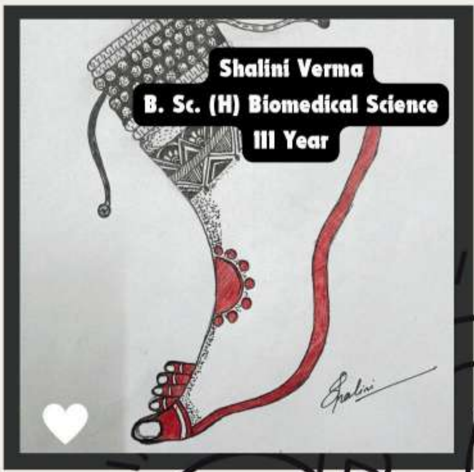
Shalini Verma
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

Vidhisha Pandey
B. Sc. (H) Zoology
I Year

Shalini Verma
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

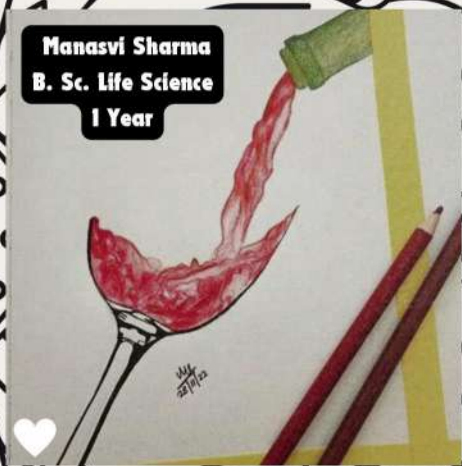
Manasvi Sharma
B. Sc. Life Science
I Year

Sayanti Dey
B. Sc. (H) Botany
I Year

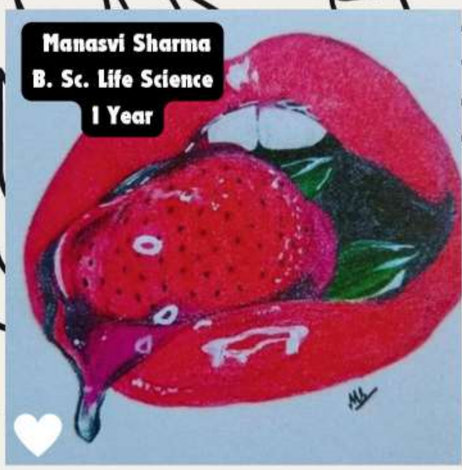
Manasvi Sharma
B. Sc. Life Science
I Year

Chirayu Gajbhiye
B. Sc. (H) Biomedical Science
I Year

Ansh Shukla
B. Sc. (H) Mathematics
III Year

DESIGNING TEAM

Hiyasmita Sarmah
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

Sabhyata Singh
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

Paras Sharma
B. Sc. (H) Computer Science
III Year

Dr. Vineet Kumar Singh
Assistant Professor
Department of Botany

Anuttama Kumar
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

Yash Sharma
B. Sc. (H) Computer Science
III Year

Madhur Agrawal
B. Sc. (H) Biomedical Science
III Year

Designing each page has been a journey of creativity and collaboration. We hope our work enhanced your reading experience and brought the stories to life. Thank you for being a part of this process with us!

– Designing Team

EDITORIAL COMMITTEE (MAGAZINE)

Dr. Joita Dhar Rakshit (Convenor)
Assistant Professor
Department of English

Dr. Satya Prakash Yadav
Assistant Professor
Department of Physics

The Editorial Committee acknowledges the contribution of the following students towards sketches:

Vishwa Deepak Shrivastava, B. Sc. Life Science, 2021-24
Nikhil Saini, B. Com (H), III Year
Vijayalakshmi P A, B. Sc. (H) Zoology, III Year
Shalini Verma, B. Sc. (H) Biomedical Science, III Year
Divyansh Joshi, B. Sc. (H) Biomedical Science, II Year
Priya Pandey, B. Sc. (H) Botany, I Year
Alankrita Pandey, B. Sc. (H) Botany, I Year
Sayanti Dey, B. Sc. (H) Botany, I Year
Bhavya Ruhela, B. Sc. Physical Science (Chemistry), I Year
Jhanvi Gupta, B. Com (H), I Year

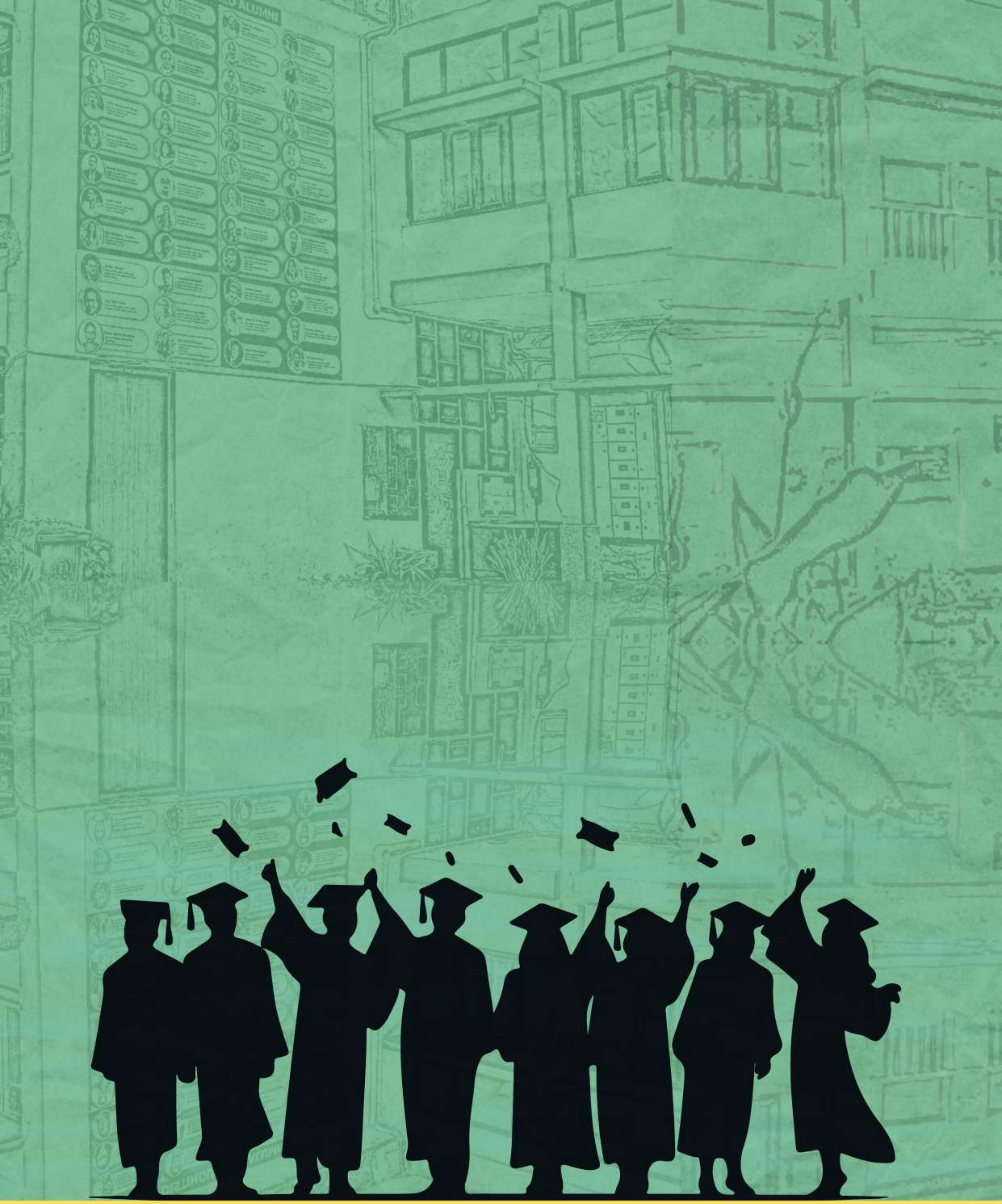

ACHARYA NARENDRA DEV COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI
Govindpuri, Kalkaji, New Delhi-110019

Website: https://www.andcollege.du.ac.in
Phone: +91-(0)11-26294540